

राजस्थानी वाद्य संकलन

सम्पादक

डॉ. कल्याणसिंह शेखावत

राजस्थानी साहित्य संस्थान, जोधपुर

प्रकाशक :

राजस्थानी साहित्य संस्थान
मू. आई. टी. के पास,
जोधपुर

द्वितीय संस्करण 1990

मूल्य : तीस रुपये मात्र

मुद्रक :

प्रिंटिंग हाउस,
जासोरी गेट के मन्दर
जोधपुर

भूमिका

श्री 'राजस्थानी गद्य संकलन' राजस्थानी भाषां रा विद्याधियों री ज़रूरत नै सामी राख'र त्पार करयो है । जुगां जूनी भर समूह आपणी मायङ्भासा राजस्थानी भाजादी रँ कई बरसां पछै भणार्ई-गुणार्ई री भाषा बणी है । विद्यालयों सूं लै'र विश्वविद्यालयों ताईं दूजो भाषायां री भांत राजस्थानी भी पाठ्यक्रम री भाषा बणी है । इणसूं महामना पंडित मदनमोहन मालवीय भर गुरुदेव कविद्र रविन्द्रनाथ टेंगोर रा संकल्प पूरा हुआ है । ईं सातर संस्कृत, हिन्दी भर अंगरेजी सूं किणी भांत हळको पाठ्यक्रम राजस्थानी री नी छै—आ दीठ राख'र आ पोधी त्पार करीजी है ।

यूं तो राजस्थानी भाषा रा पद्य भर गद्य दोनू तरँ रो—न्यारी निरवाळी विधावां में पणोई साहित्य मिळै पण आज रो जुग गद्य साहित्य रो जुग बाजै । गद्य री कई विधावां में जिए नुवां साहित्य रो लेखन आज हू रियो है, उणरो बानगी इण संकलन में देवण री में पूरी कोसीस करी है । इण गद्य संकलन नै ओपतो बणावण री में पूरी खैबळ करी है—पण साची परख तो पारखी ही करसी । ज्ञान-विज्ञान सूं लै'र इतिहास, साहित्य भर संस्कृति रा मनमावण चितराम दिखावणी री भरपूर कोसीस करी हां जिएसूं बाळक खुद री जलम-भोम, मायङ्भाषा, उणरा साहित्य अन्नै संस्कृति री छिब हीयै अंगेज सकै । इण संग्रै रा लेख ज्ञान-विज्ञान, जात्रा-वर्णन, धरम, इतिहास, जीवण चरित, तीज त्युंहार, राजस्थानी जीवण दरसन भर गत गुमेज रँ साथै-साथै आज रँ जुग री जाणकारी करा सकै आ दीठ राखीजी है ।

में आ भी कोसीस करी-हूँ 'क जठाताईं छै सकै राजस्थानी भाषा री खास-खास बोलियां जियां मारवाड़ी, मेवाड़ी, हाडीती, डूँडाड़ी, शेखावाटी आद रा ओपता चितराम इण खूबो सूं राह्या जावै'क वा सवा रा न्यारा-न्यारा दर-साव राजस्थानी भाषा रो फूटरो भर टकसाळी रूप दरसायो जा सकै । इण सातर राजस्थानी री टाळवीं गद्य रचनावां इण संकलन मे राखीजी है ।

श्री गद्य संकलन प्रांत रा विद्यालयों भर विश्वविद्यालयों रा राजस्थानी पाठ्यक्रमां राखीज्यो भर विद्याधियों मे, इणरी मांग बढी । इणी वास्तै इणरो श्री दूजो संस्करण निकाळ रिया हां ।

श्री संकलन राजस्थानी भाषा रा विसाळ साहित्य भण्डार री की ओळ-खाण करा सकसी इणी उम्मीद साथै इणनै पारख्यां सामी राखूँ ।

डॉ. कल्याणसिंह शेखावत
सम्पादक

विगत

अणोर् अणीयान् महतो महीयान्	: नरोत्तमदास स्वामी	1
वदनमाळ	: रामसिंह	6
रामजी भला दिन देव	: डॉ. मनोहर शर्मा	9
कलाकार बधुवां सून	: साने गुरुजी	15
राखी रो तूँहार	: सौभाग्यसिंह शेखावत	20
पूरण पुरुष कृष्ण	: सत्यप्रकाश जोशी	26
गोगाजी रा घोडा	: डॉ. नैमनारायण जोशी	33
डूँडाड महातम	: गोपालनारायण बोहरा	41
म्हारो जापान यात्रा	: लक्ष्मीकुमारी चूँडावत	48
सह-प्रस्तित्व	: अन्नाराम सुदामा	56
साहित्यकारां रो तीरथ		
गोरकी रो घर	: रामनाथ व्यास 'परिकर'	63
राजस्थानी काव्य	: श्रेक निरख	66
श्रेक परख	: कृष्णगोपाल कल्ला	80
आळजंजाळ	: ब्रजमोहन जावळिया	94
श्री शिवचन्द्रजी भरतिवा	: सत्यनारायण स्वामी	
राजस्थान रै इतिहास मायै		
भूगोल रो असर	: जङ्गर नां मेहर	101

अणोर् अणीयान्, महतो महीयान्

नरोत्तमदास स्वामी

(1)

उपनिषद् में परमात्मा नै अणोर् अणीयान् और महतो महीयान् कैयो है—छोटै सूं भी छोटो और बड़ै सूं भी बड़ो । एण परमात्मा ही नहीं, जिण जगत में परमात्मा व्याप्त है वो जगत भी, परमात्माआळी दाई ही अणु सूं भी अणु और महान सूं भी महान है ।

(2)

पैली आपां अणु सूं भी अणु नै लेवां—

जगत रा सगळा पदार्थ तत्त्वां सूं बणियोड़ा है । इण तत्त्वां रो संख्या 92 है । तत्त्व रै सब सूं छोटै भाग नै परमाणु कैवै । परमाणु अणु वणावै और अणुवां सूं जगत रा सगळा पदार्थ वणै । अणु कई भांत रा हुवै—कई अणु अेक ही तत्त्व रै अेक परमाणु सूं वणै, कई अेक ही तत्त्व रै अनेक परमाणुवां सूं वणै, और कई अनेक तत्त्वां रै परमाणुवां सूं वणै । अनेक रो मतलब अठै अेक सूं अधिक है अर्थात् दो या दो सूं बेसी । सोनै रो अणु अेक परमाणु सूं बणियोड़ो हुवै; आक्सीजन रो अणु आक्सीजन रै दो परमाणुवां सूं वणै और पाणी रो अणु आक्सीजन रै अेक तथा हाइड्रोजन रै दो परमाणुवां रै मेळ सूं वणै ।

पैली बिज्ञान रै बिद्वानां रो मानता ही कै परमाणु रा और खंड नहीं हुय सकै, वो अखंडनीय और अविभाज्य है । यूनानी भाषा में परमाणु नै atom कैवै जिण रो अर्थ हुवै अ-विभाज्य । एण अर्ब, रेडियोधर्मिता रै आविष्कार पछै, परमाणु अखंडनीय नहीं रियो है । उण नै तोड़ीज सकै है । तोड़ियां सूं परमाणु भूळ कणां में बिभक्त हु ज्यावै । भूळ कणां में तीन मुख्य है—प्रकण, निकण और विकण अर्थात् प्रोटोन, न्यूट्रोन और इलेक्ट्रोन । परमाणु रै केन्द्र में अर्थात् मध्य भाग में नाभिक हुवै जिण में प्रोटोन और न्यूट्रोन रैवै । परमाणु सौरमंडळ जियां हुवै । सौरमंडळ में पृथ्वी वगैरा ग्रह न्यारी-न्यारी कक्षावां में सूरज रो परकमा करै जियां ही न्यारा-न्यारा इलेक्ट्रोन

न्यारी-न्यारी कक्षावां में नाभिक री परकमा करै । सौरमंडल में ग्रहां री तुलना में अपार खाली जागां है, जियां ही परमाणु में भी पली-सी जागां खाली हवै ।

परमाणु में ऊपर बताया तीन मूळ कणों रै घलावा और पण मूळ कण हवै । इणां री संख्या 100 रै भी ऊपर पूग चुकी है । इणां में न्यूट्रोन वास्तव में मूळ कण नहीं है क्योंकि नाभिक सू' न्यारी हुतां ही वो प्रोटोन और इलेक्ट्रोन मे विभक्त हु ज्यावै ।

सब सू' हलको परमाणु हाइड्रोजन तत्व रो हवै । उण में भेक प्रोटोन और भेक इलेक्ट्रोन हवै । उणरो परमाणविक भार लगभग 1 हवै । हेलियम तत्व रै परमाणु में नाभिक मे दो प्रोटोन और दो न्यूट्रोन हवै तथा दो इलेक्ट्रोन उणां री परकमा करै । हेलियम रो परमाणु भार 4 हवै अर्थात् हाइड्रोजन सू' कोई चीगणो । सोनै तत्व में नाभिक में 79 प्रोटोन और 118 न्यूट्रोन हवै जिए रै बार कर 79 इलेक्ट्रोन 6 कक्षावां में परकमा करै । सब सू' भारो तत्व यूरेनियम है जिए रै परमाणु में 92 प्रोटोन और 146 न्यूट्रोन हवै और 92 इलेक्ट्रोन 7 कक्षावां में परकमा करै । उण रो भार 238 हवै । परमाणु रो लगभग सगळो भार नाभिक में रैवै क्योंकि इलेक्ट्रोन में तो भार नाब-मान रो ही हवै । प्रोटोन इलेक्ट्रोन सू' 1836 गुणो भारी हवै ।

न्यारा-न्यारा तत्वां में वै ही मूळ कण हवै पण हरेक तत्व में प्रोटोन, न्यूट्रोन और इलेक्ट्रोन री संख्या में फरक हवै । परमाणु में जित्ता प्रोटोन हवै उता ही इलेक्ट्रोन हवै । इलेक्ट्रोनों में ऋण बीजली रो आवेश हवै; प्रोटोनों में धन बीजली रो और न्यूट्रोन आवेश-रहित हवै ।

अणु, परमाणु भर मूळ-कण कित्ता छोटा हवै ? पाली रै भेक अणु रो अर्धव्यास 10^{-8} अर्थात् $1/1000000$ सेंटीमीटर अर्थात् भेक सेंटीमीटर रो दस लाखवां भाग हवै । दस लाख अणुवां नै कनै-कनै भेक कतार में राखीजें तो इण कतार री लंबाई मामूनी कागद री जाड़ाई रै बराबर हवै । पृथ्वी रा सगळा समंदरां, नदियां और सरोवरां में जित्ता गिलास पाली है उणा सू' दो हजार गुणा अणु भेक गिलास भर पाली मे हवै । पाली री भेक बूँद नै पृथ्वी जित्ती बड़ी कर देवो तो पाली रै भेक अणु रो आकार भेक छोटी गेंद रै बराबर हुसी ।

भेक परमाणु रो अर्धव्यास मोटे तौर सू' 10^{-8} अर्थात् $1/10,00,00,000$ सेंटीमीटर अर्थात् भेक सेंटीमीटर रै कोई दस करोड़वां भाग रै बराबर हवै ।

(शेक इंच रै कोई 25 करोड़वै भाग रै बराबर) । इए रो-महालैब धो हयो के पचीस करोड़ परमाणुवां नै बराबर-बराबर शेक कतार में जमायन राखी तो कतार री लंबाई कोई दो इंच हुसी । 'पेनी' नामक अंग्रेजी सिक्के री जाड़ाई कोई दस करोड़ परमाणुवां री कतार रै बराबर हुवै । पाणी हाइड्रोजन अर भाक्सीजन रै मेळ सून बणी । आधी छटांक पाणी में भाक्सीजन रा कोई 10-²⁴ अर्थात् शेक करोड़ शंख परमाणु हुवै ।

प्रोटोन रो अर्धव्यास 10-¹² अर्थात् 1/10,00,00,00,00,000 सेंटीमीटर हुवै अर्थात् शेक सेंटीमीटर रो दस खड़बवों भाग¹ । इलेक्ट्रोन तो और ही छोटी हुवै । उए रो अर्धव्यास कोई 10-¹³ अर्थात् 1,00,00,00,00,00,00,000 सेंटीमीटर हुवै अर्थात् शेक सेंटीमीटर रो शेक नीलवों भाग² । बराबर-बराबर जमायां सून शेक इंच में कोई सवा नील इलेक्ट्रोन हुवै ।

(2) महतो महीयान्

पृथ्वी नै मही, भूमि और अनन्ता कंबै, कारण बा बड़ी है, लांबीचौड़ी है, घणी विशाल है और उए रो अंत निजर में नही आवै । एए पृथ्वी, मही, भूमि और अनन्ता कंबीजणवाळी इए पृथ्वी री आकाश में दीखणवाळा ज्योतिषिण्डां में कोई गिणती नहीं है ।

रात रै कबत आकाश में अणुगिणत ज्योतिषिण्ड बमकता दीसै । अ ज्योतिषिण्ड दो भांत रा है—(1) नक्षत्र और (2) ग्रह और उपग्रह । नक्षत्र घणा बडा हुवै और आप री चमक सून चमकै । ग्रह और उपग्रह छोटा हुवै और व नक्षत्र री चमक सून चमकै । सूरज, ध्रुव, रोहिणी, व्याघ्र, अगस्त्य और ज्येष्ठा नक्षत्र है और बुध, शुक्र, पृथ्वी, मंगळ, बृहस्पति, शनि, अरुण (यूरेनस), बरुण और यम (प्लूटो) अ नव ग्रह है जिका सूरज रै बारकर परकमा करता रैवै । चन्द्रमा उपग्रह है । वो पृथ्वी रै बारकर परकमा करै । ग्रहां में बुध सगळां सून छोटी और बृहस्पत सगळा सून बडो है । बुध रो व्यास कोई तीन हजार मील है और बृहस्पत रो कोई छयासी हजार मील । सूरज पृथ्वी सून 13 लाख गुणो बडो है; पृथ्वी जित्ता-जित्ता 13 लाख पिंड हुवै जद कठई जायनै सूरज रै बराबर हुवै ।

सूरज ग्रहां सून घणी बडो है एए घणा सारा नक्षत्र सूरज सून भी बडा

1 उषारोक् और चंपयन : विज्ञानरी आरु सायस, पृष्ठ 25

2 लांबी

है। सूरज भेक घौसत बढाई रो नक्षत्र है, बढा नक्षत्रां में उए रो कोई गिएली कोनी। सूरज सूं बढा नक्षत्रां में कई-भेक इए मांत है—

नक्षत्र	सूरज सूं कित्तो बढो	नक्षत्र	सूरज सूं कित्तो बढो
व्याध—	6 गुणो	भरत	9 हजार गुणो
अभिजित्—	13 गुणो	स्वाति	27 हजार गुणो
मघा—	125 गुणो	रोहिणी	54 हजार गुणो
ब्रह्महृदय—	1728 गुणो	मार्द्रा	2 करोड़ गुणो
		ज्येष्ठा	11 करोड़ गुणो ¹

नक्षत्रां में ज्येष्ठा, आप रें नांव रें मुजब, सब सूं बढो है। वो भेकतो ही 11 करोड़ सूरजां रें बराबर है। वो इत्तो बढो है कं मंगळ ग्रह रो भ्रमण कसा समेत सगळो सौर-परिवार उए में सोरो-सोरो समाप जावै।

सूरज पृथ्वी सूं कोई 930 लाख मील दूर है। रोसणी भेक सेकंड में 1,86,000 भेक लाख ध्यांसी हजार मील (कोई तीन लाख किलोमीटर) चाले। सूरज रो रोसणी नै पृथ्वी ताई भावनां कोई 9 मिनट लागे। एए पृथ्वी और सूरज रें जिको नेडलो-ई-नेडलो नक्षत्र है (प्रोक्सीमा सेंटारी) उए रो रोसणी नै घठै भावतां ज्यार बरसां सूं ऊपर बलत लागे। इए रो मतलब भो हुयो कं भो नक्षत्र घठै सूं कोई बढाई नील मील दूर है। सूरज और इए नक्षत्र रें बीच में दूजो कोई नक्षत्र कोनी। बीच रो सगळी जागां खाली जागां (प्रवकाश अथवा थोय मात्र) है। सगळो नक्षत्र इणी भांत भेक दूजें सूं घणा-घणा भाधा है।

भेक-दूजें सूं बढबां-खडबां मीलां रो दूरी मायें विश्वरियोड़ा भं सगळो नक्षत्र आकाशगंगा नामक विश्व रें मांयने है। आकाशगंगा में कोई एक खडब नक्षत्र है।² आकाशगंगा रो विस्तार एणो मोटो है। उए रें भेक सिरें सूं दूजें सिरें ताई पूणए में रोसणी नै कोई भेक लाख प्रकाश-वर्ष लागे³ (भेक प्रकाश-वर्ष कोई 58 खडब मीलां रें बराबर हुवै)।

इए ब्रह्माण्ड में आकाशगंगा जिसा-जिसा लालनलास विश्व है। भं विश्व नीहारिकावां रें रूप में दोसे। इए विश्वां रें बीच में अपार खाली जागां अर्थात् अवकाश या आकाश है। अवकाश जाणै भेक विशाल समंदर है।

1 गोपीबेरे : जनी वू दि मुनिस्वै ।

2 गोबदन बुक ऑफ् स्टारकापी, पृष्ठ 74

3 तापी, पृ 74

समदर में जियां अनेक टापू तैरता रैवै जियाई अक्काश में भै बिखर जाएँ तैरता रैवै ।

देवयानी (मैंडोमीडा) री नोहारिका आकाशगंगा रै निकट री नोहारिका है । उठे सून अठे ताई आवतां रोसणी नै कोई 15 लाख बरस लागे ।¹ उए सून भागै धणी दूरी ताई करोड़नू नोहारिकावां आकाश में बिखरियोड़ी है ।

संसार री सब सून बड़ी दूरबीण अमरीका में पलोमार पहाड़ी पर है । उए में लागियोड़ै काच रो व्यास दो सौ इंच है । बा मिनल री आल री तुलना में सादी तीन लाख गुणी रोसणीं बटोरै । उए सून दो अड़ब प्रकाश-वर्ष ताई री दूरी पर मौजूद नोहारिकावां देखी जा सकै है । इए नोहारिकावां रै भागै काई है इए बात नै जाणए रो मौजूदा हालत में कोई साधन नही है ।

कित्तो विशाल है आपणो ओ ब्रह्माण्ड ! और कृण जाएँ इसा-इसा विशाल कित्ता ब्रह्माण्ड है इए जगत् में, इए संसार में, परमात्मा री इए सृष्टि में ।

इए भांत आपां देखियो कै ओ जगत् भी आप रै नियामक परमात्मा आली दाई हो, अक ही साथे अणोर्द अणीयान् और महतो महीयान् दोनू है ।

द्वंद्वनमाला

रामसिंह

(१) प्रेम की दृष्टिकोण

म्हारो हृदय हूं धारें भागै सोलनै राखतां ठहूं हूं—कठई ये भा . नीं कै बैठो कै इए नै तो मैं कदैई देखू को हूं ।

म्हारै गावणैं में सुरभंग क्यों हूँ इए रो कारण धारै भांखियां री कोर सूं बूझो ।

हूं धानै म्हारो काव्य नहीं सुणाऊं हूं; मनै डर लागै है कै कठई ये प्रशंसा रा पुछ बांधण नीं लाग जावो ।

ये मनै संसार भर में सगळीं सूं सुन्दर समझो इए खातर हूं धारें भागै भूँडो लुकाय लेऊं हूं पण इए नै ये कदास सज्जा रो परिणाम नीं समझ लेवो इए वास्तै हूं धारें भागै निशंक हुयनै भाऊं हूं ।

निशीय री निस्तब्धता में जद ये भेकांत में म्हारै सूं मिलए नै भावो तो म्हारी इच्छा माग जावण री हूँ । ये हंस नै कैवो—भाछो, जावो । जएँ म्हारै मूँडै सूं नीकले—ना ! हूं को जाऊं भी ।

जे हूं भाभूखण सजाय नै भाऊं तो ये पूछो—भाज भै भाभूखण इता सुवावणा क्यों लागै है ?

और जे हूं सादा वस्त्रां मे भाऊं तो ये कैवो—भोहो ! भाज भो निष्कलंक चन्द्रमा धरती मायै कठै सूं ऊग भायो ।

फेर ये ही बतावो, हूं धारें कनै कियां भाऊं ?

(२) प्रेम की व्यवहार

जद हूं जावकां नै की देवण नै जाऊं तो बै भी उणां री पंगत में भा बैसै । बै हाथ भागै करै और हूं उणां रै कानी देखूं भी नहीं हूं ।

सगळा जणा दान लेयनै जावै परा जद हूं उणां नै कौऊं हूं—ये भाप दे सको हो उए नै मागण नै भावो हो । हूं धानै जाभूं हूं ।

बै चोखा-चोखा उपहार लेयनै आवै और म्हारै भागै हाथ जोड़ियां ऊभा रैवै । हूं व्यंगपूर्ण हंसी हंसनै कैऊं— हूं आप दे सकूं हूं उण नै ये मनै देवण नै भावो हो । हूं थानै जाणूं हूं ।

ढलतोड़ी रात में भोस सूं भीजियोई शिरीष रै फूलां रो सुगन्ध लेयनै समीर म्हारै घरै आवतो हो । म्हारी आंस लागगी और मैं सपनै में उणां नै कैवता सुणिया—काई तूं मनै प्यार करै है ?

ये इसो प्रश्न पूछो हो जिण रो उत्तर ये ही जाणो हो—मैं भुंभळायने उयळो दियो ।

फेर भी धारै देवण-लेवण में और कैवण-सुणण में भेक अपूर्व भानन्द है—इयां कैयनै बै म्हारी नींद रै सार्ग-सार्ग कुण जाणै कठीनै रम जावै ।

(३) तूं और धारी बैनां

तूं चिणा चूटै जद धारी छोटी-छोटी बैनां नीब रो नान्ही-नान्ही डाळियां मायै बैठी-बैठी भीत गावै । उणां रो भीत बन्द हुसी जद ही धारी काम समाप्त हुसी और तूं उणां रै सार्ग-सार्ग आवां रै कुंज कानी उड जासी ।

बेलां सूं छायोड़ी धारी भूँपड़ी रै द्वार मायै गाय दीकै है और धारी बाछो ऊपर लटकतै फूल नै जीभ सूं पकड़णो चावै ।

धान मायै पडती थकी सूरज रो आखरी स्वणै-रश्मियां धारै केसां और कपोलां मायै, और धारी बैनां रै कंठां और पांलां मायै पड़े ।

रात में प्रकृति थां सगळां रो आत्मा में विश्राम करै और बा ही धारै दिमाग में दूर देसां रा सपना भरै ।

आकाश धारै लिलाड़ नै, और निशापति धारी निमीलित आंतियां नै चूमण नै चावै ।

तारा धारै अविरल धुंधराळा केसा मे आंखमींचणी रमे ।

फेर उपा आयनै धारै कोमल कपोलां नै स्पर्श करै, जद तूं ~~अदीतुरै~~ ^{अदीतुरै} किनारै मायै फूल चूटै और धारी बैनां उण रो लैरां में संगीत भरै ।

(४) दरिद्र रो दान

जे जावणो ही हो तो पाया क्यों हा ?

जद-कदैई ये भावो तो बिदा मांगता ही भावो हो ।

याचक ! मैं तो धारी दान-वीरता की धनी प्रशंसा सुण रही हूँ, फेर
भा उछटी रीत क्यों ?

जे जावणो ही हो तो माया क्यों हा ?

म्हारो भीर धारो कोई पैलां रो सम्बन्ध है काई ? भीर जे नहीं, तो
बस म्हारै ही कनै मांगण नै क्यों मावो हो ?

हूँ दरिद्र, दरिद्र सून भी दरिद्र हूँ, भीर ये ही म्हारा सर्वस्व । लो, देखो !
इए बार धानै ही त्यागनै त्याग रो आदर्श देलाऊं हूँ ।

जे जावणो ही हो तो माया क्यों हा ?

रामजी भला दिन देवै

डा. मनोहर शर्मा

बात कहणै री चीज है । राजस्थान में बात कहणै रो पैली विकसित भी खूब होई । आज भी अठै कई इसा बातळ मिलै है जिका आपरी कळा सूं सुणबा भाळां नै चिनाम सा बणा देवै । न बै बात कहता हार मानै भर न बांसू सुणबा भाळा ई उकतावै । बात सुरू करणै सु पहनी वे नेम सूं आपरी भोमका बांधै—

बात में हुंकारो, फोज में नगारो ।
कोई नर सोवै, कोई नर जागै ।
मृत्योड़ा री पाघड़ी, जागता ले भागै ॥
बातां हंदा मामला, दरियावां हंदा फेर ।
नदियां बहे उतावली, धिर-धिर घालै घेर ॥
बात का चालणा, संजोग का पीवणा ।
जीवो बात का कैणिया, जीवो हुंकारा देणिया ।
रामजी भला दिन देवै

ओ वक्तव्य ध्यान देवण जोग है । इण मांय लोककथा रा सारा तत्व समा-योड़ा है । बात कहबा भाळे नै जद ई आनन्द मिलै, जद सुणबा भाळा उण री बात मे पुरो रस लेवै । जे ओ ठाठ न जमै तो बात बिना नगारै री फोज सी लागै । कथासरित्सागर मांय ओक कथा नायक बात सुणतो नीद से लेवै है तो उण ऊपरां आकास री देवियां कोप करै है । लोक विश्वास रै इण कोप रो निवारण करणै खातर 'जीवो' सन्द रो प्रयोग चल्तो भावै है ।

बातां री दुनिया धणी रंगीन होवै है । बठै भांत-भांत री घटनावां री भांकी भागै भावै । आ चीज नदी रै बुहाव सूं समझाई गई है । घणखरी लोककथावां घटनाप्रधान होवै है भर बां में संजोगतत्व री न्यारी ई छठा मिलै । ई तत्व री महिमा ने समझ'र ई भोमका-भाग मांय ई रो साफ संकेत करपो गयो है । संजोग सूं कुतूहल जागै भर बात में रोचकता भावै । मांग-लिकता खातर रामजी रो ध्यान करपो गयो है । सायै ई ओ बात री मुवान्त

परिणति रो सूचक भी है। इतरी मोमका बांध'र बात कंवणियो मूळ बात नै सरू करै।

घठै बात रै मांगळिक तत्व नै समझावण सारू थोड़ी सी थुगवां बाता सार रूप में दी जावै है। अ बातां घणी रोचक भर लोकप्रिय है।

(1)

अेक बामण भोत गरीब हो। बै री लुगाई भली ही पण घणी री कमाई बिना बिचारी के कर सकै? भातर बामण कमावण नै घर सूं निसरयो। बै री बिरामणी कसेबो करणै खातर रात नै चूरमै रा च्यार लाडू बणाया भर अेक बीलहै में बांध'र घणी नै सिघ करतां बसत सूंध्या। बामण मोळो हो। वो भारण भे चाल्यो भर चालतो ई रैयो। भातर बीड़ मे अेक जोहड़ पर सांभ होगी तो बामण रुकग्यो। भूय घणी जोर सूं लागरी ही पण बीड़ री भाड़ियां पर बिना रत रा बोर पावयोड़ा नजर पडधा। सोभ में भाय'र बामण भापरा लाडू कोनी खाया भर बोरियां सूं पेट भर लियो। पछै वो जोहड़ री पाळ पर सोयग्यो।

रात नै च्यार चोर बीड़ में घणी घन सेय'र भाया भर पांती करवा बैठ्या। पण च्यारुवां नै ई मूख सतावै हो। अेक चोर सूतयोड़े बामण री पोटळी सिराणै सूं घीरै सी काढ़ ल्यायो। पोटळी में चूरमै रा च्यार लाडू देख'र चोर भोत राजी होया भर अेक-अेक लाडू सेय'र खा लियो। लाडू खाया भर चोरां नै नींद आवण लागी। पछै च्यारुं इसा सोया कं कदे जाग्या ई कोनी। जद बामणी भाप रै घरा रात नै चूरमो ऊंखळी में कूट्यो तो अण्घेरै मे बठै बंठयो अेक सांप भी सागै ई कुटग्यो भर लाडुवां में मिलग्यो। लाडू जहर रा हा। पण ई बीज रो न बामणी नै वेरो भर न बामण नै। चोर मारधा गया।

भागलै दिन बामण उठयो तो च्यार मरघोड़ा मिनख भर घणी मान नजर भायो। बामण माल उठायो भर गांठ बांध'र पाछो ई भाप रै घर रो मारण लियो। बामण पाछो घरां पूग्यो तो सांभ होय चुकी ही। उणी दिन बामण री गाय बीड़ मे ब्यायी भर बाछो ल्यायी। पण सागै ई अेक घोड़ी भी बठै ई ब्यायी। कोई रुताळो हो कोनी। बाछड़ियो घोड़ी रै घणां पड़ग्यो भर बछेरो गाय नै भापरी मा मान सीनी।

घर में भाय'र बामण भापरी लुगाई रै सागै घन री गांठ सीनी तो बा मचरज में भरणी। पाछै बामण सारी बात बताई भर गाय रै सागै बछेरो देख्यो तो बोह्यो—

बात भली, दिन बावड़्या, बन मे पावया बोर ।

घर भीड़ो घोड़ो जण्यो, लाटू मारया चोर ॥

ई बात रा रूपान्तर भी सुण्या जावै है पण संजोग तत्व रै प्रभाव रो भो भेक खासा नमूनो है । लाटूवां में जहर रो मिलणो, बिना रुत बोरों रो पाकणो, चोरा रो मात्र बाभण रै हाथ भावणो, गाय रै धणां बछेरै रो पड़णो, भै सारा काम संजोग सू होया है । भेक रै पछै दूजै संजोग रो कड़ी-सी जुड़ती गई भर पूरी बात वणगी । भो दिन रो फेर है । जद भादमी रो दिन बावड़ै तो भावै ई भलेरो संजोग बैठतो जावै भर भणचींत्यो लाभ मिसतो चालै । इसै दिनां नै ई 'पाघरा दिन' कया गया है । बामण रा दिन पाघरा होया तो वो बिना चेष्टा ई घन सूं घर भर लियो ।

(2)

भेक सेठ रै सात बेटा हा भर दिसावरों में कई दुकानां चालती । सेठ रा बेटा न्यारी-न्यारी दुकान संमालता । ल्होड़ियो बेटो घरां रहतो । ग्याह होयां पछै वो भी दिसावर जावण री त्यारी करी । उण री बहू भोत बट्टे घर रो ही । दिसावर जावती बेला सेठ रो बेटो घरकां नै समझाया कै बहू नै कदे भी महल सूं नीचे मतना बुलायो भर सारी चीजां दासी रै हाथ ऊपर चोबारै मांय ई पूगता रैयो ।

सेठ रो बेटो दिसावर चलयो गयो भर उण री बहू कदे महल सूं नीचे ई नीं उतरी । बहू रात नै चौबारै मे सोवती जद उण नै भेक नई बोली सुणार्ई पड़ती—“मै भावू, मै भावू ।” बहू चतर ही । वा सदा ई चुप रहती । यूं साल भर बोली सुणती रैयो । बहू बपुं भी उत्तर कोनी दियो भर न किणी रै भागै ई चीज री चर्चा ई करी ।

पछै सेठ रो बेटो दिसावर सूं आयो । रात पड़गो ही । बहू नै फेर वा ई बोली सुणी—“मै भावू, मै भावू ।” सेठ रै बेटे री बहू मन में सोची—भव तो उण रो धणी घरां आयग्यो, भव किए रो टर हूँ ? यूं सोच'र वा बोली—“भावू भावू के करै है, भला ई भाज्या ।” पण भो तो मिखो (संकट) हो । मिखो छोटो सो गीगलो बण'र बहू रो गोद मांय आयग्यो । बहू चकित होई । इतरै में ई उण रो पति महल में पग घरयो भर बहू री गोद धरी देखी तो उण रै कोप चढयो । सेठ रो बेटो बहू नै पितंग समेत ई उठाय'र डोळी पर सूं तल्लै पटक दी ।

महल नदी सूं सट कर हो । वड़ समेत पितंग नदी में पड़यो भर पाणी

मे वह चाली। गोदी रो भीगलो गायब होयो। बीचारी बीनणी आपरी बोली पर घणी ई पिसताई पण अब के वण ? बा पिलंग पर बैठी नदी मे वह चाली।

आगे जाकर भाब-सी फाटी घर पिलंग किनारे लाग्या। किनारे पर आयोडो अक दूसरो सेठ पिलंग नै देख्यो तो लेवण नै मनस्या करी। जद सेठ पिलंग नै पकडघो तो ऊपर अक सुगाई नै सूती देखी। वो उण नै आपरी घरम री बेटी बणा'र घरां ले आयो। यूं सेठ रै बेटे री बहू नै भिख मे दो पगां नै ठोड मितो। बा बोली--'मैं काम करे बिना पराई रोटी कोनी खावूँ।' उण नै दीवै-बाती रो काम सू'प दियो गयो। बा सारी-सारी रात सेठ रै बेटा रै महल मे बारी-बारी सूं दीवै री हलाळी करती घर दिन में आप सोवती।

यूं करता कई दिन बीग्या। अक दिन सेठ रै बेटे री बहू रो भाई आपरी भंग नै लेवण नै आयो। आज ई पावण रै महल मे दीवै री हलाळी करणी हो। पावणो जीम'र महल में सोवण नै आयो तो दीवै आळी नै देखी घर बोल्यो क उण नै सारी रात च्यानण री जरूरत कोनी, बा जा सक है। पण बा आप रो काम छोड़'र गई कोनी तो फेर पावणो आ ई बात भोजू बोल्यो। बा फेर भी कोनी गई तो पावणो उण नै नेई-सी आय'र देखी। आ सुगाई तो उण री ब्यायोडी बहू नीसरी। बहू आपरै घणी नै भिख री सारी बात बताई तो उण नै घोरज आयो। वो पूरी बात पितवाण बिना ई बहू नै गेर दीनी, ई चीज रो दणो पिसतावो करघो।

बात यूं बणी क जिए घर मे सेठ रै बेटे री बहू पूगी, वो उण रो नणद रो सासरो हो। नणद कदे आपरी छोटी मामी नै पहर माय देणी कोनी हो। बा भाई रै ब्याह पर जा कोनी सकी। जद भाभी नै किमां पिछाण ? घर भाभी कदे आपो परगट कोनी करघो। अब भाई रो दूसरो ब्याह मंडघो तो वो भंग नै लेवण नै आप आयो। अठे आपरी सुगाई यूं भेंट होगी घर भरम मिटग्यो तो पछे वो नयो ब्याह बयू करे हो ? सेठ रो बेटो आपरी भंग घर सुगाई नै सार्गे लेग'र घरा आयग्या।

आ बान भो संजोग सूं ई बणी ह। नेठ रो बेटो गयो तो भंग नै हवावण घर आगे मिली आपरी सुगाई। बा भी संजोग सूं ई आपरी नणद रै सासर पूगी। नदी मे बंवत पिलंग रो के अन्दाज किस किनारे जा लागे ? संजोग सूं ई महल मे लोग-सुगाई री भेंट होई। आन्तर बिगडघोड़ी बात बगणी घर सगळा ई पाशा मुःगी हांग्या। मिनग रो बुरो दिन आब तो पाछो

बावडकें चोखो दिन भी आवै । धन है, बहू रें धीरज नै । धीरज सून ई भिखो कटै ।

(3)

भेक राजा रो कामदार भोत हुंस्पार हो । बो सदा ई नेकी राख'र राजा रो काम करतो, पण दूसरा दरबारी लोग उण सून बलना भर राजा रा कान भरबो करता । राजा बां री चुगली पर ध्यान नी देवतो । लोग कैवता—'कामदार राजा रो चोरी करै है भर आप रो घर भरै है ।' ई बात री जांच करवा सारू आखर राजा भेक नई तरकीब सोची । कामदार नै हीरै रें जड़ाव री मूंदड़ी बकसीस करी गई भर ओ हुकम दियो गयो कै कदे भी कामदार उण मूंदड़ी नै आंगळी मांय सून परै नीं करै भर रात दिन सदा ई पहरी राखै । कामदार राजाजी रो हुकम सिर-माथै करथो भर मूंदड़ी पर लीनी ।

कामदार नेम सून तडकावू उठ'र नदी पर जावतो भर अन्धेरे-अन्धेरै स्नान करतो । पछे आपरी हवेली आय'र माळा फेरतो भर कलेबो करतो । पछे राजाजी रें भुजरै जाय'र आप रें काम लागतो । एक दिन कामदार राजा रें भुजरै गयो तो उण रो आंगळी में मूंदड़ी कोनी ही । दरबारी लोगां राजा नै सैन करी तो राजा भी कामदार री आंगळी कानी नजर गेरी भर उण नै मूंदड़ी परै करण रो कारण पूछ्यो । बिचारै कामदार नै बेरो ई कोनी कै मूंदड़ी कद आंगळी सून नीसरी भर कठै नीसरी ? बो कै उत्तर देवै ? कामदार नाड़ नीचो कर लीनी भर चुपचाप राजाजी रें आगै ऊभो रेंयो । ई सून राजा नै कोप चढ्यो भर हुकम हुयो कै भेक मईनै भीतर कामदार सागी मूंदड़ी लाय'र हाजिर करै भर जे बो न त्या सकै तो उण नै सूळी पर चड़ा दियो जावै ।

बिचारो कामदार घरां आयो भर मूंदड़ी री सगळै खोज करी, पूछताछ करी पण मूंदड़ी रो कठै ई ठिकाणो कोनी लाद्यो । मूंदड़ी मिली कोनी तो जिन्दगी रा बस तीस ई दिन और बाकी रेंया समझो । कामदार निरास होग्यो भर आप रो ध्यान घरम-पुन में लगा लियो । बो नगरजूनत करणै रो बिचार करथो भर बारी-बारी सून भेक-भेक जात रें लोगां नै आपरी हवेली मे बुनाय'र जिमावणा सुरू करया । कई रगोया राख्या गया । नित ताजा रसोई तयार करी जावतो भर लोग जीमण नै आवता । यून करतां गुणतीस दिन पूरा होया भर नगर री सगळी जातां रा लोग जीम बुक्या । तीसवें दिन नदी पर रेंवणिये भीवरां री बारी आई । भीवरां रो भीधरो आपरी पूरी विरादरी नै सामे लेव'र कामदारजी री हवेली में जीम्यो । जीम्या पछै बो आपरें पल्लै सून

भेक मूंदड़ी खोली भर कामदारजो री नजर करी । कामदार मूंदड़ी देखी—
 भा मूंदड़ी तो सागण ! कामदार रै प्राणा में इमरत बरसग्यो । बो चौधरी
 सूँ मूंदड़ी मिसलै री पूरी बात पूछी तो बेरो पट्यो कै बा तो भेक मछनी रै
 पेट में सूँ निसरी ही भर कामदारजो री नजर करणँ सारू रिपियो कोनी हो
 तो मूंदड़ी भेंट करदी गई । अब कामदार समझग्यो कै ग्रन्धेरें में नदी-स्नान
 करता बा मूंदड़ी घांगळी में सूँ निसर पड़ी भर बेरो कोनी रैंयो ।

आज तीसवों दिन हो । कामदार आपरी घांगळी में मूंदड़ी धारण करी
 भर राजाजी रै मुजरै गयो । राजा पूरी बात पूछी तो संतोस भायो भर
 कामदार रो मान बढ़ायो ।

कामदार री बात भी संजोग सूँ बणी है । कठै मूंदड़ी भर कठै
 कामदार ! पण संजोग इसो बण्यो कै आखरी दिन मूंदड़ी कामदार री
 घांगळी में आप ई चाल'र पाछी आयगी । भा बात घरम-पुन रो प्रभाव पर-
 गट करै है । पुण्यकर्म सूँ मिनख री संकट कटै भर दिन बावड़ै । बात रो
 सार ओ ई है । पुत्र आप ई सारो संजोग रळाय'र असरया कारज सार देवै ।

मूळ रूप में अै बातां नियतिवाद सूँ सम्बन्धित है । मिनख नियति री
 होरी मे बन्ध्योड़ो है । बो आपरी समझ भर सगती सूँ सारा काम ठीक ई
 करणा चावै पण नियति पर उण रो कोई बस कोनी चालै । नियतिचक्र में
 फस'र मिनख नै बुरा दिन भी देखणा पड़ै पण धीरज धारण करया नेकी सूँ
 चालतो रैंवै तो आखर उण रो दिन भले रो चावै भर बो पाछो सुख देख
 लेवै ।

कलाकार बंधुवां सूं

साने गुरुजी

तरुण कोमल हृदय ! उछळती-सहृती भावनावां रा, जिज्ञासु वृत्ति रा, ज्ञानपिपासु निराळा जीव ! आपरें आदर्श में रच्योपच्यो रेंवण आळा जीव ! उर्मंग, तरंग, उत्साह, सगती भर मेक प्रकार री रटण—भ्रं सगळा जवानी रा सैनाण है । नवजवान रें सामनै अणंत आकास भर अपार भविष्य फैल्योडो हुवें । इण आकास में तूं कठे री मुसाफरी करण आळो है ? इण अपार भविष्य में धनै कठे पूगणी है ? थारें वित्तरां मांय सूं, थारें सपनां सूं भर थारें आदर्शां सूं भावण आळें काल री भारत त्पार हुसी । तूं भविष्य री निर्माता है । धनै थारें फरज नै बराबर समझ लेवणो चाहीजें । थारी जीभ ऊपर जिका गीत, जिका सबद हुसी उणी माय सूं ई काल री महाकाव्य, काल री साहित्य, काण री दर्शण भर काल रें इतिहास री निर्माण हुसी । मेक रूसी लेखक कैंपी है—‘थारें बाळकां री जीभ ऊपर आज कुण-सा गीत रमै है ओ म्हनै बतावी तो म्हें तुरत थारें राष्ट्र री भविष्य बता देसूं ।’ म्हें ई थारें गोतां री विसं जाणणी चावूं हूं । थारी जीभ ऊपर आज कुण-सा गीत रमै है ? थारी जीभ माथें प्रेयसी नै रोक्काणआळा, उणरें नख-शिल रें वणन आळा, जी बहलाय रें मगज नै बहका नाखण आळा गीत है क देश भक्ति री भावना सूं भरघोडा भर रचनात्मक कामां री प्रेरणा देवण आळा गीत थारी जीभ माथें रम रेंया है ? आज री कळा धनै क्ण तरें री संदेश देवै है ?

व्याहंमेर जद लाय साग्योडी हुवें जणै तूं नीरो री तरें गावण-बजावण में, राग-रंग में मस्त हुम रें पडथो रेंवै है ? आज री कळा धनै कांई सिखावै है ? कांई प्रेरणा देवै है ?

‘कळा री संदेश’ सबद प्रयोग बांच रें अचंभो हुवैला । ‘कळा खातर कला’ री बात आजकालें सगळें चालें है । पण कला कला खातर हुय ई को सकंनी । निबिकार भर निबिचार कला कठें है ? चित्र देखी, गीत सुणी, अभिनय देखी, पोथी बांचो; इणां री कीं-न-कीं असर कांई आपां रें मन माथें कोनी पडै ? जे इण तरें भतर हुवें तो इण कला री सरूप कितोक है ओ देसण री जरू-

रत है। ओ परिणाम साची है कै कूड़ी ? जिका-जिका बीज आपां बावां हां उणां रा हजार गुणां दाणा आपां नै मिलै है। दागो लेवणी जे आपां खातर जरूरी ई हुवै तो आपां नै आछी तरियां विचार लेवणी चाहीजै कै ओ दाणो समाज रै स्वास्थ्य नै बघायर उण में रूप भर तेज पैदा करणियै गेहूं रो दाणो है कै समाज नै माटी भेळै करणियै अफीम रो कण है।

समाज रै मंगळ रो साधना करणी—ओ कला रो ध्येय है। पण इण मंगळ रो व्याख्या कुण करै ? जिए जमानै में जिकौ जुगपुरुष पैदा हुवै वो ही आपरै समाज रै ध्येय रो नकसो बणावै। दोनूं हाथ ऊंचा कर नै हेलार मार्या करै—नाम्यः पथा विद्यते, अयनाय, एष. पथा एतत् कर्म—अर्थात् जावण सारू दूजो कोई मारग कोनी, इण हीज मारग माथै इण काम नै लेयैर चाली। आज आपां नै कुण-सो जुगपुरुष दीखै है। जुगपुरुष कलाकार नै ध्येय बताया करै है, उण ध्येय नै कलाकार समाज री जड़ां ताई पुगावै। जुगपुरुष नै जे आपां पति मानां तो कलाकार उण री पत्नी है। जुगपुरुष द्रष्टा हुवै है, रिसी हुया करै है। कलाकार उणरै फेर्यां लगावतो रैवै है। ओक ईज आदमी कवि भर रिसी हुवै इसी बात तो कदैसीक ई देखण में मावै है। कलाकार ध्येयवादी हुवै जएँ ई वो अजर-अमर कला री निर्माण कर सकै है। व्यास भर बाल्मीकि रिसी ई हा भर कलाकार ई हा इण कारण ई उणां री कला आज ताई जीवै है। पण तुलना करणी हुवै तो कैय सकां हां कै व्यासजी मे प्रतिभा कमती ही भर प्रज्ञा मोकळी ही। बाल्मीकिजी में प्रज्ञा कमती ही भर प्रतिभा बेसी ही। व्यासजी नै कवि नीं कैयैर महर्षि रै नांव सूं बुलावणी पड़सी, बाल्मीकिजी नै रिसी रै बदळे कवि कैवणी ज्यादा ठीक रैसी। संत ज्ञानेश्वर रिसी ई हा भर कलाकार ई हा। रवींद्रनाथ ध्येय ई बता सकै हा, भर आप री कता नै वै जनता ताई पूगा भी सकै हा।

पण कलाकार भर ध्येय बतावण आळी ओक ई आदमी हुवै ओ कमती देखण में आवै है। घणी बार जुगपुरुष द्रष्टा हुया करै, विचार देवण आळी हुवै भर कलाकार उणां विचारा नै जनता री भाषा में भर जनता रै हिरदै माथे असर करै इसे ढंग सूं साहित्य रै रूप में सामने लावै। विचारा रो विश्वस्वरूपदर्पण जनता री आख्यां सह कोनी सकै इण कारण कलाकार उणनै सौम्य भर मुंदर बणावै। ध्येय नै घर-घर में पुगावणी—ओ कलाकार रो काम हुया करै। गिगन रा तारा सूरज रै व्यासमेर परकम्मा देवै भर उण री प्रकाश अंधारो हुवै जएँ ई लोगां नै पुगावै, कलाकार री भी ओ हीज काम हुवै।

जिए नै ये जुगपुरुष मानो उण रै संदेश नै घर-घर में पुगावण री लगन

मारें माय हुवणी चाहीजे । इण सून भाखें देश में भेक तरें री भाव हवा पैदा हुसी । इण तरें सून राष्ट्र बणी है । हां जुगपुरुष नै चुणएँ में भूल करी नीं भर स'ळाई गेडिया रळपा नी । नारसै महाजुड सून पैली जर्मनी में भंगरेजां सून टकर लेवणी-ओ हिटलर री ध्येय ही भर जर्मन प्रजा हिटलर नै जुगपुरुष मान्यो ही इण कारण बठै कला रा सगळा प्रकार भेक हीज काम करता हा । नाटक-कार इण भांत रा ही दरसावां नै लोगा रें सामनै रखतां, कवि लोग इसा हीज गीत बणावता हा । पत्रकार इण री ई चर्चा करता-करावता । इण तरें रें आंदोलन सून समूचें देश में भेक वातावरण री निर्माण हुवै । पण जुगपुरुष चुणएँ में भाषां नै भूल नी करणी जाहीजे । ध्येय जे 'सर्वेपाम् अविरोधेन' री साधना करण आळी नी हुवै तो राष्ट्र 'राष्ट्र' बणएण सून पैली ई ठिकाणें लाग जावै । पछै दूजो रिसी राष्ट्र नै दूजो ध्येय देवै । रिसी कोई आसु ई काल में जलमै इसी बात कोनी । सूरज पुराणें समै में हुतो भर भाज भी है इणीज तरें रिसी पुराणें काल में हा भर भाज ई है । भेक-भेक छिए सतजुग री ही है । हरेक पळ में सत्य रा प्रयोग हुवै है—जमानें री जरूरत मुजब उण-उण जमानें में जोगा रिसी पैदा हुवै है ।

आज भारत रा कलाकार जीवन सून की प्रळगा हुयग्या हुवै ज्युं लागै है राष्ट्रीय ध्येय री उणां रें जीवन मे पूजा को हुवै नी । तो पछै उणां री कलम में बळ कठै सून आसी ? देश रें सामनै आज जिको ध्येय है वो जनता ताई पूगै—ओ कलाकार री काम है । जणै देश री भाज री सरूप बदळसी भर नुवै भारत री निर्माण हुसी । भेक 'वंदेमातरम्' रें गीत सून जितो गहरो देश प्रेम जागै वित्तो हज्रां मावणां सून भी को जाग सकै नी । भेक रामायण भाज हजारां नै राम बणएण री प्रेरणा दी है । आज री इण भांत री विश्वमीं टेम में भी दया, नेह, सांच, प्रेम वगैरै रा भाषणें समाज में जिका दरसण हुवै है उण री कारण भाज रामायण है ।

महापुरुष आ।री ध्येय आपरें जीवण में बाळ'र जीवण री कला लोगा रें सामनै राखें है । वें आपरो जीवण ईज कलामय भर काव्यमय बणावै है ।

भेकर भेक कलाकार कैमी—'गांधीजी हरिजन-आन्दोलन सरू कर्यो भर भाषां रा कलाकार लिखए नै लाग्या उणीज विसैं मे कहाण्यां । भेक ही समा-रण, वा गयी पाणी भरण नै । रुढ़्यां सून अंधोहिया पुराणा घमंडी लोग भाया । उणरें भई ऊपर उणां माठा फेंक्या । थोड़ी-घणी उण रें साथी, भर उणरौ पड़ी फूटग्यो । मायें सून सोही बँवण लाग्यो पण उणनै इण बात री कोई चिंता को ही नी, उण नै तो भेक ई धुन ही कै घर में तिसा बैठा छोरों

नै पाणी किए तरै पासूँ । बस, हुयगी भेक कहाणी । इए में नीं तो कोई कला है भर नीं कोई तंत्र !'

म्है उए साहित्यकार नै पूछूँ हूँ कै इए कथावस्तु नै लोणां सामी राखए सारू जिकै कलातंत्र री अरुतर पढ़ै है उए नै की कोनी जाएँ, पए जे तूँ तांत्रिक भर यांत्रिक कला नै जाएती हो तो ये खुद ई इए मांदोलन री चित्रण धारा-उपन्यासां में, लेखां में भर कहाण्यां में क्यूँ कोनी कर्यो ? ये वस्तुवां काई याँनै महत्व री कोनी लागै ? लावां-करोड़ां भिनखां रै जीवण री धारै मन में कोई कीमत कोनी ? भिनख नै जानवर ज्यूँ गिएतां देखकर काई धारै हिरदै में लाय-पलीता को लागै नीं ? धारी भाख्यां मे भाप रा भासू कोनी भावै ?

भारत रा कलाकार ! इए तरै रा हज्राहँ ध्येय धारै भ्रमूत-स्पर्श री भास में धारै ब्याहमेर ऊभा है । धारै सारू ध्येय-मगवान भापरी किरणां तिपां ऊभा है । उणां रै खातर धारो दरवाजी पूरी तरियां खोल दी । धारा भंघार, भाख्यां भर माछरां सूँ भरया धरां में ध्येय रै प्रकाश नै भावण तो दी ! कला नै जे ध्येय री अभिव्यक्ति री साधन नीं बणासी तो समाज में कला री कोई कीमत ई को रैबै नीं । कला देवी नै वासना भर विकारां रै मिदर में ना बैठए दी ।

भाज ई देश में कित्ता दुख-दर्द है ! इणां नै बाचा देवणी—श्री कलाकार री काम है । सुख-सूतां लोणां री नीद हराम हुय जावै—इसी की लिसौ, इसा गीत गावो । इए भांत री कना कृतियां री निर्माण करो कै समूचे देश में सामाजिक क्रांति री भेक लहर, ऊठ जावै ।

देश रै हज्राहँ-लाखूँ गांवां रा दरसणां नै जावी । दरिद्रनारायण रा दरसण करी । साचां देश कालेज रा च्यार छोरा-छोरपां सूँ कोनी बण्यो । देश रा पूरा दरसण हाल ये करिया ई कोनी । देश री साधारण जनता रा महान कलाकार, साहित्यकार भर कवि बलुण री दाबी करो हो ! देश रै कलाकार री मतलब च्यार-छव सहर भाळां नै रिभावण भाळां कलाकार कोनी ।

भापणै भेक कलाकार री उपन्यास बांवर भेक गांव भाळै कयौ—'इए में म्हारी तो कीं इज कोनी । इए में म्हारा सबद कोनी, म्हारी जीवण कोनी भर-म्हारी समस्यावां सुलभावण रा रास्ता कोनी !' यां सबदां म्हारै हिरदै नै सीरां दाई बाळ नाख्यो ! हां, केई-केई कवि भर लेखक गांव भाळां री मजाक उठावण सातर उणां रा च्यार-पांचेक सबद भापरी कृतियां में बापणै

भर ग्राम-कवि का सोक-कवि बणए री बातें करए लाग जावै । पए इए तरै रा सांग कर'र कोई लाखें करोड़ों री मूक जनता रो कवि कोनी बण सकै । उएां रै काठे जीवए नै देख'र धारै हिरदें में प्राग लागै है ? बेचैनी हुवै है ? इएां माथें हुवए भाला अन्यायों नै दूर करए री तड़फड़ाहट मचै है ? इएां सारू सुख रो जीवए छोड़'र कष्ट उठावए नै तयार ही ?

जे देश नै जगावएां हुवै तो इए रै मूळ में पाएां नाखएां चाहिजै । कमळ नै जे खिलवएां हुवै तो उए री डांडी नै है ज्यूं री ज्यूं राखएां चाहिजै भर जे टैमसर इए मूळ नै पाएां नी भिळें तो हुय सकै है कै ऊपर खिलए भाली कमळ भी घूड़ में मिल जावै ।

महापुरुष इए मूळ नै पाएां पावएां सारू भाषां नै हेला मारै है — इए पुकार नै सुएां । देश रा मोकळा प्रादशां नै धारी जीवए-कला रै जरियें भर पारै साहित्य रै जरियें लोगां ताई पुगावो । घर-घर मे ध्येय रा दीया संजो-संजोयर दीयाळी मनावो । ग्रंथकार नै परो भगावो । कला रो भी हीज ध्येय है, भी हीज संदेश है ।

—मूळ रो अनुवाद पुष्पा जैन रो

राखी री त्यूंहार

सौभाग्यसिंह शेखावत

भारतीय साहित्य में संस्कृति, त्यूंहार, वारां री घणी बजाण नै मान मोल मिळै है। पणकराक त्यूंहारां रा पेटा में सामाजिक मान मोन मिळै है। दीवाळी दसरावो, होळी नै सांवणी रा त्यूंहार तो घणा कोडीला गिणीजै है। आखा देश में आं त्यूंहारां नै तान-मान, चाव-भाव, उर्मग-उछाव नै खुसी-खुस्याळी साथै मनायीजै है। राजस्थान में त्यूंहारां सूं घणी हेत-प्रोत रैयी है। वैदिक नै पौराणिक काल रा देवी देवतां नै लोकमानस आज भूल भुको है, पण त्यूंहारां नै पूरा उछाव-उल्लास रै साथै मनावती आय रैयी है। ऊपर बताया च्यारा त्यूंहारा में सावणी पूनम री त्यूंहार घणी पुराणी मानीजै है। इणनै सांवणी पूनम, रज पूनम, रक्षा बंधण, सलोणों नै राखी भी कैवै है। विद्वान कैवै है की वेदां नै सातरसां रै पैलपोत राखी बांधीजी ही। पछे राजा बळी रै समै जद बळी नै छेतखा-छळबा विष्णु बावनी रूप धार बळ नै छळियो जणा बळी री बरबानी बळो रो रक्षा रै खातर उणां रै राखी बांधी भर उणां नै दैविक भौतिक संकटां सूं उबारिया नै आपरी रक्षा री चावना कीवी....

येन बने, बलिराजा, दानवेन्द्रो महाबलः ।

त्येन त्वं प्रति बन्धामि, रक्षमाचल माचल ॥

जिए रक्षा रा धागा सूं राकसा री राजा महाबळी बळी बांध्यो गयो उणीज बंधण रै सूत रै तार सूं पाने बाधूं हं। धां विर रैय नै म्हांरी रिच्छा करो ।

रिसी-विप्रा री त्यूंहार राखी री त्यूंहार मानीजै। इणी कारण राखी री त्यूंहार नै गुरुपूनम री त्यूंहार भी कैवै है। पण, राजस्थान तो सती-मूरां, वचन-मूरां, धरम-धीरां नै दान-वीरां री प्रांत रैयी है। अठे तो मरण नै मंगळ गिणै री धारो रैयी है। जद ही तो मरणां नू मंगळ गिणै, मरणां मंगळाचार आज मरण त्यूंहारां रै रूप मे नू बा त्यूंहारा री कल्पनावां कीवी गई है। अठे मरण नै गमलमायता रैवै उठे सदा हीज त्यूंहार मनीजै। पुराण परम्परा सूं राखी री त्यूंहार मनीजै। पुराण सूं राखी री त्यूंहार

सांवण री पूनम नै मनायोजै है । राजस्थान में सांवणा री मास तिवारा री
मोड़ जनचावा बसंत री जोड़ । उछाव उछाव में भ्रजोड़ । सांवण मन भावणा
राग रंगां गोतां री रमझोळ । झूलां-हीठां री हिलोळ प्रियो रै कण-कण पर
हरियाळी री बौळ । पण, राजस्थान में बिना सावण रै भी भेक बार राखी
री त्यूं हार मनायोज्यो । मैण-भाई रै इण पुनीत पर्व री भावना सूं उछाह
पाय हिन्दू तीरथ चीतोड़ री राजमाता हाडी करमावती चीतोड़ रक्षा रै
सातर दिल्ली महल रा पातसाह हुमायूँ नै राखी भोकळी । चीतोड़ रै गोरव
री रक्षा सातर राखी डोरी मेलियो । मेवाड़ री घणी राखेराव सांगोजी
माळवा मांडव पातसाह नै रणभीम में हराय नै क्षमा दान दियो हो । सांगाजी
रै पछे उणां री बाळक बेटी राणी विक्रमादीत मेवाड़ माथे राज करती हो ।
विक्रमादीत नै बाळक जाण माळवा री घणी बादरसाह गुजराती चीतोड़ पर
चढाई कीवी । 'राजमाता हाडी करमावती 'हाड कटे हाडा हरखावै । गाडो
टळै पण हाडो नी टळै' रै कुळ भादशं रै बिड़द री उजाळवा घाळी । घणी
मरदाणी । बीरता री कहाणी । मेवाड़ री घणियाणी । पत पाणी रखाणी ।
बादशाह हुमायूँ नै चीतोड़ नै माळवा रा मद धाया मैगल बहादरशाह री
टक्कर सूं उबारण सातर राखी मेली । चीतोड़ री कासीद हुमायूँ कनै गयो ।
राखी निजर कीन्ही भर कागद दियो । हुमायूँ राखी देख नै कागद धांच नै
गज नै ग्राह रा फंदा सूं काढ़ण नै जदुनाथ दीदिया ज्यूं उतावळो-सो फौज
नै तयारी करण री हुकम दियो । राजमाता करमावती लिखियो हो । उण री
म्यानो कवि देवतां थकां कैयो—

कागद लिखियो कोड कर, हुवण हेत हमगीर ।

बादरियो बद मंडियो, भाव हुमायूँ बीर ॥

द्रंग मांडव माळव घणी, दाबरण मो घर देस ।

भाय ऊवारो बीर भव, भा राखी है, पेस ॥

कागद हुमायूँ बाँधियो । मैण रा हिवड़ा रा भाव उणां रै उर उदध में
हिलोरा उठावण लाग़ा । माँ जायो सहोदरा रै मान नेह रा, ममता रा, मोह
रा भाव मचळवा लाग़ा । हुमायूँ कळाई माथे कुंकम बरणी राखी बांधी नै
भापरा घठारटकी धनल नै तांणियो । कवच री कढ़ियां खणखणी । नीबतां
माथे डंडां री चोटां पड़ी । नद नाग झमरां रै हिये दहल पड़ी । घोड़ां री
टापां री दड़बडो लठी । झंवर में खेह उडी । मुल्ला मोलवी बाबर सांगा री
घदावट री बात कैय नै हुमायूँ नै बहकायो पण मोळी रै काचा तारां री
राखी धरै किण री बीज बटकावणी में सें गायो—

मुल्ला काजी मोलवी, बाबर सांगा बात ।

अइस अदावत आपसी, बाब्याणी बिह्यात ॥

पण राखी बंध मैण रो स्नेह । सांवण मादवा रो-सो मेह । डूठण साणी भयेह—

काचा कुंकम तार में, भाव भरषा भरपूर ।

सेन चढाई सूर में, पण दिल्ली कोसां दूर ॥

दिल्ली न चीतोड़ रें बीच घणी छेटी । उठी न चीतोड़ री मदत ताई हुमायूँ चाल्यो न प्रठीन मालवा री बाईसी चीतोड़ रें ओळी दोळी घेरो लगायो । सेना रें भार सूँ सेस नाग री सिर अकुळायो । कमठ री पीठ भार नी सह पाई । वाराह री दाढ़ मचकाई न घबळ री सींग तरड़ायो । अठी न चीतोड़ रा किला में उछाह छायो । राजमाता करमावती जोहर री जलसी-सो भंडायो । बीर जोधा जूँ भए न कमर कसी । रणदेवी जोगणियां हड़हड़ हंसी । बीरां खाणं संभाळो । घोड़ां री लगामां झाली । नौबत नीसाण धुराया । शूरवीरां रा मन उमाया । नारियां भगन में होमी काया । बीरघोर रणभोम में जलाया । बैरियां मायें खड़गां भोकी । घण्ड मुण्ड भायें जाणें काळिका हीज कोपी । घड़ी पलक मे शूरवीरां रण-राटक कर रण साथ रें सूता । 'पण जीतें सूरमां हारें' सो भेवाड़ रा जंग जोधार रावत बाघ देवळिया री घणी, भैरुदास सोलंखी, राज राणा सज्जा, राज राणा सिधा, रावत दूदा, माला सोनगरा, भाणा डोडिया शूद बत्तीस हजार बीर काम घाया न देखे हजार राणियां, रावतरणियां मनळ संपाड़ी कियो ।

साका कर रण-सूरमा, जोहर भळ जळ नार ।

केसरिया बनड़ा घणें, गया सुरग रें द्वार ॥

बादशाह हुमायूँ चीतोड़ पौचण रें पैलां हीज ओ मनोखी खेल पुरी हुवी । हुमायूँ राखी बंध घरम री मैण री रक्षा नीं कर सकियो । समें री छेटी नी सांध सकियो । पण, इतिहास में विक्रम संवत 1592 चैत सुद 5 री दिन राखी री याद री पदं बण्यो ।

राखी राजस्थान री, साखी भरें सत्तार ।

राखी रजपूताणियां, दोषण दळां दकार ॥

राखी राखो रावतां, राखो जोहर बार ।

अण राखी राखी मती, राखी राखो विचार ॥

इण भांत राजस्थान रा इतिहास में राखी मैण री ओ कथानक, ओ प्रसंग आज भी जीवती-जागती है । भाई भर मैण निरमळ, हेत-हिमळास री

याद दिरावै । राखी बंध भाई, आपरी घरम मैए री भलां ही समें मायै नौं
पूगए सूं मदत नी कर सकियो, पए हिन्दू-मुसलमान दोय न्यारा-न्यारा
घरमो नै राखी रा तार अक ठोड़ बांधता-सा तो सखावै होज है ।

हिन्दुस्थान रै बादशाह औरंगजेब री मोबी बेटी बहादरशाह दिल्ली री
तखत पायो । जवानी रा जोम में राजतंत्र री इमारत रा घामा राजावां सूं
रुसायो । कछावां रा आमेर अर राठोडा री मारवाड़ मायै आपरी हांमभाव
जमायो । कछावा नरेश जैसिध, नै नौकोटी नाथ अजीतसिध रा राज नै
खालसे लगाया । जोधपुर, घामेर, नागौर, सिंगर आनी ठोडां शाही पाए
धरपाया । भली अमदखां, गैरतखां, सैयद हुसैनखां नै फौजदार, घांणदार
बणाया । राठोडां कछावां रा खून मे उफाए आयी । हाड नोही रा खाद-
पाणी सूं सीचो भोम जावती नखाई । अजीतसिध जैसिध दोबां राजावां मसलत
कीयो । बादशाही घांण नै जीतवा री उपाई । राठोड़ बीर दुर्गादास, रावराजा
संगरामसिध, उलियाग नरुका घाद जोधारां री भी आहीज राय भाई ।
5 अक्टूबर सन् 1708 कार्तिक मास मे आमेर नै जोधाए नाथ री फौजां
सांभर पर घोड़ां री रासां उठाई । कमठ री पीठ कसमसाई । रए बांका
राठोडां नै कळह काठा कछावां री फौजां सांभर चाली । सातो ही सागर
उभल्ली सेस नाग रा शीश पर थंमी धरणी हल्ली । घोड़ां री टापां सूं धूळि
उडी, किरणनाथ रा संहस बिरण रज अंबर सूं मिळी । अग-सा मल्हपता
चांकड़ी भरता सेस रा फण-सी नामा फणकरता घोडा, बाळछां नै लळवळ
पटकारता, कायरां नै कंपावता, कहर बरसावता शाही सेना पर घायल बाघ
कै रीसायो नाग कै मद आयी हाथी कै जमराज री नातो री भांत भपटां
मारवा लागे नै सांभर रा घाणायत री सेना नै सांघर पीडाय नै घाणायत नै
कायरता रै काळै रंग री ओडणी ओडायी । सैयद हुसैनखां ग्हाठ नै देवदानी
मे सरण ली । पछे बीजे दिन मथुरा री घाणायत गैरत खा, आवेर री शाही
फौजदार, नारनोळ री फौजदार, भरतपुर री नुडामणि जाट मगळा मिळ
कछावा राठोडां पर घोड़ा उठाया । गजनाळां सूं ग्राममान गरणाया । जबरो
सो राटक हुकी । कवि कलाविधि बरणिमी, एए भांत सांभर री कजियो —

सैदन दळ हंके समानि बंके

दुंदुभि डंके जोर दिये ।

घर होत धमके सुरगन संके

पर घातके लोक हिये ॥

हम टापनि टुट्टे गिर तट फुट्टे

फनपति कुट्टे सहस फना ।

धूली भर जुट्टे घंवर मुट्टे
 पावस छुट्टे मनहं धना ॥
 जयसाह सवाई पर दळ घाई
 भरिन घवाई देखि सरै ।
 चढुटेदळ साजें संगर गाजें
 रघि ज्यों राजें तेज धरै ॥
 संभरसर तीरनि केसर नीरनि
 रंगे चीरनि चारु ठये ।
 दे हुंहुभि घोरनि बंके घोरनि
 क्रूरम मी रन करत भये ॥

मलो-सो चकावो हुवो । शाही पल प्रबळ जणाई । हजारों जोधारी नै
 रण भीम सुवाई । घामेर, जोधारे पत रणघेत ऊभी मेल घरां नै चलाया ।
 बादशाही फौजां फतह रा सैदाना बजाया । मौबतां पर त्रिघाई पड़ी । राजावां
 री फौजां में भगदड़ पड़ी । उणियारा रो राव संगरामसिंघ नरुको, भेकल
 बाराह, हठ री पक्को । जलालिया री ठोकर कं जमराज री धक्को, कं जेठ
 मास री लाय री पलीतो कं सांपरतपल्ल भायो घाडोवळो पगां हलीतो ।
 पांचसी काछी कंधारी सरगोश कप्ता घोड़ा । पांच सौ कुत्ता लाहोरी जाया
 पांच सौ हीज जोधार भेक मझा मां जाया, पूतां सारखा जोड़ा । जाता जम-
 दूतां नै बाध घाले । मीवारज ए री भांत गजां नै आकाश पर उछाळें । रहणी
 कहणी रा पूरा । खुररागण कं मेस रा फण । प्रळय रा मेघ कं वेह लिखिया
 लेख । शाही फौज पर चलाया । खून रा खाळा बहाया । साभर रा श्वेत नीर
 राता लखाया । व्याहं फौजदारां नै कक्षां में पौदाया । शंकर री माळा रा
 सुमेर बणाया । पांच सौ कुत्ता शाही सेना रा गज-घोड़ा नै मेलें लगाया ।
 सांभर में गज-मोती बिखरिया । पराजें विजें हुई । हार री कळंक उणियारा
 री राव घोयी । कछावा घणी नरुका राव री चीरता पर मोयी । सावणी
 पूनम राखी री दिन भायो । महाराजा सवाई जैसाह फरमायो । राव संगराम-
 सिंघ जावतां घांवेर नै पाछी लायी । कछावां में टणको जोध लखायो—

ऊंचा डेरा राव का, सब सूँ ऊंचो राव ।

राखी बांधो राव कै, सब की राखो राव ॥

पछें कछावां नाथ सिरै दरबार कर राव संगरामसिंघ रै राखी बंधाई ।
 रावजी री मान बढ़ायो । पांच सौ कुत्ता रै सरचं ताई जैसिगपुरो गांव, इना-
 मत कियो । जिकी भजें भी कुत्ता री जैसिगपुरो कहीजें है । उए री हासव

उलियारै राव रै भुगतती । इण भांत सांभर पर फतै पाई अर दोवां राजावां
सांभर री दोय पांतां कीवी । आधी जैपुर नै आधी जोधपुर सारै लीवी ।

इण भांत इतिहास में राखी री घणी महत्व है । उण नै जाणै है राज-
स्थान रा वासी सह । मैण भाई री भौ त्यूंहार । पवित्रता, निरमलता,
नेहता री-सिरदार । झंडा राखी रा एवं री राजस्थानी इतिहासकारां, कवे-
सरां घणी महत्ता बताई । गुणगाथां, ख्यातां, रूपकां मे गायी, जिकी थोड़ा
रूप में अठै जताई ।

पूरण पुरुष कृष्ण

सत्यप्रकाश जोशी

१३५

श्रीकृष्ण की जीवण म्हनै सगळा सून ज्यादा मोह लेवै । महाभारत, हरि-
वंश (अर बाद मे भागवत) ग्रंथां में जिकी जीवन्त अर भव्य व्यक्ति रेखावां,
वेद व्यासजी की प्रतिभा, भारत रा जन मानस मे उकेरी है, उणां में कृष्ण की
उणिपारी धुरी की ठोड है । दूजा सगळा उणिपारा उणां नै घेर कर उणारें
सारें धरियोडा है । फेर भी हातात आ है कै जे आप महाभारत रा श्रीकृष्ण
नै ध्यान सून देखण की चेष्टा करी तो आपरी निजर में उण उणिपारा की
देहीबद्ध सरूप सावळ मर कोनी सकै । उण रूप नै रेखा रूप मे साकार कोनी
कियो जा सकै । बिराट रूप की फगत अेक उल्लेख, उण रेखा वाळा शरीर की
घाखी उणिपारी पूंछ दियो, ढक दियो । सून जाएं मेघ सूरज नै ढक लेवै ।
अेक सांवळी घुंवाखोरो वातावरण ई कृष्ण रा नाम मे भरघोडी है । पण
जठे कृष्ण रै उणिपारा की रेखा पल मर सारु दीसै, फगत कोरां मे दीस
जावै, उठे उठे म्हनै रंगां की अेक मोटी पूंजळी दीखण लागै—रंगा की छटा
अेक दूजा सून घुळती अर फेर छिटकती, भ्यारी पड़ती ! अं रंग, अं छटावां,
सिक्का रा मेघा ज्यून भौतिक नाखणहार है—दोड़ता भागता रंग ! कृष्ण रै
व्यक्तित्व रै आभास की भी रूप म्हनै आखर साभ रा रंगा ज्यून लखावै । म्हनै
केई बार लागै जाणै अं रंग, हीया रा अेक अेक कण मांय सून उफणार छळक
रहा है ।

जद इतिहास या साहित्य की अगणित व्यक्ति रेखावां म्हारा मन में
सं-जीवण होय बैवण लागै तो म्है भांत भांत रा आभासा सून घिर जाऊं ।
उण वगत अं व्यक्ति रेखावां उण ग्रंथां अथवा इतिहास रा अंश कोनी रै जावै ।
कोई सुन्दर रेखावां मे घड़ीज'र आवै कोई फगत आख भै, तो कोई काम
करण वाळी सुंदर हाथ । कोई की वं आख्यां म्हारी लारी करै, कोई रा वं
हाथ म्हनै आला देवै । कोई रा होठ की कंवण नै उनावळा भै तो कोई बिना
रोकटोक म्हनै चिडावै । बुद्ध जैडा लोग शिसाखड ज्यून जड होय म्हारें साम्हें
बैठ जावै । की अेकदम सूनडो फेर लेवै । कृष्ण की रंगाकृति अैडा अैकलापण
की आभास कोनी देवै । रा रंगाकृति मन जैडी दूजी कोई जाण्योड़ी गथ कोनी,

पण आ गंध हृद उत्तेजक है। आ तीखी है भर घणी ताळ म्हन घेरघोड़ी रैवै। की इण भांत री है आ गंध जाणै सृष्टी रा सगळा मरदां री प्राण सगत री गंध नै भेळी कह समस्त फूलां री गंध में घोळ दी व्हे। भर म्हन दीसै उण गंध रा गरम में सुरा री भेक हरियो भकुर फूट पड़घी है। जाणै धैवत मायें ऊंची कोमल निसाद रा कोई रेखापोड़ा सुर !

अर विराट रूप री आभास देवण वाळी आवरण कदेई कदेई पड़दां ज्यूं बीच में फाट जावै। भलेखां पुराणकथावा मे, आंधी श्रद्धा में अर नारी री नस नस में जिकी भेक नामहाण अनुभव भपकारा लेवै, वो भेकाकार व्हे जावै अर उण मांय कर भवतरीजै भेक ऊंची पूरण पुष्ट ! वो आदम सून सगण जोड़े शरीर अर वासना में ! पण वो आदम करतां भलेखां दैविक उपहारां री हकदार है। आदम री कोई संस्कृति कोनी ही, पण इणमे संस्कृति साकार व्हे इण रै भोळूं दोळूं सुख री ब्यारियां खिल्योड़ी है। बापड़ी आदम बगीचा सून बारें निकळघो अर आ जाणण रै पैलां कै भो बगीची है धूळ खावती फिरण लाग्यो। इंद्रिया रै फणां रा चावका खावती घूमती रहयो। पण भो जीवती रहयो पोरुष री, मिनल जात री सम्पूर्ण मस्ती नै पी, पचाय'र अर मरण री विजोग री भेक-भेक पीड़ नै होळें-होळें परस कर जीविया गयो। इण में भरघोड़ी ही परस री सम्पूर्ण लालित्य, सगळी नयरो। व्यासजी रै हाथां रचियोड़ा रंगां री भलकियां मे भो दूजा धरातळ वाळी पुरुष रूप इदको, मनमोहक अर घणी रेखावां में बघ्योड़ी उभर्यो है। वो साह्यातकार रा चमत्कार सून मुगत व्हे जावै, पार्थिव जीवण रै सारें हिलण डलण लागै।

कृष्ण री चरित किणी भेक ग्रंथ में बघियोड़ी कोनी। भलेखां ग्रंथ, काव्य अर नर नारियां री जीवण उण नै तिल तिल दे कर रच्यो है। कृष्ण री नाम जीवै है आज लग, जीवण नै चारू कानी सून परम करण वाळा, जण उण रै सुख दुख रा भपकारां नै खुद भोग कर अर उण नै संजीव अर कृपा करियां। इण कारण कै कृष्ण मिनल है, फगत मिनल ई नहीं, शून्य १। सून पुरुष।

कृष्ण री जलम मौत री छीयां मे, डर रा संवर में अर ११ १ भरोसा मे हुयो। राम री बाळापण कोई नै याद कोनी आई १ १ १ मे बढ पड़घी है : ईसा अर बुद्ध रा आवरण मायें खरी १ १ १ हुयगी। पण कृष्ण री बाळापण घर घर मे १ १ १ भनुमवां मे धिर हुयगी है, वो बाळकियो, जिक १ १ १

जामण री गोदघा सूं भागी चल्थी जावै, घर बिरह री आंच में बल्लती जावै । भौ बाळकियो, दूजा बाळका ज्यूं विराम कोनी पावै । वो जसोदा रें दाम्भता होया भायें हरियाळी बग छा जावै । वो गुहाळयां चालें, पालन में पड़घो रोवै, जाएं उए में कांटा बिछपा रहै घर पयरणा गीता कर देवै । उएरी बाळहठ विरुपात है । वो कूटीजै, भोवरी में बन्द करीजै घर बोछरड़ाया कर भोत नै नेड़ी बुलावै । वो मोटो बघै, मां नै पल पल याद करावती के म्हारी लाल भेकदम मक्कार है, इणी कारण उए सूं भयेही प्रीत है ।

इएरें पछे दूजी पवें ! ग्वाळ बाळां सूं दोस्ती, सेल, चोरी, ब्रज री गोपियां सूं छेड़ छाड़, काची ऊमर में राधा साथें प्रेम क्रीड़ावां । पहलवानी में प्रवीण ! कोई कोनो ही जवान होवता कृष्ण में ? भेक कानी कंस ही, सिसपाळ ही, भाळोभाळ बैर पळती ही घर दूजी कानी मोळा ढाळा टावर घर गोपियां ही जिकी उए सारू हयेळी में प्राण लियां दूमती ही । बड़ी माई उएरो दास ही । गायां उएरा बछळ परस सूं हरलावती, तगड़ी होवती । वैरी प्रसूती बघती ही, दूध री नदियां बँवती हा ।

उएरी मुरली जवानी रा सवेणानें भाला देवती । घर इमो जादू ही उएरा संगीत में कै गोपियां लट्ठ ही मुरली बजावणवाळा भायें । वैरी जोवन फकत उएरें सारू खिलती पण जिकी कदेई साधेजिनिक स्वैछाचार में कोनी बदलीजियो । समदर री छीळां जिसी ही वो लिचाव, जिकी उवार धावती मगत घेर लेवें घर पाछी घापरी प्रेरणा सूं ई उतर जाया करै । लिचाव जिकी कृष्ण सूं भागी हट, कृष्ण में ही समां जावती । भौ वो सनमन ही जिकी भेकदम मीठी ही, इणी कारण मजबूत ही । इण सगण री सब सूं ऊंची प्रतीक है राधा । द्रौपदी नै कृष्ण सूं बँन रा रूप में बांधेर परम्परा, व्यवहारिक भोत नै प्रतिष्ठा देवण री सफल घर भसपळ प्रयास कियो है । भागे चालेर राधा जब पुराणां में भवतरीजी ती वा अँ सगळा बंधण तोड़ दिया । कोनी रोक सक्या उए प्रीत नै ब्याव रा बंधण घर ऊमर ! अणबंध घर नाजुक रसमी सिणगार री बा इसी अनुभूति है जो कदेई जूनी कोनी पड़ै ।

भारत री संस्कृति प्रायः साहित्य में कोनी लिलै । वा भेक बार भरपूर खिली । राधा घर कृष्ण री प्रीत री बसंत भेक बार ई घायी घर पाछी गयी परी । गयी तो परी पण की इसी छोड़ कर जिकी सदा जित्यो रँव घर अणछक महकती जावै । भारतीय पतिव्रत धरम री कठोरता नै अणहद चुणीती देकर राधा में भेकनिष्ठ प्रीत री चादणी सूं रंगोड़ी पूर्ण सुन्दरता नै उदघाटित कर दी । राधा ई ही जिकी प्रेमानुराग रा दमकता लाल बरण नै

ठावो लीलो रूपाळो बणा दियो । इणी सोवणी प्रीत नै आपरै मांय अेकाकार करतां करतां कृष्ण री व्यक्तित्व अकाश सूं असीम होवती गयी । वो अणू तो मीठो अर निगूढ बणग्यो, रात रै उनमान । कृष्ण अर राधा री प्रीत सूं भारतीय प्रेम-कथावां नै नई कवळास मिली । वो भाव मित्यां जिको गिरस्थी रा बोझ सूं भी बासी कोनी हुयी । प्रीत री पूर्णता अमर यौवन री मूंडी भाळया करै । उएनै सिद्ध करण नै भी आदर्श प्रेमी जाएँ खुद नै राधा रा विजोग सूं बांध राख्यो है ।

काई वो दिखावणी चावै के मौत में लीन अमरता ज्यू प्रेमी भी आपरी साथेकता तद पावै जद वो प्रिय रा सैवास सूं सदा रै वास्तै वंचित रहै जावै ? काई वो आपरा अनुभव रै आधार मायै आ बतावणी चावै के अँडी चिर विरह ही प्रेम री मफळता रा अशरीरी रूप री उत्कटता री विश्वास करावै ? राधा अर कृष्ण कद अेक दूजा रै साथै रह्या ? वैरी सहवास छिए भर रो है, पण भी छिए घणी मुखर है । इण मुखर भाव नै पुराणा अर कथा काव्य घणी संभाळ सूं राख्यो है । वैरी संजीवणी प्रीत री प्रतीक है मुरली । अर पछै आवै अणंत विरह ? जिकी मून है, निगूढ है । वो कदेई कोनी ग्रहण करै नाद रंग रूप रा आभरण । वो विरह कळह, उपेक्षा अर मौत री संकेत भी तो कोनो देवै । इण अनामता रै कारण वो अेकदम सजीव हुयोडो आवै । अँडो कोनो दीस-कै कृष्ण कदेई राधा री ओळूं में आकळ बाकळ होय राम ज्यूं खुलै आम शोक मनायो रहै । काई वो इण कंवळी प्रेम री खोज नै हिवड़ा रा कोई अेकान्त खूँणा में इण भांत छिपाय राख्यो हो कै कोई पिछाण भी नी सकै ? दुनियादारी रा संकेत उएनै परस ई कोनी कर सक्या ?

राम भरजादा-पुरयोत्तम है अर कृष्ण हर व्यापार में सीवा सांघण में प्रवीण । कृष्ण हर बात नै निपुणता दी । उएमें अमरजाद, मुंदरता अर चेतना भर दी । वो पवन रा आधी क्पाटां रा सरणाटां री जीवण जियो । टाबरपणा में वो खेलण में प्रवीण हो, प्राणपण सूं खेलती । चोरी नै रमणीक बनाय दी । हास्य-विनोद नै वो जतनां सूं पाळ्यो । भारतीय दार्शनिक अर हास्य-विनोद, दोनों में इतरी अंतरी है जित्ती धरती रा दोनूं छेड़ा में—संसार में सगळा ई दार्शनिकां मायै आ बात लागू रहै । फगत अेक अंपवाद है कनपयूसि स । वो आ थापना करी कै जिकी आदमी हंस कोनी बण सकै वो संत कोनी बण सकै । कृष्ण री गीता में हास्य विनोद कोनी । वा अेक गमीर सिरजणा है । पण कृष्ण रा प्रारंभ रा जीवण मे कौतुकी विनोद भरयो पड़्यो है । वो नी होती तो गीता री गंभीरता ओछी पड़ जाती ।

कृष्ण मूळ रूप सून कळासवत प्रादमी है। वो संगीत री उपासक है। उणरी कळा प्रासक्ति भी प्रीत ज्यून घरती मार्य पग रोप्योड़ी ऊभी है। वो वीणा धारण कोनी करी, धांसरी उठाई। प्राणपण सून बांस रा टुकड़ा मे मौजर उगाया। कृष्ण री सहरी मुरनी री मिठात प्रमर है। ग्रहारां री मामूली बाजी। पण श्रीकृष्ण उणने मप्राण कर दितायो। भेकदम प्रायत, टेटी-बाकी चीजां नै चिरंतन कळात्मक मानां सून सत्तायणी फगत कृष्ण ही जाणतो। कळाकार री उफण उफण बैवण बाळी घर खुद नै होम करण बाळी व्यक्तित्व कृष्ण रै जीवण री प्रमुख भंग है।

श्री उफण कर बैवणो, श्री विमरजण री गुरु की इग मांत दुरनिवार है के कृष्ण देवतां देवतां भेक भूमिका सून दूजी भूमिका मे बेरोक-टोक प्रवेश कर जावै, नई भूमिका मे तन्मय बड़े जावै; घर इत्ती ई नही, नई भूमिका नै निभावती धकी, पाछनी भूमिका सून जुड़घोड़ा लोगा नै होम देकर खलगी बड़े जावै। देवकी नै मां रा पद सून सिंगार वो उणने छोड़ प्रांग बघ जावै। जसोदा भर नद री सभाग की ध्यारी कोनी है। श्री ई हाल गोप-गोपिया री हुयो। श्री ती सब ठीक पण काई वो मुखरा री प्रजा मायै, कंस नै मारियां पछै चिप्योड़ी रह्यो? विलकुन नही। मुखरा छोड़ वो द्वारका पूगयो। महा-भारत रा जुद्ध मे शस्त्र री परस नी करण री प्रतिज्ञा लेय, वो जुद्ध रा रूप में कमायोड़ी धाररी ध्यान नै विसरजित कर भर भेक दार्शनिक री भूमिका निभाई। इणनै स्वीकार करती वेळा वो जादवां नै त्यागण री तैयारी दिखार्द, वारी उन्मत्त अवस्था देख वो जादवां रै विनाश री कारण बण्यो।

कृष्ण जंडा घनासवत जोगेसर सारू समाध में मरणो ठीक बूँतो। वो एण परपरागत भूमिका नै मो त्याग दी। वो मरण सून साह्यातकार कियो निरजन मे व्याघ्र रा तं.र सून। पूत, भागली, साधी, बंधु, संगीतकार, प्रेमी, जोड़ा, पति, राजा, राजनीत री धुरधर, बक्ता, दार्शनिक इत्याद सगळी भूमिकावां में अपरंपार रस घोळ, कृष्ण अत वे सामान्य मानव ज्यून आपरी मरण स्वांकार कर जणै सगळी भूमिकावां नै हराय दी। ईसा मसीह मरती बगत कहाँ ही, 'हे ईश्वर म्है वो कुणसो पाप कियो जिकी सून म्हनै प्रा सजा दो?' म्हारा विचार सून ईसा री बाणी उणरी विनम्र मानवीयता प्रगट करै। भूप्रर रा मांस री सेवन करण सून दतिसार रोग रै कारण गीतम दुद्ध री संसार लीना पूरी हुई। इण सून प्रा बात समझ मे प्राई के जोग री सिद्धि पावण बाळ; महात्मा भी सामान्य भिनडां रै शरीर री नियति सून मुगत कोनी हो सकै। कृष्ण रा नम्र मरण री भी प्रा ई कथा है।

कृष्ण रा गोपिया साथै कियोडा 'व्यभिचार' री हाऊ हमेस ऊमौ कियो जावै । सार्था वात है कै कृष्ण जिका भी जीवण नै अंगीकार कियो, उएनै सामान्य मिनख री भात स्वीकार कियो, पण साथै साथै या भी भूलण री वात कोनी कै कृष्ण में की इए भात री निपुणता हो कै वो सामान्य मिनख री नियति-मे लूण रा कण री ब्यूँ धुळ जावतौ अर उण मायै आपरी छाप छोड जावतौ । अवोध टावर, ढोर, डांगर, गणपढ, छोटी वडी, मूरूप कुरूप नारियाँ—वो सगळीं नै समान रूप सून ग्रहण करी वारो आपरी बण'र ग्रहण कियो अर अँडौ लाग्यो जाँण वो थोड़ी ताळ उएमे पूरी तरियाँ उलझ्यो, पण जद उए सून पागो जावण री जरूरी छिए हाजर हुयो तो दूजी बार मुड'र उए साम्ही कोनी देख्यो । किशोर अवस्था पार करतां करतां जिकौ आदमी राधा सून मूँडो मोड़ लियो वो मलां गोपिया कांनी देखतौ ? बरस बोत्यां वो गिरस्थी भी बण्यो ।

अर छेला दिन ताँई कुटुंब वात्सल्य री व्यवसाय भी ईमानदारी सून करतौ रह्यो । पण वो आपरै वंश री विस्तार कोनी होवण दियो । वो अपत्य मरण री वेदना भेकाकी रैय भेल ली, चुपचाप अर अष्टनायिकायां सून घिरियोडो भी वो अकेली ई रह्यो ।

आसक्ति अर विरक्ति दोनों री पराकष्टा वो चतुराई सून हासल करली । वो मेघ ज्यूँ बरस कर रीतौ होय गयो परी । द्वारका बळनै भसम हुयगी । पांडव भी राम ज्यूँ राजसुख कठै पा सक्या ? महाभारत रै जुघ री दुख उएनै जीवण भर बाळतौ रह्यो । कृष्ण री भी काँई वज्यो ? की कोनी । बचगी फगत बळता कपूर री सौरभ । आपरा व्यक्तित्व नै आपरा ई हाथां सून पूँछण री पूर्व कळा ही कृष्ण में !

अर फेर भी म्हनै लागै कै श्रीकृष्ण आज रै संसार री विसाळ अनुभूति में कोनी मावै । लागै कोनी कै कृष्ण नै आज रा जुग में जीवत रूप मे फेरुं विचरण करतां देखूँ—कै वो जीवतौ होय'र भावै अर ससार में सुप्त बाँटै । बल्कि ओ ई ठीक है कै वो पुरातन साहित्य रै धूँघटा में छिप्यो है य्यूँकै इए सून ही उएरी चिरंतनता अमरता बणी रँसी । जंतरजुग भाग्यो है, वगत सावधान हुय्यो है । इदको जाणकार हुय्यो है । अबै नौ इत्ती सीधी कोनी रैय्यो है कै किणी री भेकाकी पगचाप सुण उएरै लारै हालै परी, उएरी मूँडो भाळ आपरी चक्कर चलावै । व्यास रा जुग में, लोककथा रा किणी अँक कल्पित काळ में मचाई कृष्ण री जीवण संसार व्यापी बण्यो छै, आज जद व्यक्ति रा जीवण री सगळी इयत्तायां फैल चुकी है, तो अँक सरब संपूर्ण

आदर्श पुरुष आज रा सुसंस्कृत जीवण नै व्यापार भी दम धांगल छोड़ो पड़ेला । वो महान बण सकैला, इसी लागै कोनी । हां, हो सकै पुराणा धरम चलावणिया—इत्ता मोटा व्यक्तित्व माय उण आदोलनकारी जीवण रा हरावळ मे सोमा पावै । ओ भी कोनी लागै कै कोई भेक आदमी, सपूर्ण मानवी जीवण रो तात्विक अरथ समझावण रो हिम्मत करैला । कृष्ण रो प्रेम सुंदर ही आपरै जुग मे, उणरी राजनीति रो चतराई आज रा गणराज्य में पूरी कोनी सिद्ध व्हे सकै । उण महामानव रो जिकां भी निजी सत्त्व ही, वो आज रो संस्कृति रो प्रगल्भता साखू पूरी कोनी पड़े । वो बिना संदेह भेक खेतीकरसण रो संस्कृति रो प्रतीक ही । जे वो वर्तमान यांत्रिक नागर संस्कृति में रह्यो तो फगन मरामत मंदघोड़ी मजूस रो सिलगार बण कर; पोख्य, प्रीत, संगीत भर दर्शंग रो प्रतीक बण कर । समझदार काळ सैकड़ा बरसां लग करोड करोड मू डां सूं कृष्ण रो कथा रो गान करवा कर, कृष्ण नै प्रतीक रूप में जीवती राख्यो है । चोखा चोखा लोग महामानव रा सपना देखै, पण जंवयुग मे महामानव विसरजित व्हे जाया करै, जोबित कोनी व्हे । कारण ओ कै, आपां मानव मन रो मूळभूत कमजोरी नै जाणग्या हां । कांई महामानव रो मांयली मन किणी दूजा गुणां भर बरणां सूं बणण धाळो है । ज्यूं कै आपां जाणां कै अबै आपां रै बीच घँहा महामानव कोनी जलमैला, इण कारण आपां अतीत रो महानता रा रूपां रो गरब करां, प्रतीकां रा रूप में उणांनै जतन सूं राखां भर सावधानो बरतां । कठै ई इसी नी व्हे कै वरे भर आपा रै बिचै कोई आंतरो ई कोनी रै जावै ।

गोगाजी रा घोड़ा

डॉ. नेमनारायण जोशी

आई साल मादवा बंदी घाठम—जलम घाठम—रै दिन सिभधा पड़घां पैली-पैली परजापत री घरमाळी काळी चीकणो गार रा फूटरा घड़ियोड़ा दोय गोगाजी रा घोड़ा पूरा सूकयोड़ा, कदे अघगीला ई—हैली पुगाम जावती । दादी वां नै उठा'र रसोई आळी अंधारी साल मे मेलै, जा पैली तो टाबर-टीगर आय'र घेरो घाल देवता । वां री मौळी आंस्यां मे आयोडी चमक जाणै बूमती कै मै काई है ? टीगरां रै बात समझ मे नी आवती जरै टाबरां मायलो कोई बडगर हाथ मे मालो भात्योडा असवागं भर घोड़ा रै बारी-बारी सूं हाथ लगावती कैवती कै मै तो है गोगाजी भर मै है आंरा घोड़ा । कहबाळो तो बुभागरजी री तरज में कैवती पण सुणाबाळा कोरा रा कोरा ई रैय जावता । घर रा वूढा-दानां सूं बूम लेवती कोई कै गोगाजी कुण-कठ रा हा, भर क्यूं आवै है वां रा घोड़ा सालोसाल, तो जवाब मिलती चुवांण ही, चुवांण; गोगाजी तो ही चुवांण भर पाबूजी हो राठोड़ । सुणाबाळां रै मन मे फेर भी चानणी नौं होतो । उण बगत तो खैर मै टीगर ही, पण आज घर रा दानां लोगां में म्हारी गिणती हुवै । टाबर-टोळी जै वा ई बात आज म्हनै बूम लेवै तो मुस्कन पड जावै । गोगामेडी रा चुवांण राजा गोगादे री सात सै बरसां री घुंघ मे डूब्योडी का'णी री बिगतां सायत ई बता सकूँ । इतरो जरूर ध्यान है कै का'णी में देवळ चारणी भर पाबूजी राठोड़ रा नांव आवै पण वै क्यूं आवै भर नी आवै तो काई नुकसाण है, आ मै नी जाणूँ । जिए में गोगाजी री नाम आवै इस्यो अेक दूवो पण कदे मुण्यो हो । उणरो भी अेक खूणो कद टूट'र विरगो, म्हनै बेरी नी ।

करि राखो नेड़ांह । डळिया हाथ न आवमी, गोगादे घोड़ांह ।

भर म्हनै लागै, कै का'णी री बिगतां रा वै घोड़ा साच्यांणी ई डळगा है घर भव आपणै हाथ भी नी आवणा ।

पण दादो नै काणियां सूं काई मतलब, जलम घाठम आई, तो इणरो मतळव ही उपास राखण आळा रै खातर सेंगार बणाणी—सिधाड़ा री सीरो

घर पत्नीची री पुढियां, सो भाज बणाय नांही ही । ब्रह्म भायगा गोगाजी रा घोडा, मतळब तडकें गोगा नम हां जाती । गोगा नम, मतळब खीर बणाणी घर मेदा री बिलोवणा भायें बटघोडी सेवां, जों पर कडकड सांड घर घिलोडी । टात्रर-टीगर समझ जावता कै परमाते तीन कोस भायूरु गांव पादू में गोगाजी री मेळो भरीजणी, घर सरची हाम भा जावें तो देतण नें चालणी । पण सरची कठें ? भाज रिपिया पोसा री घणी मोनळ है । पण बीं बगत देखबा नै ई कठें हो पोसो ? जारज पंचम घर रांणी री पोदू घाळो तांबें री पोसो जद गाढी रा पेढा जितरो सूंठो दोसती । रास्तें चालतां कदें कोई छोरा-छापरां नै साथ जावती तो सगळा साथी साथनां नै दिवाती फिरती । छीतर माळी नै तळाव री पाळ पढ़तां भेक घांती काई साथी, भायो गांव बीं नै तकदीर घाळो मानण साथी । गांव री ई मादवा सुदी तेरा री मेळो व्हेतो बालाजी री, तो जोसीजी खुदोखुद मेळा में जाय'र भीड्यां री दुकान सूं दोय रिपियां रा पोसा खुल्ला करा लावता घर पांती घायां में नै बांट देवता । पांती मे कदें च्यार पोसा घावता, कदें पांच ढाबर-टींगर दोय दिन तांणी मगन रेंवता । पण बीं मेळें रें घाढा तो हान घेला दिन पढ़्या है, घर इण परायें गांव रा मेळा खातर सरची देवें भी कुण ?

म्हनें बीं बगत नवमो (बरस) चालती । ब्रह्म बाप रा बेटा भाई रामचंदरजी—म्हारें सूं बरस-ळांड बडा, म्हाारा जोडीदार हा । भापी रात रा भिम्फोड'र वै म्हनें जगायों तो अण्णमेर म्हातर, टिकोरा घर नगरां री गूँजती भावाज सुण'र में हाफाधूक व्हेणो फेर याद भाई कै बजार-ळाळो चारमुजा री मिदर है जठें म्है दोयूं भाई उभाव में भण्णोडा, मिदर रें पुजारी घर मदन दरजी रें सागें नीं समझ में लावण घाळा भजन घणी देर तांणी गळो फाड-फाड'र गावता रिया हा—या जाण'र कै म्हारें गळें रें जोर सूं ई भगवान री जलम होसी; घर जे भजन गाबा मे चूक रेंवगी घर जलम नीं होयी तो पुजारी फेर पंजीरी नीं देसी । सेवट जलम हुयी घर हथेली भायें दई री चिरणामत घायी । बीं नै चारुयी तो मूठी पंजीरी सूं भरीजणी । बारी बारी सूं पंजीरी घर नींद रा म्मोका लावती में भाई रें सागें हेली कांती चाल्यो तो भेक'र फेर म्हनें पादू रा मेळा री घ्यान घायी ।

दूजे दिन घड़ीक दिन चढ़्यां, म्हाबा खातर तळाव में कढ़्यां सूदा पाणी में ऊभ'र में भाई नै बताई कै म्हारें कर्न भेक पोसो है तो वै हाथ सूं नाक पकड़्यां चिमली भारता-भारता रेंवगा । नाक छोड'र दोयूं हायां सूं कढ़्यां रें चोफेर ऊजळो पातर पांणी काटता बीड़ी भाख्यां सूं वै म्हारें कानी मूं देख्यो जाणें में कोई जादू री खेल दिसा दियो होऊं । मुळकता होठां वै बोड़ी

देर म्हारी बात री सच्चाई री या लेवता रिया । विश्वास भायी जरै बोल्या—
तो भात्र तिरां कोनी —चालो भेलै । घर भट्ट नाक पकड़'र धै बैंगी-बैंगी दोय
तीन चिमर्यां मारी, मै भी चिमर्यां खाय'र बारै मायगी ।

सांवःघोड़ी घाली घोट्यां बारलै चौक री तणी मायै उछाळ'र में दादी
नै घाली पुरमण री कैयो, तो दादो कह्यो कै पैलो डागळै जाय'र ईं साल रो
मोखो जयाइघामो घठोनै भाई नाळ कांता चाल्या, घठोनै दादी घाली में
पूजा री सामान मेल'र साल में बड़ो, जद मै भी लार-रो-लार परो गयो ।
अंधारी साल में चांणचकी चांणणी होयगी घर साम्हला घाळ्या में भागूणो
मूंडो करघां गोगाजो रा घोड़ा दीस्या । घोड़ा घर ससवारा री घांटघां, काल
करतां भाज, बयूं बेसी तण्योड़ी लागी घर भाला पण बां रा भाज बयूं बेसी
लांबा घर तीखा दीस्या । दादी यां रै पाणी रै कळस्यै रा छंटा दिमा, मोळी
बांधी, कूंकू री टीक्यां नगाई घर खीर सूं मूंडो जुठार'र हाथ जोड़ लिया ।

जोम-जूठ'र म्हे शेरू भाई पादू रै गेलै बहीर पड़्या । गांव रै गोरवै ई
परजापत्यां रा न्यावड़ा कनै पूगतां-पूगतां जद भाई म्हनै बूझ्यो कै पंसो कठै है
तो मै डावै हाथ सूं कमीज रो पाण्ट में पड़ी माचिस रो डाबी नै हिलाय'र
बजा दी । भाई मुठक'र कैयो कै खाली डाबी मे कांकरी पण इस्यो ई बाजै;
जरै पेटो नै खोल'र रांणी छाप घाळी पीसो बां नै आख्यां दिख दियो । अब
थावस मायां धै जमा-जमा'र पग मेलण लागी । जीवणा हाथ नै माजीसा री
बंगलो लारै छोड़'र म्हे मगरै चढ़्या तो प्रायूंणी पून रा फटकारा लागण
लागी । लारै सूं गुल्लो भाई—गुलाबजी भूतड़ो—मायो लांबा-लांबा डग
मेलतां घर घोती रै चिल्लां रा सरड़ाट उड़ाती । 'भा जगवो रै मोटियारा'—
कैय'र बिना चाल घीमो करघां वो भागै नीकळगी । भाखै गांव मे बां सरीसो
भापतो चालणियो नी ही; बगूळ्यां ईं देख ल्यो जांणै । म्हे धी रा घेत री
कामडी जिस्या डील नै सबळका ला-लाय'र पाधरो होता देखता रिया ।

अब भाई नै भी मेळो तेजी सूं खीचण लागी, घर बै म्हारा सूं, पैली दो-
तीन पांवडा, फेर आठ-दस पांवडा भागै ईं चालता रिया । कांई बेरो पून रा
फटकारा लागण सूं, कै भापतो चालण सूं म्हारी घोती चांणंधुकी खुल'र
उडण लागी । माय माय'र मदद नी करता तो पून रा धी वेग में धेकला सूं
पाछी बंधीजती भी कोनी । सोस्या देखतां कद भी म्हारी धी बगत छोटी ही ।
मै बाबंयो नी रैय जयाळं, इण धिकर सूं घरघाळा दो महीणा तांणी घणी
ईं दूध-भसाय्यो पायो पण म्हारो गांठ नी खुलणी ही, सो नी खुली । फेर भी
घोती तो म्हे म्हारै सायना-सारू छह वारै री ईज पेरती, जिए सूं लांग

टांकता-टांकता लारै ढीमही बण जावती । भाई कैवता कै तिलंगो पैरपा कर, तिलंगी; पण तिलंगो पैरो चावै चुलंगी, ढीमही तो बण्यो बिना रैवती ई कोनी ।

मगरै रो ढलाण उतरधा तो बायरो बंद होय'र समूझो होवण लागी घर तिस लागी जोर री । घाघेटाळा नाइधा मे रातीपोळो माटी रो रंग नियां पालर पाणी मरघो हो—गैरो दूध नांय'र उकाळ्योड़ी चाय जिस्वी । पाळ पर ऊभा बबळयां री छांग्योड़ी सूळासूदी डाळ्या पांणी में दूब्योड़ी, तीर पर मूंडो काढ्यां पडो हो । बां नै टाळ'र जुगत सूं पाणी पोयो । फेर पाडू रा तळाव रै उतरादा ताल मे भरीजण घाळै मेळै री सोय बांध'र उठै सूं ऊबड़ चाल्या । पालर पाणी थोड़ी देर तांणी पेट में डबळक-डबळक बोलती रियो । कोस-अेक चाल्या हुस्यां कै भापा सूं ई डोनर-हीडै रा घूमता पालणा दीसल लागी । भोणै बादळां री पूठ माथे चितराम-सो दीसतो डोलर पैनी तो करतां सूं बण्यो नाग्हो रमत्यो-सो लाग्यो पण साकडै पूगतां-पूगतां पूरो कुंमकरण होयगी । जमी सूं सुरग मे जावता, भर सुरग सूं जमीं माथे भावता पालणां मे हीडा खाता रंग-रंगीला गावा पैर्यां मोटघार, भीणा मोट घूंधटा काढ्यां लुगायां घर उधाडै मूंडै भांकती डावड्यां मुळक-मुळक'र मन री हरव-उछाव बिचरै ही ।

पागट मे पोसो, प्रब पेटोसूदो कूदण लागी । हाथ मे जाडा कपडा री लांबी कोयळी लटकायां, जिए मे कांई बेरी कितरी रेजगी मरी ही, गंजी पैरघोडा भर तैमत मारघोडा डोलर-हीडै-आळा नै भाई बूम्यो कै अेक पीसा मे म्हां दोयां नै हिडाय देई कै नो - वो बिना हां-नां करघां हाथ पसार दियो । मै पीसो काढ'र भट बीरी हथेली माथे भेल दियो, त्रिकी म्हारै देवतां-देवता लांबी कोयळी मे जाय'र हळकी-सी आवाज करती गुम होयगी । गोळ उतरघी जरै पैनी पातणी खाली होना ई म्हे दोन्यूं वो मे जा बैउघा । राना पोत्या बांध्या भर हाथा मे डांगडा निया दोय गूत्ररा रा डावडा मोरूं प्रायगा । फेर चरडक-चू' री आवाज रै सार्ग पालणी ऊचानी चाल्यो । पण मां-टै ई जायर ठैरगी । हेठानी भाक्या तो ठा पडी कै दूजोड़ी पालणी मरीन रियो है । फेर जरडाट ऊठघी भर म्हे म्थारै पूंचगा ।

निजर च्यांरुमेर घुमाई तो दिखणादें पसवाडे गांव री जूठो तळाक कटोरा ज्यूं पोळांपोळ भरघो दीस्यो, जिएरै बीचू-बीच बगरुडा माथे ऊभा अेकला, बबडा री लांबी परछाई पाणी रै काच माथे पळकै ही । समूणें पस-वाडें सोयेक पारवडा छेडै सरु ज्येय'र दूर तांणी सेता मे ऊभी कड्यांसूदी बाजरी

री गैरी हरघी रंग भरघी हो जिए में कठै-कठै जुंवार रा खेतां री हलकी धोळाम बापरघी हो । उतराद मे मेळा री जगा भर खेतां रै बिच्चै दो-ताने'क कुत्तरडा भेक मरघोडा जिनावर रै मास मार्य बिलग्या हा, भर चील-कागला घाघा बैठधा प्राप री बारी भावण री इंजार मे नान्ही-नान्ही फुदक्या लेवै हा । आधूण पसवाड ताल में मेळो भरघी हो घेर-धुमेर जिए रै बिच्चै-बिच्चै मीड्या री चिन्कतो धोळी छोलदारघां रै मूंडागै फिरता भात भतीला स्यागा, पोत्थां, पागड़घां, टोप्यां भर लूंगह्यां में बाण्या-बिरामण, जाट-गूजर, रजपूत-क्यामखानां, भांबी-रेगर न्यारा-न्यारा नी पिछाणीज'र भेक ई रंग-बिरंगी छोट रा छांटा हो रिया हा ।

आंएचको पालणी हेठानी चाल्यो तो म्हारी काळजो ऊंचो—मूंडै कानी भायो भर पालणी नीचानी चाल्यो तो काळजो हेठानी सूंडी-नैडो बोल्यो । दोयेक भाटा काट्या पछै वो ठिकाण भायो भर फेर तो वै चक्कर चाल्या भर वो मजो भायो कै कंत्रण मे नी भावै । सावण मे नीमडा रा ऊंचा डाळा में घाल्योडा नाबै दाब रा हींडा री मजो पण कमती कोनी, पण ई हींडै रो मजो न्यारी ई हो । म्हनै लाग्यो जाणें में सूंसाड करती गोफण मे मेल्योडो पाठी हूं पर जै छूटगी धा गोफण तो ? भागै में सोच नीं सकी । डील री रंभाळो घड़ी-घड़ी मे ऊमी होती रैयो भर में इष्ट देव नै मुमरती रियो ।

गांठ री पूंजो तो सतम होयगी भर मेळो हाल पूरी ई बाकी पड्यो हो । मेळा मे बडता ई डावै पसवाडै मेडताळा हलवाई री दुकान हो जठै भांत-मात री मिठायां भर लोग दबादब खा रिया हा । माई भागै होय'र भाव ब्रूमघी तो हलवाई कैयो कै पीसा रा दोय घेरा । भाई मृळक'र म्हारे कानी देख्यो । मूंडा मे भायोडा पाणी नै धूंट'र में डावै हाथ सूं पागट मे पडी माचस री डावो नै हिलाई पण वा बात्री कोनी : भूँभळ पाई म्हनै जिको डावो नै काढ'र परी बाई भर हारघोडा जुवारी सा म्हे दोयूं भागै चाल्या । मीडघां री दुकाना मे खबड दडघा, सलेट रा बडता री डाभ्यां, जोर मूं बाजवाळी सोट्यां, फूंक मुं फूनवाळा कम्बू भर दूनी भांत-मांत री चीत्रां भरी पड़ी हो पण वै मुनाणी भी नी भाई । मन मे घी हिसाब लगता रिया कै हीडां सावण मे नी खरब कर देता पीसो तो भा मे सूं कुणसो चीज मांपणी होती !

भेक नीमडै री छीयां में लोग हाथां पर पत्रका नांव खुदावै हा । नांव में जितरा भावर, बितरा ई पंसा । जार्नी 'अ' खुदावो तो भेक पीसो । बळाई पर पट्टाबूदो पड़ी, जिए मे हमेस न्यार ई बज्योडा रैवै, कुरावो तो दो घाना ।

नुबीं बीनण्यां माऊमाव खुसपुम करती, मांय नूँ उद्याव मरी घर ऊपर सूँ सरमातो, कै तो हाथ मायें दूजी लुगाई रें मूँडें सूँ बतायोडी भाप रें बींद री नांव कुरावें ही, कै ठोडी घर गासां मायें बिद्यां सगवावें ही । बेमाता जिए जगां तिल बणाती-बणाती रेंगगी, उठै गूँब घें हरी टिपवयां लाग रेंगी ही । नांव खुदाबा खातर म्हारो भी जीव मांय सूँ भाकळ-बाकळ होतो रियो । भाज म्हनै सांम्ही पोसा देय'र कोई म्हारें हाथ पर म्हारो नांव छोदणो चावें तो मैं राजी नी होऊं पण वी बगत बात ई घोर ही । सेबट लांबी सांस छोड'र म्हानें उठा सूँ भी चालणी पड़थी । मन उदास भैगो घर हाथ-पग बीता पड़गा । हकनाक आया मेळै !

मूँडागें भेक लूँठा नीमडा हेठें गोगाजी री घान ही । भेक ऊंचा चांतरा मायें पक्की साळची में मकराणा रा माटां सूँ तरासियोडी गोगाजी री घोडें-चढी मूरत ही जिए रें खैरें मायें नीं तो उदासी ही घर न याकेला री कोई निसाण । मालो ताण्यां निरभै घोडा री पूठ मायें जम्या हा । मूरत रें डावें पसवाडें खुणा मे घुंण्या मूँ घुं घुं री लीख उठ रेंगी ही घर मूँडागें बदारघोडा नारेळां री डांड्यां घर टोपाळ्यां रा टुकड़ा बिस्व'या पड़था हा । चिटक तो भगत लोग गळनी सूँ भी नी छोडी ही । कमर पाघरी करण सारू म्हे चूतरा मायें पसर'या ई हा कै भाई पाछा ऊठ'र बंठा ब्हेगा । बोल्या — गांव में प्रापणी दादी री पीर है, बीराजी रें भठै, जिकी उठै चाल'र आस्यां ।

घरें पूग्या तो बीराजी दादोजी बारें नीमडें री छियां में मांचो डाळ्यां अकरोडें ई बंठ्या हा । निजर कमती रेंगगी हूं, जिकी धोक देय'र नांव बताया घणा राजी हुया डोकरो । घोळी भोपण्या नै हिमाता म्हां कांनी देख'र बोल्या — मेळो दे-बा आया दीसो; जावो पैली मांय जाय'र दोपारी करघावो । खीर-पुडी खाय'र बारें आया जरें दादोजी सांकडें ई उभा भेक आदमी नै कह्यो— घूँ मेळा में तो जावें ई है आं नै दुकान सूँ भेकेक आनां दिराय दीज्यें । भाई म्हनै कान मे कह्यो कै दुरगा काकाजां है । म्हे दोयूँ बारी-बारी सूँ धोक दी घर वा रें सायें होयगा । मेळा मे बीराजी री पीतळ रें बरतणां री दुकान ही जठै सूँ म्हानें न्यारी-न्यारी ँनी मिली ।

अबै तो म्हारें धूधरा बंधगा । याकेलो भूल'र चकरी गण्या चारूमेर घाटा काटण लाग । पैली तो लाग्यी जाणै आलें मेळै नै खरीद लेस्यां पण मिन्ट दस-पांचेक में ई जलेबी रा घेरा, मेइता रा पेडा घर पोकर जी सूँ ऊंटों लद'र घायोडा जाम्पळ लायां पछै म्हारा गोज्यां मे भेकेक पं.सो रेंगगी । म्हे बिचार करै व कै कत कए सी जिनस लेता नितरें तो मेइ पीसरणी गोष्टी घारा घर

जम्होड़ी मेळो इयां खळबळीजगी जाणें मुवाळ माह्यां रें छातें में कोई भाटी मार दीयी व्हे । मेळा रा ताल मे बैत-बैत पांणी बैवण लागी जिए में छपळक-छपळक करता घोती रा खोजा टांक्योडा मोट्यार—भेक हाथ मे डांगडो लियां भर. दूजोडें मे जूत्यां लटकांयां, बैंग-बैंग पिरण लागी । गोडां तणी घाघरी उठायां, उजळी पीड्यां चमकती गोरड्यां छाती रा उठाव नें भाली ओढण्यां में लुकावा री बिरया-कोमीस करवी सरमां मरती सम्हाळ-सम्हाळ पग मेलें ही ।

मेळा री कोरां सूनं उतरादा, भगूणा भर दिखणादा—भांत-भांतीला गैणां पैर्योडा मिनख-लुगायां रा रेला चालगा । मेळो तेजी सूनं बिगरवा लाग्यी जर भाई भी खोजा टांक'र पगरह्यां हाथ मे ले ली भर म्हारें कानी देख'र बोल्या- तो फेर भापां भं. अब टुळां । में भी सजगी । जितरें तो गूलगरी रा सांटा बेववाळी जीवण हाथ कानी सूनं बोल्या—ले ज्यावी भेकेक पं.सो । भाई पीसो देय'र एक जाडी-सो सांठी भारी मांय सूनं वीच लियो । में भी पीसो काढण लागी जर भा कंवता कंवता कै के करसी, घणी भेक ई, डावा पग रें न.चं दाबर भरड-सैं वी रा दोय टूक कर नाह्यां भर भेक म्हारें कानी भाधी करता बोल्या—अब मोड़ी मती कर, खावतों खावतों पग उठाय'र भाज्या म्हारें गेल-गैस ।

मायें बरसता भर हेठ बैवता पांणी सूनं लडता ग्हे गांव कानी बहीर पड्या । में याक'र चूरो होयगी ही । भाघेटाळी नाडघी कांई मुस्कलां सूनं लियो, म्हारी जीव जाणें है । में तो पाळ पर पसरगी भर कैय दियो कै म्हारा सूनं तो अब भागें कोनी चालीजें । पाळ पर पैली सूनं पूगोडा भोर लोणां रें सागें म्हारें ई गांव री राज् हेरडघी भर छींतर दरजी भी ऊभी ही । छींतर म्हारी पडोसी ही । बोल्या—दाव-दाव, म्हारें खांदा पर बैठज्या । म्हनै वी खांदा पर बिठा लियो भर मस्ती सूनं चान पडघी । राज् हेरडघी चालतो-चालतो गाणी सह कर दियो :

मेळा थारी मजो घणी भायो....

बरस्यो घारांघार ताल मे पाणी नी मायो ।

सैरघो भीज्यो टपक-टपक रंग गालां पर छायो

मेळा थारी....

फेर मेळें सूनं पारीदयोडा बंसरी रा जोडा सूनं ज्यांरें रंग-रंगीला फुंदा लटकै हा, भूम-भूम'र इणीज गाणा री घुन काढण लागी । मगरी चडघा जरें डावें वाजू बिरखा मे भीज'र काळो पडघोड़ी माजोसा री बंगली भर मूंडागें पोडा

आंतरै गांव रा घेर-घुमेर रूखड़ा दीसए लागे । छीतर म्हुनै तांदा सूं नीचे उतारघी बोल्यो—अब चाल परो मोट्यार, श्री रियो गांव मूंढागै ई । खैर, जियां-तियां घरै पूग्या । पग धाक'र इस्या होयगा हा जांएँ म्हाएँ मेल दिया व्हे । आला गाभा लोल'र सूका पैरघा । केलही री गरम-गरम रोट्यां घर बलबलती दाळ घणी सुवाद लागो । ब्याळू कर'र मांयला तिबारा में प्रकगेई माचा मायें म्हाड-टेड करए खातर थोडोक डोडो होयो ई हो कै म्हाल चिपणी ।

लारली रात रा सपनी आयो । मालर उठायोड़ा हृदमानजी दीस्या घर में पाछी मेळा मे पूंचयो । गोज्या सूं डोड मानो काढ'र दियो घर हाथ मायें नांव खुदायो । कांई सोवणा म्हावर हा ! इस्कून रा साथी सायनां नै दिवातो फिर्यो । फेर कांई देखूं कै भेक गोरी डावड़ी रें मूंढागै राऊ हेरडघी भूम-भूम'र फूँदाळी बंसरी बजाती घर गावती जा रियो है—मेळा थारो मजो घणी आयो ५५५ । में राऊ नै ठैरबा खातर हेनो पाडघो पए वो कदाचु मुण्यो नीं घर गावती रियो । जितरै तो सागही सूं गोगाजी आयगा—काळा भुजंग घोड़ा मायें दसवार घर घोळा बुराक गाभा पैरघा । आंख्यां रा मोटा-मोटा डोळा घर ऊंची सूंतवां नाक । पळपळाट करता चैरा पर लांबो त्रिच्योड़ी मूंछघां । कामस्थी कर्पोडी दाढी पर बध्योडो घोळी सपेत जाड्यो । मायें उजळी पाग घर कार्य चमडा री रखी । डावें हाथ मे लगाम घर जीवणें में चमाचम करती माली । आंख्यां सूं प्राग री चिएगारी काढता वैं जीवणें हाथ मे भाला नै तोल्यो । जितरै तो म्हाारी नीद टूटगी । डील पसीना सूं पाणी-पाणी व्हे रियो हो ।

पाछी सोयगो । नीरेक दिन चहुपां ऊठ्यो घर हाथ मे लोटो लेय'र तळाव कांती जावण री सोची । बारलें चौक में आयो तो कांई देखूं कै हलकी बूँदा-बांदी मे भीजता गोगाजी रा घोड़ा पड्या है । भेक घोड़े री टांग टूट जावण सूं घोडी सवार समेत मूंढो टेक'र पाणी पी रियो है घर दूजोडें घोड़े सूं मळगो होयर सवार दूटयोड़ा भाला पर झुन्यो है । म्हाारी छोटकी बेंन कदाचु काल सिभ्या खेलती-खेलती आं नै अठई छोड़गी हो ।

ढूँढाड़ महातम

श्री गोपाल नारायण बोहरा

म्हाका देखबा में ब्यार भेक पोथी भाई । ईको सिरनामो छै 'पोथी ढूँढार महातम की ।' पोथी में भविष्य पुराण में सून मत्स्य देश को महातम लिख्यो छै । मत्स्य देश मे ही ढूँढाड़ सामल छै । ईं मे ईं देश का तीरथाँ, नंथाँ और परवताँ को बरगुन और उत्पत्ति लिखो छै । पोथी का भाषा संस्कृत छै जोको सार पढवाळा का मनबैलाव और जाएकारी कं ताई भई उताराँ छी ।

इन्द्र बोल्थो 'हे बिरमा जो आप मनै मत्स्य देश को महातम तो बतायो पण म्हारी संका या छै कं ईं मे कस्या-कस्या बड़ा तीरथ छै, रिस्या मुन्याँ का भासरम छै और वं कय्याँ उत्पन्न हुया ।' बिरमा जो कही— 'हे इन्द्र मत्स्य देश में विराट राजा को पवित्र नगर छै ईं कं नजीक ही बाए गंगा प्रकट हुई । या बाए गंगा पाताळ में सून निकली छै, विराट नगर सून दक्खण दिशा में पांच जोजन दूर छै । भंडे सब देवता जीकी पूजा करै असो जाम्बवती देवी विराजमान छै या देवी जठे बिराजै ऊं पर्वत की परकम्मा करबा सून महान पुन्य होय । ईं पर्वत का पश्चिम मे दो जोजन की दूरी पर अम्बिकेश्वर भगवान की भंभावतीपुरी छै जठे साक्षात अम्बिका देवी बिराजै छै । भंभावती सून दक्षिण की तरफ चम्पावतीपुरी छै जठे चम्पा कुंड और चम्पकेश्वर महादेव को अस्थान छै । या पुरी चम्पा नाम की राजकुमारी बसायी छी । भंडे ही गोदावरी नाम की बावडी सरस्वती को अस्थान और ब्रह्मगिरा कुंड तथा तिलोद की बावडी छै । ईं तरै ईं देश में अनेक तीर्थ छै । पत्र वन नाम का सुहावना बन में दर्भगिरा मुनि तपस्या करी और सिद्धि पाई । नजीक ही शीतला देवी छै जोका दरसन कर रोगी निरोगा होय । ईंका उत्तर में विजय और दुर्जय नाम का पर्वत छै ।'

ब्रह्मा जो फेर बोल्था— 'हे इन्द्र अब मैं याँ सब की उत्पत्ति बताऊँ छूँ सो सावधान होकर सुणो । जद दुर्बुद्धि दुर्योगन गायी को हरण कर्यो तो विराट राजा को कबर बाँ नं छुड़ावा गयो । ऊं बसत भरजुन नादर रो रूप धर कर विराट के नौकरी करै छी, सो सो भी उत्तर राजकबर को रथ हाँवबा नै

बैठपी । कीरवी री सेना देगकर उत्तर तो घबरा गयो और पाछो भागबा लाग्यो । जद भरजुन ऊ नै जबरदस्ती घाम्यो । ऊ मात भरजुन पेड़ पर टाँकयोड़ा घ पका घनुप बाण नै सेबा गयो तो धाकानवाणी हुई कँ 'हे भरजुन बाण चला कर पाताळ मे सूं भोगवती गंगा तिकाळ और ऊँ में प्रस्नान कर और घाचमन कर जद भारी नादरणो दूर होसो और तूं गाँडीय घनावा लापक होसो ।' या सुण कर भरजुन घापका घनुप सै बाण छोटघो तो पाताळ मे सूं भोगवती गंगा परगट हुई और वो ऊँ में प्रस्नान कर गाँडीय घनुप सीनो घर बिराट राजा की फते कराई ।'

ब्रह्मा जो फेर कही घण जाम्बवती की बात सुणो, पुराणा जमाना में भेक देव द्विज नाम को मुनि छो । वो निराहार रह कर घोर तपस्या करी । कई बरसां तक तो वो ठूठ की नाई ही राहो रह्यो । हवा के सिवाय और कुछ खावा-पीवा को काम नहीं । ई सूं देवता नै भोत भिन्ता हुई और यह सब म्हारे कन्ने घाया जद मैं लोक माता चंडिका देवी की प्रार्थना करी । माता प्रगट होर मनै बरदान मांगवा बेई कही । मैं सारा समाचार देवी नै भरज कर्या और देवता को सकट टाळवा की प्रार्थना करी । देवी राजी होर मनै बर दियो । फेर वा देवी गुवाळ्या की लड़की को भेस बणार उठे ही गाय चरावा लागी । ऊँका हाथ में जामूण्या छी । या ब्राह्मण कन्ने गई । वो घाँह्या भीचर घ्यान लगाया बैठयो छी । देवी कही भरै ब्राह्मण तूं बिना बात ही क्यों काया नै कळेश दे छँ ? बड़ा लोग कही छै भक काया रासर घरम करणो चाय्ये । तूं नै खावे, नै पीवे और सूखर काँटो हुया जाय छै । बड़ा लोग ईनै घरम नहीं मानै । लै ये जामूण्या लै और बेखटक मानै ला ।

पुराणा जमाना सूं रिसी मुनी पळ खाता घाया छै । से यातां सुणर ब्राह्मण का घ्यान में बिधन पड्यो । वो घाँह्या खोली तो सामनै भेक गुवाळी नै ऊभी देखी ज्यो हंस रही छी और गाय बछड़ा नै चरा रही छी । वो मुनी तपस्या का जोर सूं जाए गयो भक या तो साक्षात चंडिका देवी छै । रोस की भारी ऊँकी घाँह्या तात हो गई घर वो बोत्यो 'हे देवी मैं कोई अपराध तो कर्यो कोनै, फेर भी तू जामूण्या देर म्हारी तप भंग करबो चायो । जा, तू गाय बछड़ा समेत भाटा की होजा, घारो नाम जामवती हूँ तो, यो ही म्हारो वचन छै ।' देवी हंसबा लागी और बोली हे ब्राह्मण तूं भनै सराप दियो ज्यो मंजूर छै पण मैं भी सराप द्यूँ छँ भक तू जम्बू पर्वत हो जा, तू रा ही खोळा मे बिराजूली । घया ब्राह्मण तो पर्वत और समेत जाम्बवती की मूरत बण गई ।

अब भ्रंवावती की उत्पत्ति सुणो— सतजुग में चन्द्रचूड़ नाम को राजा छो ? ऊँको राज समन्दरां ताई फैल्यो हुयो छो शृंगारकपुर को राजा तारा-पिप ईको बैरी छो । सो वो ऊँका राज नै जीतबा नै बर-बर मे हमलो करतो । ईं सूँ ऊँ को नगर खंड-बंड हो गयो और खजानो भी रीतो ह्वै गयो । या देसर वो राजा आपकी राजधानी सूँ भाग निकळ्यो और मत्स्य देश का डुंगरी का बीच में बौहूड जंगळों में तपस्या करवा लाग्यो । वो महा-देव जी का पाँच माँकी को भतर जपतो (नमः शिवाय) । जिद भीत समै हो गयो तो शंकर भगवान परगट हुया । राजा मस्तुति करी । शंकर भगवान बरदान दियो, हे राजा थारै ताई छई ही अक सुन्दर नगरी बस जावैली जीं में शत्रु घुस नही सकैला । न थारी कदै हार होली । मैं भी म्हारा गणां समेत अंडै ही निवास करूँला । साथ मे अम्बिका देवी भी रहैली । म्हे याँ दक्षिण और उत्तर मे खड़ा नील और मेघ नाम का पर्वतां मे बिराजैला । या कह कर शिवजी उठै ही लिंग रूप सूँ खाड़ा में बिराज गया । राजा भी आपको नगर ऊँडै ही बसायो और ऊँ नगरी को नाम अम्बापुरी राख्यो ।

अब आगे चम्पावती नगरी की उत्पत्ति को हाल सुणो । आगला जमाना मैं काम्पिल नाम को राजा छो । वो बड़ो बली, दयालु और विष्णु भक्त हुयो । अक बार शांडिल्य मुनि ऊँकै घरां आया । राजा सब तरै सूँ वाँको आदर सत्कार कर्यो और फेर वाँका आबा को कारण पूछ्यो और अरज करी कै हे रिपी मैं आपको उपदेश सुणबो चावूँ छूँ । रिपी बोल्या हे राजा ये विष्णु भक्त छो । याँ जस्या भगवान का भगतां सूँ कुण मिलबो कोनै चावै । विष्णु भगतां का दरसण सूँ सभी पवितर हो जाय छै । अब म्हारा आबा को कारण सुणो— मैं थानै भगती का उपदेश देबा नै ही आयो छूँ । ईनै सुण कर ये जयाँ उचित समझो सो करो । ईं सूँ सब तरह का पानन्द ह्वैला और थाँको राज अविचल ह्वै जायलो । या कह कर रिपी अन्तरध्यान हो गया । अक बार तो राजा भीत दुकी हुयो पण फेर सावचेत होर विष्णु भगवान की स्तुति करी । जद मधुसूदन परगट होर बोल्या— हे राजा थारी स्तुति सूँ मैं प्रसन्न हुयो, अब तू वर मांग । राजा कहीं हे प्रभो आप मबका भालिक छो और सबका मन की जाएलो छो । भगवान फरमाई— हे महीपाल थारा मन में ज्यो काँटो छै ऊँनै मैं जाणूँ छूँ और जल्दी हो ऊँनै दूर करूँला । तीन्यूँ काळों की आगली-पाछली जाणबाळा मुनि मनै साँची-साँची बात बतायी छै । पुत्र तो कोनै पण पुत्री सूँ थारा कुळ को उद्धार ह्वैलो । बेटाँ सँ भी ज्यो काम न हो सकै सो थारी बेटी करैली । या कह कर भगवान अन्तरध्यान ह्वै गया । राजा का मन को सारो संताप मिटछो ।

समै पार राजा के रूपवती राणी सूनू भेक रूपाली कन्या जनमी । ऊके जनमती ही सारा घर में उजाळो हूँ गयो । राजा का मन में बड़ो आनन्द हुयो । चम्पा का सा रंग की ऊँ रूपवती कन्या नै देखर राजा ऊँको नांव चम्पा ही काढ दियो । अब वा कन्या दिन-दिन बड़ी होबा लागी । पण जद वा ब्याव लायक हुई तो राजा काळ बस हुयो और ऊँ की मा भी राजा की साथ ही मुरग मे चली गयो । राजा का देश पर बैरी कब्जो कर लियो । जद राजकंवारी की घाय ऊँने लेर मत्स्य देश में आ गयो । ऊँने जद वा दस बरस की हुई तो घाय भी भगवान नै प्यारी हूँ गई । अब वा राजकंवारी विनाप करबा लागी । हे मावान म्हारा ही होण माग सूनू ये सब काळ बस हो गया । अब मैं दुखारी कौड़े जाऊँ और काई करू ।

सब बातों को कारण भाग ही छे ज्यो मैं अब मो जीऊँ छूँ और डोलूँ फिरूँ छूँ । मनै धिरकार छे ज्यो मेरेसूनू पहली ही म्हारा मा-चाप मर गया और अब बे विचारा बिना पाणी पियाँ सब नरक में चल्या जासी । विधाता मनै काई काम नै पैदा करी छे । अब मैं कुण की सरण मे जाऊँ । वा प्रेयाँ विनाप कर रही छी जद हूँ आकामवाणी हुई—कन्या तू भगवान की उपासना कर बे ही धारा मन चाया पूरा करसी । वा बोरी मैं बाळक छूँ और स्त्री होबा के कारण अज्ञानी छूँ । मैं तपस्या करबो काई जाणूँ मैं तो या भी कोनै जाणूँ के कस्या देवता को ध्यान करूँ और काई तरह से तपस्या करूँ । जद आकास-वाणी फेर हुई । धारा हिरदा मे भगवान ही जान उत्पन्न करैना और जैयाँ भगवान की आग्या हो ऊयाँ ही कर । प्राणी तो अग्रानी ही हो छे । भगवान की प्रेरणा सूनू ही वो स्वर्ग मे या नरक मे जाबा का काम करे छे ।

ऊँ राजकंवारी नै सामने ही बड़ो शोभायमान बन दिमाई पड़घो, जो मे तरह-तरह का पंछी बोल रह्या छ्या । कदम, घाम, दाढ़यूँ, आँ का पेड़ झूम रह्या छ्या । उत्तर दिशा में भेक बावड़ी छी जो मे कमल जिल रह्या छ्या । ऊँ बावड़ी मे संपाड़ो कर वा राजकुमारी आपका माता-पिता और सभी लागती-बिनागती का नै जलाँजली दो । फेर बावड़ी मे ऊठर वा चाँक बन में गई और ऊँने घाम और पत्ता भेकठा कर आपका हाथाँ सूनू परणकुटी बणायो और ऊ मे ही बैठ कर सात अक्षरों का मन्तर को जप करबा लागी (नमो नारायणाय) । कदै पेड़ा का पत्ता पार रह जाती, कदै कोरी हवा, कदै डाम को पाणी पी लेती, कदै दिन निराहार ही निकळ जातो । ऊँकी तपस्या मे विघन भी मोत घाया । भेक बार बावड़ी और तलावाँ की पाणी सूख्यो । जद वा दूर दूसरी बावड़ी मे गई । या भी सूनी-सट्ट मिली । पण वा आपको धीरज नही छोड़घो और ऊँने ही एढो होर गंगा, गोंदावरी और सरस्वती को आवाहन कर्यो और

कही - ज्यो मैं सत्रुजय राजा की बेटी छूँ और साँचा मन सँ तपस्या करी छै तो सब पापाँ का नाश करवाली नयाँ को पाणी बाँवड़्याँ में आ जावँ । या कहताँ ही बड़ा जोर सूँ पाणी बाँवड़्याँ में डायो और राजकुंवरी असनान, ध्यान और तरपण करके आपकी कुटी में पाछी आयी । यो अचरज देखर देवताँ फूल बरसाया और ऊँकी भोत बढ़ाई करी । सारा ही नाडा, खाडा और तळाव पाछा मर गया । चंपा फेर तप करवा लागी । ऊँकी घोर तपस्या नै देखर देवता चिन्ता करवा लाग्या और तक्षक नाम नै बुलार कही—ये सब साँपाँ नै लेर जावो और चंपा का तप में विघन पैदा करो । ऊँनै डरपावो । या सुणर महा जहरीलो सर्पराज सभी साँपाँ नै लेर चंपा की कुटी पर गयो । पण बा साँपाँ की फूँकार सूँ डरपी नही और श्री नारायण का ध्यान में बैठी रही । भगवान विष्णु या देवर गरुड़ नै आग्या दीनी । गरुड़ जी जावो—तक्षक नाम चंपा की तपस्या में विघन करै छै । म्हारा भगताँ नै ज्यो दुख दे छै बाँको ये नाश करो । आहे वो दुखदायी गणेश्वर ही क्यो न हो । भगवान की आग्या सँ गरुड़ जी गया और कोस भर का फासला सँ देवताँ ही सारा साँप गाग छूट्या । गरुड़ जी भी साँपाँ नै मागता देखर अक सीस्यूँ का पेड़ पर थोड़ी देर बिसराम कर्यो और फेर वापस आ गया । जी जगाँ सीस्यूँ का पेड़ पर गरुड़ जी बिसराम कर्यो छो वो आज भी गरुड़ावास बाजै छै । सारा विघन दूर होबा पर चंपा फेर आपकी तपस्या में लीन होगी । फेर अक बर बड़ा-बड़ा बाळाँ हाळी अक मोटी स्त्री आयी और बोली तू राजा का बेटी छै, ई सुन्दर शरीर नै क्यूँ कळेस दे छै । ठंड घर पाणी का दिनाँ में ई बन में कयाँ रहली । कोई राजकुँवर, गंधर्व या देवता सूँ ब्याह करलै । ई काया नै कळेस देबा मूँ कोई फायदो नहीं । या कह कर बा स्त्री अक खाडा में बिलायमान हो गई । फेर की समे बाद दुर्जय और विजय ऊँका तप में विघन करवा नै उत्तर सूँ आया । पण वै चंपा का तेज सूँ पवंत हो गया । बाँकी चोटी पर सीतला देवी बास करै छै । याँ पवंताँ की परकम्पा घर जातरा करवा हाळाँ का सब रोग दूर न्है जाय छै ।

भोत बरसाँ तक तपस्या कर्याँ पछै सारा संसार की आतमा स्वयं भगवान, ऊँ राजकुंवारी नै दरसण दीना । बा मन में जी सरूप को ध्यान करै छी ऊँनै साक्षात सामनै देखर भोत खुशी हुई और आनन्द को मार्यो बोल्यो भी नही गयो । भगवान कही —वर माँग, थारो बाप भी म्हारो भगत छो । थारी तपस्या सूँ प्रसन्न हुयो । जद चंपा कही—हे भगवान मैं तो आपका दरसणाँ सूँ ऊपर कोई भी बात कोनै जानूँ । भगवान बोल्या—या ठीक छै पण फेर भी कोई तो वर माँग । तनै भंडे हो बृहदश्व नाम को श्रेष्ठ पति मिलेलो

घोर घंटे ही भेक थ्रेण्ड पुरी बग जावती । ऊँ में मात-भात की घटारूपा, महल-माळिरा, बाग-बगीचा घोर सड़को हो जायती । चंपापुरी का नाम सूँ ही या पुरी प्रसिद्ध ठहली घोर घारा नाँव सूँ ही चंपा कुँड, सरोवर बाजँतो । बावडी को नाँव तिलोदकी होलो । जहँ माघ सुद 5 नै तिल घोर पाणी की जलजली देवा सूँ गया मे पिंड देवा बरोबर पळ होलो । या कहर भगवान तो मन्तरध्यान हो गया घोर चंपा ऊँ सुन्दर नगरा नै देसर भवरज में भर गई । फेर वा महल का ऊँर ही ऊँर का खंड में जार रहवा सागी । कोई समै बृहदश्व नाम की इक्ष्वाकु कुली राजकुमार शिफार सेसतो-खेलतो उँहँ घायो घोर पूछी—मा सुन्दर पुरी कुण की छै । सब जणाँ कही मा चंपा राजकंवरो की चंपापुरी छै । चंपा दूर सूँ ही राजकवार नै देसर महल में बुनायो घोर सुवसाँता पूछी । ऊँकी कुळ घोर देश तथा भावा को कारण पूछी । जद बाह्याण लोग ऊँनै सारी बातें बतायी । ऊँनै भी भगवान की बात माद घायी । वा कमली की माळा राजकुमार नै पहरायी घोर ऊँनै घायको भरतार मान्यो । भोत समै तक आनन्द सूँ भोगविनास करता हुया वँ सो पुतराँ का माता-पिता हुया घोर फेर भगवान में लीन हो गया ।

ब्रह्माजी मगाही कही हे इन्द्र भव भेक घोर पवित्र तीर्थ को बरएन कहूँ छूँ जहँ दैत्याँ का डर का मारूया देवता जार सरण ली छी, वो ब्रह्मगिरा नाम की कुँड छै । हे इन्द्र यानै याद होली ऊँ कुँड मे ही मसनान करके ये बढी पद पायो छी । ऊँही अस्थान पर ब्रह्मगिरा दैत्याँ नै हराया छी । कुँड का पश्चिम भाग मे सतदंड नामक अस्थान छै ऊँहँ साक्षात नारायण देव विराजमान छै । ऊँका उत्तर पश्चिम मे दर्म नाम की ग्राम छै जहँ दर्मवती नदी घोर पत्र बन छै । कळजुग का पापाँ को नाश करवा हाळा महादेवजी को अस्थान भी ऊँहँ ही मौजूद छै ज्याँकी स्थापना दर्मशिरा-नाथ का मुनी करी । वँ सरस्वती नदी को प्रावाहन करके कही तू भंडै पिरहोजा । फेर वँ मुनी कठोर तपस्या करी । महादेव जी प्रसन्न हुया घोर कही—वर मांग जद मुनी प्ररज करी—हे पंचानन भंडै सरस्वती पिर रहै घोर भाव भी भंडै ही निवास करो । जद शिवजी कही घायी होली या सरस्वती कळजुग में भी लोप नही होसी । ईँ की नाम दर्मवती होली । बैसाख का महना मे भंडै मसनान दान करवा सूँ पुन्य प्राप्त होली ।

हे इन्द्र यो मत्स्य देश की महातम में यानै सुणायो । ईँका सुणवा सूँ बहुत आनन्द घोर सुख की प्राप्ती होसी ।

ईँ महातम में बूँडाड़ राज में सामल केई ठौर-ठीड़ा का नाव आया-छै,

जियो बिराट नगर (बैराठ), बाण गंगा, जाम्बवती (जमवायमाता), धाम्बावती (धाम्बेर), भम्बिकेश्वर महादेव (भौडा महादेव), चम्पावती (चाटसू), शीतला (शील माता की झूंगरी), गरुडावास (गरुडवासी गांव), दर्भशिरा ग्राम (डाबच गांव) आदि । पण ई में दूँडाड़ नाँव को कोई हवालो कोन आयो । ईमूँ मालम होवै छै कै यो नाँव पाछै पड़्यो छै ।

म्हारी जापान-यात्रा

लक्ष्मीकुमारी चूडावत

(1)

जापान रो असली नाम जापान नी है । उणरो असली नाम निप्पोन है । जापानी आपरा देश नै निप्पोन कैवे । परदेसियां रा अशुद्ध उच्चारण सँ निप्पोन जापान बण गयो ।

जापान देश चार टापुवां सँ बणघोड़ो है । आंमे होन्शू टापू सबसँ मोटो है । टोकियो, ओसाका, क्योटा, हिरोशिमा वगैरा जापान रा खास-यास शहर इणहीज टापू में बसियोडा है । बीकिनो रा तीन टापू इससँ चिपियोडा है । उत्तराद मे होकायडो टापू है, दिक्खणद में सिकोकू भर क्यूसू । इणां रँ मलावा जापान रँ समदर में छोटा-छोटा हजारूँ टापू बिबेरियोडा बसिया है ।

टोकियो रँ हेनेडा हवाई टेसण पर उतरतां ई घड़ी साम्ही आकी । कळ-कसै रँ ओर बठै रँ टैम मे तीन घटां रो फरक हो । आ बात कँवणी पढ़ैता कँ अठै रा कस्टमवाळा भला आदमी हा । कांई आतां, कांई जातां सामान रँ हाथ ई नी अड़ायो, कांई पुछताछ ई नी करी । पासपोर्ट देख भटपट छाप लगा, सील दे दी ।

म्हानै प्रिंस होटल में उतारिया । ओ तो में टोकियो में पूगतां ई देख लियो कँ अठै नकसां रो जोर है । म्हारे कमरे में नकसो टांगियोड़ो हो । कार्फैस रो ओर सँ म्हानै कागजात दिया हा उणा मे ई नकसो नखी हो । गैलें मे जिए कियो नै ई में गैलो पूछियो उण भट कागद पेसिल काढ नकसो मांड म्हनै गैलो बतायो । देखी डाइवर नै कठैई जाबा नै कहियो तो भट देसी नकसो जेब सँ काड म्हारें मूंडाग राखियो जिए जागी जावणो हुवँ, नकसँ में बता देयो । बठै नकसँ सिवाय कोई बात ही नी । रेलों मे सफर करबावाळां तारैई नकसा भीजूद ।

(2)

उण ईज दिन सांफ़ री गाड़ी सँ म्हानै हिरोशिमा जावणो हो । टोकियो

टेसए भायें पूगिया । टेसए री इमारत में बड़िया पए बठै नीं तो प्लैटफारम ई दीरुयो, नीं गाड़ी दीखी, नीं इंजन नजर आयो । अचंभे में पड़गी—अ्याह पासो दुकानां ई दुकानां ।

जापान कौंसल बाळा म्हानें कयो हो के आपन हिरशिमा तक पुगाबा नै म्हारी आदमी साथ दे देवांला । वो आपनै सांभ नै टेसए पर भिल जावैला । गाड़ी छूटए री बेळा नजीक आयगी । म्हे उडीकता उकतायीजग्या । टेसए पर भीड़ पणी ही । नीं तो गाइड म्हानें भोळखै नीं म्हे गाइड नै भोळखा । धैन बकत पर गाइड हांरतो थको आयो । आंवन ई मन देख बोलियो—भलो हुवो धारो इए साड़ी रो जो इए नै देख मैं धानै भोळलिया ।

गाइड म्हानें लेम ऊपर चढ़ियो । हूं सोचए लागी—आपानें तो गाड़ी चढ़णो है । ओ ऊपर कठै ले जावै है ? ऊपर आवितां ई देखियो के प्लैटफारम पर आयग्या हां । गाड़ी मूंडाय ऊमो हो । समझ में नही आयी के ऊपर चढ़िया गाड़ी किए तर आयी । नीचें भांकी । बाजार, सडक, दुकानां नीचै ही । टोकियो में आबादी पणी होवासू रेलों दुकानां री छातां पर चालै । टोकियो शहर में रेलों रो जाळ सो गुंधियोडो है—आगें-पाछें, डावें-जीमणें, ऊंचें-नीचें घड़घड़ करती रेलों चालती रवै ।

जापानियां नै आपरी रेलों री टाइम री पाबदी रो पणो आंजस है । बठै रेलों लेट नीं हुवै, कदेई हुवै तो कुछ सेकंडां सारू ईज । म्हारी गाड़ी हिरशिमा आडी भागी जावै ही । रेल री पट्टी रै दोनां आडी नै छेतां में धर जगळ तक में बिज्रळो रा तारां रा खंभा रुपियोड़ा बतावै हा के अठे उद्योग री कित्तो बिस्तार है । धरां मायें टेलीविजन रा रेडियलां रा खंभा साम्हो आंगळी दिनाता जापानी सज्जन थो फुकुसिमा बोलिया—मैं रेडियलां रा थोक देखनै आप अन्दाजो लगा लिरावो के जापान में कितरा टेलीविजन है ।

सैकड़ां कोसां री मुसाफरी मे देखियो के जापान में अेक आंगळ परती बेकार कोनी पड़ी । मान लो कठैई जमीन खेती रै लायक कोनी, पाणी रो खाडो ई है, तो उएनै ई काम में ले राखियो है । धीं पाडे में कमल ई बाप दिया । कमल री डांडी, बीज, पत्ता फूल, पाखड़ियां रो साग बणावै ।

(3)

ता. 31 जुलाई, 1959 नै सुबह 10 बजियां हिरशिमा में विश्व सम्मेलन सुरू हुयो । प्रतिनिधि टैम सूं पहला ही भेळा हुवए लागो ।

हूं बारें बरामदे में ऊभी ही । अघालुअक अेक सांडी बाड रा सरदार

टोप उतार माथो भुकाय मुजरो करियो । बोलिया, घाप जरूर हिन्दुस्तान सँ
घाया हो, मैं मास्ट्रेलियन हूँ । पांच बरस दक्खण-भारत में रियोड़ो हूँ । घाप
किसी प्रदेश सँ घाया हो ।

मैं कैयो— मैं राजस्थान री हूँ ?

‘माछो ! माछो ! उदपुर तक मैं ई ग्योड़ो हूँ, म्हारो नाम भेंद्यूज ह्यूज
है । मन मराठी बोलबा री घणी मन में भाय रयी है । घाप रै सापवाळां में
कोई मराठी बोलणियो है कै नौ ?

दूजे दिन में उणां नै म्हारे प्रतिनिधि मंडळ रा नेता श्री हिरे सँ
मिलाया । ह्यूज वासू मराठी मे घड़ाघड़ बात करबा लाग़ा । मराठी रै ‘ळ’
भावरो उच्चारण बै घणो शुद्ध करता । मन उणां रै ‘ळ’ रै उच्चारण पर
खुशी हुयी और भचम्भो ई भायो । आपणै अठ रा हिन्दी बोलणियां भायां
सँ खासकर उत्तर प्रदेश भर बिहार बाळां सँ ‘ळ’ बोलणी नौ भावै । ‘ळ’ री
प्रयोग राजस्थानी, पंजाबी, गुजराती भर मराठी में तो खूब हुवै ।

इए ‘ळ’ नै लैय नै मनै अेक जूनी बात याद भायणी । बीकानेर राज में
महाराज गंगासिंह जी रै बगत मे महाजन रा राजा हरीसिंह जी ठावा सरदार
हा । बीकानेर राज मे उणां दिनां अेक हुकम निकाळियो कै राज नौकरियां में
बीकानेर रा लोगां नै ई राखिया जावै । फलाणै बीकानेरी है कै नौ इणरो
इम्तिहान घणै विरियां महाजन-राजा साहब लिया करता । इए इम्तिहान
री जरूरत सँ भायो कै घणा जणा नकली सर्टीफिकेट ले बीकानेरी बण
जावता । उम्मेदवार री जांच करबा बै राजा साहब उणनै पूछता—बोलो
खळळ-खळळ । बाहरवाळां सँ शुद्ध उच्चारण नौ करणी भावतो और बै
बोलता खलल-खलल । उणई बगत राजाजी आपरो फैसलो सुणा देता—घारे
बीकानेरी होवरण में खलल है भाया ।

श्री ह्यूज महाराष्ट्र री भायनी वाता री घणी जाणकारी राखै । बठै री
जनजातियां रै बारे मे उणां रो घणो ज्ञान है । जद बै महाराष्ट्र री जन-
जातियां रै जीवण भर संस्कृति री बातां सुणावा लाग्या तो मन में मनै घणी
सरम भाई । मैं तो बां जनजातियां रो नाम ई नौ मुणियो ।

(4)

कान्फरेंस हाल रै बारे ऊभा प्रतिनिधि लोग गप्पा लगाय रया हा । गर्मी
तेज पड़ री ही । जापान में छातां रा पंखा तो हुवै ई नौ । सब जणा हाथा में
जापानी कागज रा पंखा लोधां हिलाय रया हा । सूडान रा प्रतिनिधि इजिप्ट

री लुगाई प्रतिनिधि मिस करम नै बतलायी—गर्मी तो घटै ई घापां जिसी पढ़ै हे परण जापानी घापां जिसा काळा क्यूं कोयनो ? पश्चिमी जर्मनी रो प्रतिनिधि हाफू-हाफू करतो फूंकं देतो फिर रयो हो—'गर गयो गरमी घागे, मै तो काले परो जावूँसा ।'

यूरोप री भेक जवान लुगाई प्रतिनिधि घापरें बटवै सूं काडै यूडीकोलन री सोसी नै छांटि माथे पै । हूं कर्न बँडो, म्हारै ई ललाट रै उण यूडीकोलन लगायो । मै कहियो- -मनै इसी ज्यादा गरमां कोनी लागै । हूं राजस्थान री घर बाई तपतै बोकानेर री रैबणवाळी, जठै इणसूं बेसी गरमी पढ़ै ।

जिए भयन में कांफरेंस हुई उणरै भेळै ईज शान्ति-स्मारक म्यूजियम हो । घणखरा म्हे वो म्यूजियम देखण लाग गया । इण म्यूजियम में हिरोशिमा में जी भैटम बम सूं तबाही हुई हो उणरी तसबीरां, नकसा घर भांकड़ा जमाय राखिया है । पूरो विवरण उण प्रळं रो दे राखियो है । उण महानाश रा राखमी कर्मा नै देख बजर री छातीवाळां रै ई भांसू घापां विना नीं रैवै । भीत पै भेक मोटी सारी तसबीर लाग री । उणमे घूँवै रो मगरो रो मगरो लपकतो लगे ऊंचो चढ़ रयो है । भैटम बम रै फूटता ई हिरोशिमा नै घापरी काळो छाया में ढांकतो ओ फोटू चार हजार मीटर दूरां सूं खंचियो हो । 1945 री छै अगस्त सुबह भैन घाठ बजर 15 मिनट पै भेक अमेरिका रै विमाण बम फैंकियो । वो सत्यानासो विमाण बम फैंकतां ई मटादूट पाछै पगां मागियो । वो इसो तेज मागियो कं बम फूटै-फूटै जी रै पैलां 16 किलो-मीटर भागनै दूर निकळ गयो ।

बम जमीन सूं 570 मीटर ऊंचो आकाश में फूटियो । घरती पर पढ़ैर फूटबा सूं इतरो नास नी हो सकै क्यूं कं बम में इतरो ताकत ही कं जमीन में घंस जावतो । जां मिनवां बम नै आकाश मे फूटतो देखियो वां बतायो कं बम फूटतां ई इसो लागियो जाएं परचंड भूरज घरती पै उतर रयो है । बम फूटियो जिए वेळा उणसूं गरमी निकळी, वा दो लाख सेंटीग्रेड हीं । सौ सेंटी-ग्रेड गरमी में पाणी उकळबां लाग जावै । वा गरमी हीं दो लाख । भूंगड़ा तिड़कै ज्यूं मिनख तिड़क गया । वो घूँवै रो बादलो, जिएनै आणविक वादळ कैवै, भड़ताळीस सेकंड में तीन हजार मीटर ऊंचो चढियो । साढ़ी घाठ मिनट में तो नौ हजार मीटर ऊपर चढ गयो । पंद्रह मिनट पछै इण वादळ मे सूं बरखा होण सागी । दो घंटा ताई बराबर कादो बरसतो रयो । रेडियो सक्रियता रा जो कण घूँवै रै सागै ऊपर परा गया हा उणां नै बरखा पाछा नीचै ले भाई ।

बम फूटबा रें 20 मिनट पछें नीचें जमीन पे लाय लागली । लकड़ी रा भर सांसड़ा रा जंगल भभक-भभक बलबा लाग गया । छोटा-मोटा सब पर भसम हो गया । भाखई गहर में खाली छाईत घर भघ-बल्लिया रेंग गया । नदियां रा पुळ टूट गया । गाड़ी री पटहियां बांकी हूगी । गरमी इतरी हुई कै लोह काई पत्थर पिघल गया । हिरोशिमा लाय रें लपटां में समाय गयो । तीन दिनां ताई धू-धू बळो रयो । हरियो-भरियो जंगल भर गहर राख रो ढिगसो हो गयो ।

(5)

इए कयामत में लोग-लुगाइयां, टावर-टीकरां री दुरदमा हुई उएरी बात तो कैवए जोग ई कोयनीं । आंसियां देखियोड़ा हान, बठेवाळा सुणाय रया हा । म्हारें में तो सुणबा री हीमत ई कोयनी ही, काळजो कांप-कांप जातो । लपटां भागें रें भड़ री ही, मिनल बरळाय रया, टावर चरळाय रया, कुए किएरी सुएँ, कुए किएनं बचावें मरिया-बल्लिया ! लपटां में भसम ! इए भयंकर कांड री याद सूं ईज मिनल री चेजना परी जावें । 2 लाख 40 हजार लोग-लुगाई भर टावर बरळावता थका जीवता बळ गया । 51 हजार बुरी तरह जायल हो गया । भेरु लाख भासरें मापूली जायल हुआ ।

इए नरमेध में जळ नै मर गया बां तो मुख पायो । एए जांरी सांसां बाकी रेंगी वैं जीवती लासां 'पाणी पाणी' कर री ही, एए पाणी रें जवाब में काळ उएां नै लाय री लपटां में छानो कर देतो । डोल रा गाभा बळ गया, डोल मूज गया, केस बळ गया, चामही और हाडकिया बळनं तटक गया । भै नर कैलाळ चेतो भावतां ई करळावता—'पाणी-पाणी' । पाणी कठें ? पावा बाळो कुए ? भापणी पुराणां में जो रोरव नरक रो भएनं कीषो वो इएरें भागें तुच्छ है । जो हाल तसबीरां में देखियो भर जो देखएवाळो रा झूंडा सूं कानां सुणियो उएनं लिखबा नै घर कैवा नै कोई लबज ई नी । 'नूजियम नै देखतां मन दुख, गलानी भर मगतां हू सूं बळबा लाग गयो । मन में रेंग-रेंग ओ सवाल ऊठतो—मिनल इसो हत्यारो हो सकें है ? भै देख रया हां जो सांबी तसबीरां है ? हे भगवान ! मिनल रें साथें ओ बरताव कीषो ? मिनल ई इसो हो सकें तो पछें राखस, पिशाच, दैत्य इएमूं ज्यादा काई हुवता ?

(6)

हिरोशिमा रें मर्यानाश रो जापानियां रें दिल भर दिमाग वैं भएो भरर

पड़ियो। बठे रा साहित्यकारां रें भागै तो भाज ई हिरोशिमा सूं हीज बल्ल रयो है घर राष्ट्रीय ध्वजावाला जापानियां रा काळजा मे तो भा होळी पीड़ियां ताई सुलगती रेंवैला।

भेक चितराम हो 'भूतां री सवारी—हिरोशिमा में लाय लागबा रें तुरन्त पछे री दिवी ही। धूँवें सूं काळा पड़ियोड़ा नर कंकाळां रो झुंड ज्यांरा कपड़ा बल्ल गया; नागा, चामड़ी काटियोड़ी, गामा ज्यूं सटकियोड़ी, हाथ भूँडा सूजियोड़ा, दुख सूं होस-हवास गायब, ज्यां मे मृत सूं न गत, बिचलायोड़ा, बूँडा ज्यूं बीरान हुयोड़ी गळियां में बेमतलब मटक रया। उए बखत री भसली हानत ही भा। भेक चित्र भीर हो। घंटम बम सूं निकळी बेहिस्ताब गरमी सूं लोग दबराय गया।

घायल 'पाणी-पाणी' कर रया। पाणी कठें ? नळां री सेंणां टूटगी। चारूँ घादी नै लाय सागरी। तिसिया मरतां कठ सूख रया। शरीर धावां सूं चिरीज रया। 'पाणी-पाणी' करता नदी साभ्हां दौड़िया। दौड़णी बांसूँ भाय नौं रयो, सांस लेणी नौं भाय रयो। उठता-पड़ता नदी रें किनारें जाय पाणी रें होठ जगायो। हा बठे रा बठे ठंडा पड़ गया। नदी रें किनारें लोथां रा शिना नाप गया। हिरोशिमा शहर रें मांश नै साज नदियां बेंबें घर सातूँ नदियां लोथां सूं भरणी।

सुबह रो बखत हो। टावर पढ़ाए नै गया हा। भेक दिन पैलां हवाई हमले सूं टूटियोड़ा घरां में मदद सारू जाबा रो स्कूल रा टाबरां रो प्रोग्राम हो। मास्टरां रें सारें स्कूलां रा टावर टोळा रा टोळा मदद सारू जाय रया हा। उएहीज बखत वो हत्यारो पापी बम पड़ियो। 'मां-मां' करता भोळा-माळा भूँडा र' टावर बठे रा बठे संभ्रम गया। उए बेला रो चितराम देखणी नौं भावें। भूँज ई हिरोशिमा री मांवां घाथी रात रा 'सणए-सणए' करतै कायर मे 'मां-मां' रोवता टाबरां रा हेला सुणै।

म्हारे सूं तो बें चितराम देखणी नी भाया। मांखियां मोचन बँठणी। चितरामां नै देख-देख हिरोशिमा री जापानी लुगायां रोय री ही। उणां रें भूँडागे उणां रा टावर सूं ही 'मां मां' करता, बल्लता-बरल्लता मरिया हा। कितरा ई टावर बठे ऊभा-ऊभा भापरा मां-बाप नै याद कर रोय रया हा। हे भगवान् ! वो नजारो याद भावै जद भाज भी म्हारो काळजो चर-चर करवा लाग जावै।

अमेरिका सूर्य पाँच-सात सरदार आया हा । उहाँ में डा. पोलिंग ई हा ।

हाँ पोलिंग अमेरिका रा नाबी रसायन शास्त्री है । आणविक धस्त्रां नै काम मे सेवा पछै उहाँ रो कोई-कोई प्रसर दुनिया माथे हुवै, इए विषय में हाँ पोलिंग घणी शोध कीधी है । इए ईज काम माथे धाने नोबल पुरस्कार मिलियो ।

हाँ. पोलिंग सम्मेलन में घणा जोरदार बोलिया । डा. पोलिंग रो भाषण सुए, मुणबाबाळा रा कानां रो लिङ्कियां खुलगी । भागै दुनियां भंघारी दीखबा लागी । म्हारा रामजी ! भा मोटा देशां रा मोटा लीडरां नै जे कुबुद्धि आयगी तो भा दुनियां, जिएनै हजारों बरसां सून मानवी सजावतो, सिणमारतो छप गयो है, भेक पळ में गारत हो जावैला ।

जापान रा लोगां इए अणुबम-विरोधी विश्व सम्मेलन रें मोकं पै बढो जबरदस्त शांति मार्च कीधी । दूर-दूर सून मिनस पगां चालता, मार्च करता, हिरोशिमा तक आया । तावड़ै सून छाया राखबा नै चारै रा नूँयियोड़ा मोटा-मोटा टोप भायें मेल राखिया हा । लांबी, खूब लांबी सवारी निकळी । सगळां सून भागै तो पैदल मार्च करने भावणियां, उहाँरै लारै विदेशां सून भायोड़ा प्रतिनिधि; पाछै हिरोशिमा रो अणुपार जनता ।

भरी दुपैरी । कोई तीन बजियां रो तावड़ो तड़क रयो । सूरज कड़क रयो । सवारी चाली । म्हां लोगां रें आप-आपरा देशां रा झंडा हाथ में । पसंनो टपक रयो । गेलै रें दोई घाडीनै मिनस भरियो । घाळी फँकै तो भांगणै नीं पड़ै । दुकानां रो, घरां रे छतां मिनसां सून तड री । छतां पर सून आदमी-लुगायां फूलां रो बरखा कर रया । रंगियोड़ा कागजां रो करतण रो पुष्प-बरखा करणै री बठै रीत है । ऊँचो-ऊँचो हवेलियां सून कागज रा फीता नीचै म्हांपै तटकाम रया । फूलां सून सड़क भरगी । माया पै रंग-रंगीला कागज रा फीता तटक रया । टेलिविजन सारू तसवीरां सँचवा नै हेलीकाप्टर माया पै भाय-भाय, उड-उड जाय रयो ।

ओ उछाह भर स्वागत जापानियां उहाँ लोगां रो कीधी जो आणविक धस्त्र पै पाबंदी लगावा री आवाज उठावा नै देश-विदेश सून समंदर लांय नै आया—पैदल चालता, शान्ति मार्च करता, देश रा खुणां-खुणां सून, टापू-टापू सून बठै आया । सून तो चारू कानो हरल-उछाह नजर आय रयो हो, पण जनता पै जमनै नजर नाखबाबाळां नै प्रतप्त में घोर ई बात दीखी । सड़क रें दोई कानो ऊँची लुगायां रा हमाल भासूझां सून आला हा । ओ भाचें देख उहाँ रो प्रातिपां भागै चूदा बरसां पैलां रो नजारी छाय गयो । बाने घर बीती

याद भाय री ही । बांरा हिवड़ा हव्वका लेबा लाग गया । वै भांसूहा पूछती जाय री ही, घर फीका-फीका मूँडां सूँ मुळक नै शान्ति-सैनिकां रो स्वागत करती जाय री ही । उणां री अन्तर रो अन्दाजो लगाणो कोई कठण नीं हो । सगळी जापानी भावां री अेक भावाज ही—भ्हांरा टाबरां री सैरियत सारू शान्ति रो भावाज उठाओ ।

मार्च कर नै भावणियां घर परदेशां सूँ भायोड़ा प्रतिनिधियां सारू उणां रा मन में घणो मान हो । मार्च करणियां नै रोक-रोक पाणी री गिलासां लुगायां म्नाय री ही । मनै तावई मे बळमळाती देख अेक लुगाईं भापरै मायै रो टोप उतार म्हारै मायै पै मेल दीघो; अेक जणी भाप रो पंखो म्हारै हाय में म्नाय दीघो । मनै कड़कड़ते तावई में तपती घर पसीनै सूँ लघपघ देख उणां नै दुव हो रयो हो यूरोप सूँ भायोड़ा प्रतिनिधि तो तावई सूँ लाल बाब पड़ गया । उणां रा कान तो इसा राता हो गया कै जणी अबार लोही टपक पड़ेला ।

सवारा सूधी जूझारां री देवळी पै गई । अेटम बम सूँ भरियोड़ां री याद में काळै भाठे री समाधि बणायोही है । सगळा जणां बठै जाय भायो भुकायो, ढोल पै ताल लागी । ताल रै सामें बँड री धुन गगन गूँजाय दीघो—

Never again the Atom Bomb
कदैई नी, अबै अेटम-बम कदैई नी ।

सुर में सुर मिलाय सावां कठ गावा लागीया—

अेटम-बम कदैई नी, कदैई नी ।

कदैई खाली बँठी रैऊं तो उण सांभ री वँ गहरी भावनांवां याद भाय जावै घर में बांमे गम जाऊं ।

थोड़ी है कोरे धूल पर और आस्था उए री आधी उधार पर, आधी हवा पर । दृष्टि उए री टेलीविजन रें काच पर जादा और मानखें रें प्रेम पर कम । कान उए रा टेलीफोन पर घणा और गरीब, असहाय रें दुखी सुर पर कम । आखी चेतना उएरी अनासक्त सेवा मे कोई तावभाव, और प्रोपेगेंडा में बेहद । इए खातर ही तो भेक बगं साथै, भेक धर्म दूजै धर्म साथै, भेक राष्ट्र दूजै राष्ट्र साथै, भेक पार्टी दूजो पार्टी साथै, भेक वाद (साहित्यिक हुबो चावै राज-नीतिक) दूसरें वाद साथै सावळ सुवदाई सून धिकणा आखा हुयग्या । धिकै है, मरता-डूबता, पए संसे री नाव रो काई भरोसो, जठै ही थोड़ै-से स्वायं रो भार बध्पो, खुद री रोटी नै सिकताव कम लाग्यो (Interest clash) तो सळू सटै भैस मारतां ताळ ही कित्ती ? आ समस्या गणित री नही, इए आंधे जुग री भर उए में जलम्यै आखें मानखें री है । सैं देखै, सैं भोगै; माय रा मांय कूकै, कोसीस कम रोळो घणो ही करै । घणी दाया जापो वोगड़ो भलां ही, सुघरण नै कठै ?

जुग री वात चालगी जद कैणो पड़ै, जुग तो जुग ही है; जित्तो सरावो थोड़ो, जित्तो धुयकारो नाखो कम; बस, कसर इत्ती ही है कैं है आंधो, बाकी चमत्कार नै नमस्कार तो करणो ही पड़ै । सिनेमा में सागें बड़्या जित्तो तो घर बस्योड़ो, बारें नोकळ्यां पछै माड़ी-सी छणगी, तलाक; घर इत्तो सांकड़ो हुयग्यो कै दोनूं दोरा-दोरा ही को भावै नी पए मौको पड़्यां भापए तो सह-अस्तित्व रा छंटिसी । टैम ही सँक्चर री है अवार ।

इए जुग में आदमी जद चाद पर आपरा गोरा, गंधहीण चरणारविंद राख दिया और बठै बसए री बात करए लाग्यो तो आ बात अचम्मै री तो काई ठा है क नहीं पए आशंका री जरूर है । हूं सोचूं, जिको आदमी अठै निचळो को बस सकै नी बो चांद पर जावतो ही सूधो देवता बए जासी आ कम ही जचै; कम काई, डोळियो देखतां तो जचए नै जाग्यां ही कठै ? महल री बीड़ी पर बैठयो कागलो हंस हुयो आज ताई तो किए ही को सुण्यो नी, आगै ठाकुरजी जाएँ । बठै पूगएआळां में हुसी तो कोई अमरीकी सिरदार ही, का कोई रूसी, का कोई अंगरेज मावड़ी रो जायो ही । घरतो पर, भेक-दूजै नै देख्यां तो जिकां री आख्यां में लूए बरसैं और बठै पग घरता ही उएां रें नैणां में नेह री नदी ऊमड़ पड़सी, आ कियां बएँ ? बठै भी तो अठली कमाई रा पुद्गळ ही काम करसी । अमरीका आप री बाड़ बघासी और रूस आप री । अंगरेज रा बावनी पग तो इणां कामां में घरती पर नामी रेंयोड़ा है । बाड़ बघाणी सावळ ताबै नीं आयो तो दोनां में सड़ाई रा लाहू तो बांट

ही देखी । केवण रो मुतलब, बठै गयां पछै ऊगियोड़ा सोग और बघसी और बै आपस मे अलूझधा बिना को रैवै नी । फेर का तो ऊपर फैस्यै कांकरै-सा सै पाछा ही नोचै, और का सारै साथ रा राजीखुसी रा समचार आवणा ही ओखा, बठै ही पापो पाप समोसमा । राम करै इसी नही हुवै, बै समय है तो जावै सुन बसै; पण बलै सिरकै ही कठै । फेर तो घरती री आबादी री समस्या सुळभी ही पड़ी है । भगवान नै आ ही माळा फेरो कै घणखरा समय और सोग ऊगियोड़ा चांद पर जावै परा और गरीब सपूतां री जवानी मुक्त हुय'र सोरा सांस लेवै ।

(2)

सह-अस्तित्व सूनू म्हारो मुतलब अेक पर-घरमो जात दूसरी सागै, अेक काळो, अेक गोरै सागै, अेक आदिवासी अेक नूवै सागै, अेक साम्यवादी अेक गैर-साम्यवादी सागै सावळ बास कर माण सूनू अेक-सै हक-हकूकां री छाया में वसै, खांधै सूनू खांधो मिला'र चाल सकै । सोचण री बात है कै घरती पर आयोड़ा आदमी घरती छोड़'र कठै जावै । बूबो-खाड करै का फासी खा'र भरै ? घरती पर रैवण नै दो पावडा जागा चारै का जी ? और द्या सोरै सास कोई देवणो को चावै नी, सह-अस्तित्व रा कोरा प्रस्ताव पाम करघां तो की बटे नही ।

लका संसार रै नकसै मे अंगूठी टिकै जित्तो देश है, वो घायै दिन भार-तीयां नै मोदाम सूनू बिकी री बोरघा निकालै ज्यो निकाल दै । बोरघा तो बापड़ी निर्जोब है, अठै तो मजीब रो हाल ही बेहाल है । बर्मा काल ताई आपणी घर रो ही अेक सूबो हो, आब उण भारतीयां नै, कोई हरघं सेत सूनू गघां नै काढै जियां, काढ दिया । पन-माल जबत, वो पड़घो रस्तो, कूकीजै जित्तो बूको कठै ही । किसीक बात है ! जर्मनी यहुदियां नै घर अंगरेजा दक्षिणी अफ्रीका मे इसी राफड़लीला घाली कै जाणै घरती माय गोरा काळां रा गांव ही न्यारा बसता हुवै । कबीर रै शब्दां मे* जाणै गोरां रै आवण रो रस्तो ही न्यारो हुवै । काळां री खाल बासती हुवै पर गोरा कोई सोनै री भीगणी करता हुवै ! नीयो अमरीकन नै ऊमो ही को सुबावै नी, या नी बै कठै ही छिया पड़गो और कोड लागघो तो किस क हूसी ? भायी तो ही दास नै बलुगी धिरमाणी ! इंगलैण्ड री रक्षा खातर सड़ो, कटो, मरो हिन्दुस्तानी,

* जे बाहुच तू बाँपणी जावा, जान जान काहे नहि जावा ।

जे तुरक तू तुरकनी जावा, भीतर सतना क्यू न करावा ॥

मोज लूटो भर मजा करो मंगरेज ! खावण नै सूर कूटीजण नै पाडा ! जोर धींगाणो और सीघापणो किसोक ? ससार रै इतिहास में कठै मिले इसो भनूठो उदाहरण ? ओ सह-अस्तित्व कित्ता दिन निर्मै ।

पैलां दुवै त्रिकै री गाय, गाय हुवो मलां ही किए री ही । यफीका, आस्ट्रेलिया, कनाडा, अमरीका, जठई पोल लाधो, घंस बैठथा । मंगरेज उणां रा दूजा भाईबन्ध । बठै रै मूळवास्यां नै कूट-पीट'र काढ दिया, रैवण दिया तो डांगरां मू' ही माड़ा कर परोटघा और अजं उण सागण ही लाठी सू' वियाई चरावै जाएं वै सं प्रेबड़ री भेड़ां हुवै । ऊन कतरता जुग बीतग्या, तोई घाप को भाई नी । नागाई थारो ही आसरो । संयुक्त-राष्ट्र-सघ, विश्व-स्वास्थ्य-कल्याण-संस्था त्रिसी दीखत री फूटरी संस्थावा खोल लांबी-चोडी वातां छमकै, नांजां रुपियां री परसाद प्रोपेण्डा री प्रतिमा रं भोग लगावै । विश्व-धर्म सम्मेलन, नाटो, सीटो और कुण जाएं कित्ता-कित्ता कुड़का रचै । सह-अस्तित्व और लारै रैयोड़ा लोगां नै स्वास्थ्य और सबळ बणावण रा बिल पास करै, घोषणापत्र तयार करै, मिशन भेजै, मुलकां नै ठकण नै भुगला-टोपी बांटे और घर में भूवाजी मा रं जायी जिसो फिरै । सद्-विचार री डोरो ही डील पर हुवै किसी पोल पड़ी है । बंठा-बंठा होळै-सीक नीचलो वासण इसो बंगो खिसकावै कं मरै जिका तो भरै, घम्मीड़ और बोलै । पछै उणां नै लोग-दिखावै रा होळै-सीक बुचकारं न्यारा ही—बयो, लागी तो को नी ? आप चूसै आंतड़था ताई, पण दूजां नै समझावै 'दया पाळो' । आ राजनीति है, साच और स्नेह रं तूळी लगावो । कागजी काम पक्को हुवणो चायीजै, जमाने री मांग है, भायो जुग भा ही चावै । जमानो आंधो, हवा बोळी, जोड़ी मिती दे जोगियां ! मांगो'र लावो ।

पाकिस्तान काल ताई मिनख री पूंछ-सो कठै ही को दीखतो हो नी । आज भारत मे उण भारत रा बाड़ा कर'र प्रजा सागण पण घजा नू'वी धारण कर ली । सागै रैवतां पीढ़यां गळगी; काका, बाबा, केय-केय'र कित्ती सदियां गुजार दी, अबार इसा कोई खुर बघग्या हा कं सायं उठणो-बंसणो भुसकल हुयग्यो । घरम खतरं मे है, सह-अस्तित्व को निर्मै नी—अं आग-लगाळ सूर कठै सू' निकळथा, जिकां करोड़ूं मिनखां री समझ री ढिगती मे चिएख नाख दी और आप आग सू' परियां तमासो देखण नै दूर जा बंठथा । संकीर्णता इयाई कम को ही नी, घरम रं नाव पर और सांकड़ी हुयगी, नही, कर दी । कोई बात नी, थारो अस्तित्व रैवणो चाहीजै, पण अंकर कोई पूछै तो सरी उणां नै कं सबै सोरा हो का पैलां हा ? दो जुगां सू' घणा हुयग्या,

आजादी रो मोटियार जवान लुगाई भजै चुणाव रे टाबर रो मूँवो को देख्यो नी, ये बात करो सोराई री ! चालो, वाढ़िया मिलग्या, पण उणां सूं घाप कठं ? भलं वघाऊ चावें, लड़ परा'र, कूक परा'र—जियां हो तावें घावें । गुड़ दे नही तो छोरी हुय जासूँ— आ कित्ताक दिन निमै ? काचर रा बीज जागां-जागा लुख्या ऊमा थापी देव, कान में समझावें कै घस्न-शस्न भ्हे देसां, साम लगावण रो सगळो सामान म्हारै कनै है, पइसो ही को लेवां नीं । गूंगा रे गूंगा ! गांव मत वाली, भलो चेतायो । बस, गूंगासांड नै इत्तो ही चायोजै । म्हारी एक फूट तो फूटो भलां हो, सामलें री दोनू नही रेंवणी चाहीजै । रोटी, कपड़ो और रेंवण नै जागां, इणां री चिंता नही, शस्त्र पाती भेळा करो; नकद, उधार और माग'र किया ही । इसी समझ सोधी हो को लावें नी ।

आपे दिन भारतीयां नै हो नही, घेशियावासियां नै भी कोई-न-कोई कर-चूणें में देय'र काठ दे, कोई की करे तो करो देलां । समझावें वो पददू और पड़ें । मोटा घणा और मछी सांकड़ी । घागला ही पोचीजै, तोई सरकारी बापड़ी बसावें ही । पण समस्या द्रोपदी रे चीर सी सावटीजै ही नहीं । लिप्सा री लाय समझ री बाढ़ में लाग्यां पछें नारें ऊबरें भणसमझ री राख, बा नागाई री पून मे मलां ही घाप'र उडावो । वार्ता घरम-करम री । इण सूं काई ? लाभ तो भाव मे है और वो घर में ही बीगड़ग्यो । पस्तून कंव, स्वतंत्र हुयग्या, अबै म्हानें ही म्हारी पून मे सोरो सांस लेवण दो । आ सुणें जद भाईजी चमकं । वाढ़ियां में मल्ल वाढ़िया । इण में घचूमम री काई बात ? अं तो हुसी ही, नीब ही इसी लागियोड़ी है । फिटोळां रे कैवणें सूं अंकर बंगाल (पूर्वी) नै ही मसाणियो बैराग ऊपड़यो, मजब रा भगवां पर'र बाबोजी वण बैठथो । घापरो घर बळण लागियो जद चेतो हुयो, पूर फैवया । ठंडे माथे सूं सोच्या ही लारो को छूटयो नीं, चौईस-पच्चीस सालां रो लायो-पोयो सो निकळग्यो । निकळग्यो जिको तो नीकळग्यो, घरमाळो और उजाड़ बँडथो । समझें तो है लोग पण कूट खाया पछें ।

चीण कूट तिब्बतिया नै, उणां रें ही देश में । हजारूँ ही घायघायन हिंदुस्तान में वसग्या । आ ही कोई बात हुयो ? लंका, बर्मा, कांगो, केनिया, युगांडा, स्पेन, पुर्तगाल सगळा नै हिंदुस्तान सोनै री चिड़ी दीसै, पाख्यां खुसमी तोई लारो को छोड़ें नी । पण दूजां नै दोष ही काई देवां, घरपाळा हो को समझें नी; सिक्खस्तान, जाटस्तान काई ठा काई-काई तान छेड़ें । घासाम अक रा तीन हुयग्या, पंजाब अक रा दो, आंध्र सवाल करण नै तयार । प्रांतां रें पूत जलमै । बडो तमासो है, नीबड़सी तो कुण जाणै किताक ? ईसाइयां और

विदेशी कूटनीतिज्ञां मुफ्त रो जैर देवण री दुकानां न्यारी-न्यारी खोल राखी है; सह-प्रस्तित्व नै बेमार करण खातर । तान लांबी, समझ सांकड़ी । देखा, किया ताबे भाबे ।

मास्ट्रेलिया में सिवा भंगरेजां रें कोई बस ही को सकं नी, जाएं उण नै किणी भंगरेजणी ही जण्यो हुवें । सह-प्रस्तित्व रें प्रस्तित्व में विजोकलो करण रो उलटो पाठ छेकड़ चात्यो कठे सूं ? घणवरो पश्चिम रें साम्राज्यवादी देशां सूं । उपनिवेशवादी देशां रो इल्लूभो इसो घालियोड़ो है कं जल्दी-सीक सुलभै जद फेर घाल्यो ही काई ? कोरिया दो, वियतनाम दो, भारत दो-तीन, जर्मनी दो और घठे ताई कं बलिन दो । बसावणो ताबे नही भाबे तो विचाळें भीत घाल'र ही सही । विगाड़णो जिकै रो काई नाव ? दळिया रा गुठला और बाँ ताबे नों भाबे तो घान रो सवाद तो विगाड़ ही दें । फूट घालो और राज करो—ओ मोटो और मूळ मंत्र भंगरेजां घरती नै विशेष रूप सूं दियो । उणां रो गुण किया भूलीजें ? पूजा हुवणी चापीजें उणां रो तो । ताबे नही भाबे बा बात न्यारी है । 'उदारचरितानां तु वमुधैव कुटुंबकम्' री राग करणिया तो भकल-बायरा भेवाड़िया हा । वं घरती रें वैभव नै समझै ही काई हा ? उणा रो तो इतिहास ही बदळ दियो । घर रा राख्या न घाट रा । इण खातर ही इणां रें राज में कदई सूरज को छिप्यो नी परा तूँकी री चाल नै लख्या पछें ताळ कितीक लागी ? सूरज देवता छिपतो ही दीस्यो । बायोड़ा तो काटणा हो पड़े, मोड़ा-बंगा कद-न-कद ।

(3)

भापरी भापा री भाग इसी पापी कं लोगां घरमाळी ठंडाई री उलटो करणो सलू कर दी । जुगां सूं दसूँ-बीसूँ भापावां जिकं उपमहाद्वीप में तीजणी-सी फूटरी सह-प्रस्तित्व री मास्या रो इमरत पी'र हंसती-मुळकती ही, भंगरेजो भेकली उणा रो सागं बसणो मुसकल कर दियो । गधे रो पूँछ पकड़ायो तो इसो कं मूँडें पर लातां किती ही पड़ो, सोरें सांसु छोडां जद भात्यो ही काई ? भाप रें स्वार्थ खातर भादमी रो 'स्व' कित्तो सांकड़ो हुवें । 'स्व' जित्तो ही संकीर्ण, सह-प्रस्तित्व नै जित्तो ही डर । 'स्व' रो विस्तार सह-प्रस्तित्व रो आधार । हूं कैंजें जिको साव, म्हारी पाटीं सोचें जिको ठीक—बस घै विचार ही पनपणा चापीजें, बाकी नही । सह-प्रस्तित्व नै फेर भासरो कठे ? भवार भा ही भवस्था नाणी हुय'र घरती पर नाच घालें; देखा, किया पार पड़े ? दवाई जद ताई उलटो, बेमारी बंधसी ही ।

तो, घरती छेकड़ चाबें काई ? विविध वर्गां रो सह-प्रस्तित्व, उणां रो

सार्थ विकास-वैभव, और साथी पूछो तो इण चाव और सदाभाव सून ही उण बिघाता-बागवान आपरी कळा रो बिस्तार करधो है ओ 'विश्व-वन' । पण जद सगळां सून स्थाणो, समझदार मिनख-विरवो आप जिसै वगं सार्थ को रेंय सकै नी, उण वेळा चाह और उसासां री पून इण बाग सून ओक दुरगंध लेय'र ऊपर उठती सरमावै, बाग री सार्थकता इण में कठे ? मिनख रो मोल ही दूजां नै सुख पूगावण मे है, आप रो पेट तो कागला-कुत्ता ही भरै है । *The glory of human life is to serve others and not to be served*—साव जचती है । कोसोस तो आ हुवणी चायीजै कै देवता मिनख री धरती पर उतरण नै मूँढो घोवै, और हुवै घा है कं मिनवां नै देख'र डोंगरा ई चमकै । फेर नो वाजो कियो पार पड़े ? 'सबे भवन्तु सुखिनः'—धरती सून मिनख रै इस पारमार्थिक प्रयास री ओक दिव्य गंध जद-जद उठ'र अनंत में फैले जणां ही सह-अस्तित्व री बाजरी रै मानवी वैभव रा सिट्टा नोकळै; गंधवती घरा रो अर्थ फेर ही समझ में आवै और फेर हो हुवै मिनख रो मोल ।

साहित्यकारों की तीरथ : गोरकी की घर

रामनाथ व्यास 'परिकर'

सबसे पहले गोरकी की नाम संसार का मोटा साहित्यकारों में सिर गिनीज है। म्हे म्हांरी जिम्मासा नै पूरी करण सारू गोरकी-विश्वसाहित्य-संस्थान में उणां की पोती सूं मिलण नै गया। म्हारा गुजराती भायला श्री प्रतुल सबानी सांगै हा। सोवियत्स्काया कल्तूरा (सोवियत संस्कृति) समाचार-पत्र की सवाददाता कुमारी लेविना इण आयोजन की सगळी व्यवस्था करी।

सबसे पहले गोरकी की नाम जिसो ऊंचो और ओपतो उणां की घर रूस की सगळा सूं बड़े रईस की महल हो। घर में बढता ही सबसे पहले गोरकी की बेटे की बहू नदाज्दा सबसे पहले पेशकोवा और गोरकी की पोती घणै घादर सूं म्हां लोगों की घणवाणी करी। पूरा घर एक स्मारक की रूप है, जिए की देखमाळ एक संग्रहालय की रूप में करीजें।

मांय बढता ही घर की भांगणें में खुलता दो हाल (बड़ा कमरा) है, एक में गोरकी की साधना-स्थल और दूसरे में उणां की निजी पुस्तकालय है। गोरकी की साधना एक मोटी और ऊंची मेज मायें हुती, कारण वें एक फेफड़े का मिनख हा और राजयक्ष्मा का रोगी हा। उणां की छव फुटे कद की माफक जमी सूं तीन फुट ऊंची कुर्सी मायें सीधें बैठण की डाक्टर की सलाह मुजब का रचना ही। मेज की कोई खास साज-सजावट नही ही, एक कलम रखण की लकड़ी की ट्रे, दो पैड पानां का, एक दो खणों की दवातदान, रंगविरंगी पेन्सिलें रखण खातर लकड़ी मायें लाख की काम की गिलास बस का ही ऊंची मेज की सामग्री ही। मेज की डावें हाथ मायें कई पौधियां पर नोट हा पर एक ट्रे रानियोडी ही।

मेज की नीचे एक मोटी टोकरी रही मारू ही। कुर्सी की तारें एक लंबी काच की घलमारी में किताबा की कतारें रानियोडी ही। डावें हाथ पासो एक घणी मोटी काच की लिङ्की बाग में भाकती ही, जिए मायें पड़दो नी हो। कमरे की दो दरवाजां मांय सूं दूसरो खण की कमरे में खुलै। जीवणें हाथ पासो मोटी घाठ-फुटी कपड़ा रखण की काच की घलमारी में

गोरकी रो घोवरकोट और कपड़ा घेक छक-फुटे तकड़े पीजी री पीसाक जिसा हा । भलमारी में नीचे घेक जोड़ी ऊंचा बूट राखियोड़ा हा और नूटियां माथे फेस्ट री नाइट-कैप और रेसबायू रे जिसा दो टोप हा । छुएँ मे घेक ऊंची बैत ही । सामने पासो भलमारी मे गोरकी ने मेंट में मिली सामथी में हिंदुस्तानी मूर्तियां और पीतल री कला रा फूलदान हा । इहाँ रे भलावा हाथी दांत, घमड़ी, रेसम, सकड़ी, चांदी, सीप आदि री घनेक फूठरी चीजां राखियोड़ी ही जिकी चीए, फ्रांस, जर्मनी, इटली, प्रमरीका, ब्रिटेन, यूनान और जापान देशां री ही । सोवण रो कमरो और रूबण रो कमरो घेक हा हो, कारण लिखता-लिखता थाकेलो घावतां ही सारसी प्राराम-कुम्भी और छोटी मेज-फुरसी माथे उहाँ ने नीचे लूँवण भर फेरे उठने लिखण री मादत ही । कमरे मे घेक आठ-फुटो पलंग हो जिकी सादो और सफेद ऊनी-मूती चादरां सूँ ढकियोड़ी । सेज रे सिराएँ कने छोटी-सीक मेज माथे गोरकी रे पुत्र मैक्सिम री तसवीर ही । आ बात नैहाँ में जल भरतां उहाँ री जोड़ामत म्हाने विशेष रूप सूँ बतायी ।

गोरकी आखरी बरसां में नीचली मंजल माथे रूँवता, कारण खून रो दीरे और दमे री शिकायत हुवण सूँ ऊपरली मंजल माथे जावणो मना हुवायो हो । चातां-ही-चातां में नदाउदा पेशकीवा म्हाने बतायो के गोरकी दिन भर लोगां सूँ मिलती बखत कारखानां, गाँवां, खेतां मे भाष रा नोट ले लिया करता और लिखण री बखत सगळा नोट मेज माथे राखने लिखता जावता । कएँ-कएँई नोटां माथे लाल-सीला सेनाए करता, और लिखाई रो काम पूरो हुता ही सगळा नोट न्हो रो टोकरी में भर देता, और घदीतवार नै बारें बाग रे बीजूं बीच, उहाँ री होळी जगावता । सगळा टाबरां नै और दोस्तां नै बुगावता और सेवां रा पत्तां सागे मोटी कैपफायर-सी लगावता और छट्ठा-मसकरो करता । बगीचे में सेवा रा पीपां री संभाळ बै खुद करता । भाष रो कुहाड़ी सूँ नजीक रा जंगळां मे खूँख काटण रो शीक उहाँ नै घणो हो । बग्ग रा खेल खेलता और धूमता रूँवता ।

भांगण रे पार नीचे री मंजल में गोरकी रो निजू पुस्तकालय हो, जिए में च्यारुमेर भीत री जागां काच री भलमारियां पोथियां सूँ भटी-दटी ही । बीच में घडाकार आबतूस री मोटी मेज ही जिए रे च्यारुमेर सोबणी कुरसियां ही । भट्टे री घणकरी पोथियां माथे गोरकी रे हाथ रा सेनाए और किनारे रा हाशियां माथे टीपां लिखियोड़ी मिले । घणो खुशी री बात आ है के इहाँ पोथियां री टीपां माथे गोरकी रे दिमाग और चितन री शोष तारता

बीस बरसां सूं बरोबर ह्वय रही है। भारत रा रवीन्द्रनाथ ठाकुर और गांधीजी बाबत कई टीपां इणां री कलम सूं लिखियोड़ी मिलै जिणां माथे शोधप्रबन्ध उणां दिनां गोरकी-विश्व-साहित्य-संस्मरण रा विद्वान तयार करता हा। इण रै मलावा भारत-सम्बन्धी, कई दूजी भाषावां रा ग्रंथ उठै हा जिणां में रोम्यां रोला री पुस्तक 'महात्मा गांधी' री मूळ प्रति और स्वामी विवेकानंद री जीवणकथा, जिकी गोरकी नै भेंट में मिली ही, म्हाने दिखायीजी। शोध रो दूजो विषय देश-विदेश में हजारों साहित्यकारां, राजनेतावां और कलाकारां सूं ह्वयोड़ो गोरकी रो पत्रव्यवहार है। इण विषय मे रूसी, अंग्रेजी और दूजी भाषावां में गोरकी रा पत्र छप चुका है। लेनिन रै साथे गोरकी रो दोस्तानो हो। ओ पत्र व्यवहार भी गोरकी साहित्य रो अेक प्रमुख अंग है।

आंगण सूं ऊपर आवण रो रस्तो रूस री भवन-निर्माण-कला री जीवतो-जागतो चितराम है। भवन रो मालक रूस रो मोटो रईस हो जिके इटली रा कारीगरां सूं पगोथियां री नाळ और हाथ धरण रो लैरदार सामरो, बणवाया हा। हरथ रम रै भकराणें में रंगविरंगी धारियां री समुद्री लैर रो ओ कटकड़ो म्हारे जीवण ओयोड़ी मद्भुत कळानिवि हो। आजकाल इण नाळ नै काम में नहीं लायीजै, जिण सूं बारलें पासी लोह री नाळ माथेकर म्हे ऊपरली मंजल में गया, जठे लाएँ री मेज म्हारे स्वागत में सजी-सजायी तयार हो। मांत-भांत रा पदारथां में रूस री चैरी, सेवां और फळां रा मुरब्बा, चटणियां, और भीठी-नमकीन डबल-रोटियां, गोरकी री मनभावण, म्हारी भी भावण बणगी हो। 'समोवर' में राखियोड़ी चाम और मनभावता फळां रा रस पाली री ठीड़। दही, दूध, माखण, पनीर, सूका मेवा, सैत, साप री छतरिया, मालू री पापड़ियां और कासा (दळियो) भारतीय मैमाना रो विशेष भोजन पैली सूं ही तयार हो।

ऊपरली मंजल में अेक बडो कमरो साहित्यकारा रै चितरामां सूं च्यारू-मेर सजियोडो हो। भारत रा प्रेमचंदजी रो साधारण-सो फोटू बतावता श्रीमती पेशकीवा म्हाने कैयो के भूमतरायजी वादो तो करियो पण आ सीमांत भेजी। प्रेमचन्द रो सोवियत-संघ में विशेष सनमान है,—कारण बै जन-समस्यावां रा लेखक और जनवादी द्रष्टा गिणीजिया है। चतुर्वेदीजी इण बात रो कौन करियो के चोखें कैनवास माथे रंगीन चित्र संग्रहालय खातर भूमतरायजी नै कैयने भिजवासी। जनवादी साहित्यकारां मे तमिल और तेलगू रा सोवियत क्रांति रा दिनां में छपियोड़ा ट्रेक्ट और पुस्तिकावां अठे घणा सभाळनै राखियोड़ा है। हरेक मुलक री पोथिया, जिकी गोरकी रै हाथा माथेकर निकळी और जिणा रा अनुवाद गोरकी करवाया, अठे सार-संभाळ ए राखियोड़ी है।

सीख रो वयत गोरकी वश री इणां लाम्बीणी लुगायां रै तामे म्हां गोरकी रै साहित्यकार नै सीस तवायो।

राजस्थानी काव्य : श्रेक निरख श्रेक परख

कृष्णगोपाल कल्ला

समय पारखी री परख घणी करडी । इस रूप में जबरी बितेसता या कै
घो सार सार नै गहै, घोयै नै पण नीं भातै 'घर फटकै देय उड़ाय ।' दिनख
पारखी घणखरी बातां सुं सही निहंय नीं दे सकै । वो ठहुर्यो संसारी जीव,
घर भापसदारी निभायां बिना जोणो मुसकल । पण समै किए रो संगती ।
वो कियो नै पण नी बगसै ।

राजस्थानी काव्य में आखर वो काई है, जो इए समै रूप में टिकसी ?
इए रो बेरो पाड़ां, इए पैली जे राजस्थानी काव्य री चीरफाड़ करां तो की
बात बर्णै । बिषां चीरफाड़ मूँ जीव मरै, सुंदरता बिनसै । पण जाएकारी
खातर ओ जरूरी है । राजस्थानी काव्य रा दो पल : बिचार घर उए री
अभिव्यक्ति रो माध्यम । अभिव्यक्ति रो माध्यम बा भाषा, जिकी ढिगळ रै मोद
बैठी, या उए री नान्ही ताडो । डावड़घां जुड़वां ही । श्रेक उमर घर श्रेकसै
डील डोळ री । मां री दो आख्या खिरखी । दोन्यूं पळी पोसीजी । हरिरस में
गंगा-नाम करणै रै पैली बा बरोबर घन दड़बो दोन्यूं डीकर्या नै बांटपो ।
की भिसी सौंज ही, जिकी पर दोनुवां रो बरोबर रो घणियाप रयो । श्रेक
सलूणी रै भागै परणीजी, श्रेक परजवाई पीव पाय पो'रै डटी । बा बारै
निकळी तो भ्यान बड़यो । भा भजै ठूल्या सुं उळझी, गणगोर्या गाती, ईसर
रिझाती-रमाती, टाबरी ई रंगी । घणा लाड लढायां टाबर बिगड़ै, घणा हेत
जतायां भाषा । मुग्धा री बयसन्धि री श्रेक सीव, उए रीझ-बीझ री की
पुळ पड़ियां । घर डाबण खातर कीं तो भक्कल चाईजै । कोरै सरूप नै कोई
कद ताणी निरखै । चाम नीं, काम ब्हालो री उगत पण साची । गुजराती री
चदकच्यानेणी खिली, राजस्थानी भजै खिड़्या गाये, सिझारो करै, टाबरी-सी
बिरभ्यां गोवै-जोवै ।

राजस्थानी रै अभिव्यक्ति पक्ष नै देखां तो पावांला कै उए में बैलसगाई
समदर रै सूर्या बच्चो कादो-कीव भोकळो । धनुप्रास री हणभुण पणी ।

उए बैणसगाई रै मांय, चितए रो अथाह हिलोळा लेता समदर नै बांधए रो प्रणम हो । उए रै सूख्यां इए अनुप्रास री बेकळू रेत मे बा सुरखती रमणी-गमणी । मन रो हिरण्यो अजै मरीचका में उए समदर रो भ्रम करै, छोळां लेवै, तड़फा खावै, प्राण गमावै । भा बरए-मैत्री घणी मंहणी पड़ै । जापानी छोर्या रा पग, लोठै रै कसएँ मे कसकै जियां छोटा नान्हा राख्या जावै, उणी तरियां राजस्थानी सरस्वती रा काव्य-पद भा बरए-मैत्री बांधै । 'बयल सगाई बांधियां पेन्हीजै' री उगत साव भूठी । राजस्थानी रै मरण रो मोटो कारण यो ई हुयो । पए अजै तक मरण रपट में लोग झंडी-बंडी बातां बकै । आज री राजस्थानी जो बाजणा भावरां रा बिद्युवा बांधै, धूधरा घमकावै, चालता काव्य रा भावकां नै चंकावै-बंकावै, अर साच पूछो तो घणो अनुरूप करै । ओ भावरां रो अन्तरमेळ कवि नै की ऊंची चीज फुरएँ सूँ रोकै । काव्य अर कळा रा मूळ सुर यूनानी मूरतां अर प्लाटो सुकरात रो बिचारएँ नै परख्यां निजर भावै । उए मे जिए उदात्त अर निरावरण निरलकरण काव्यश्री री बात है, बा घणी ऊंची । 'सूधे पाव न धरि परत सोभा हो के भार' या बाणी साची । शिव अर सत्य तो सहजां सुन्दर हुवै । बिचार या कथा में काव्यतत्व हुयां, उए नै गैणां गाठां री दरकार नी पड़ै । सोनै सूँ पीळीजी सेठाण्यां कानी आख्यां रसिकां री बयूँ नी उठै ? काळिदास करणफूल री जागां सिरस शकुन्तला नै बयूँ पैरावै ? सिनेमा रा लोग गांवडै रा कथानकां कानी बयूँ दोड़ै ? अेक ई कारण है कै ऊंचो कळा अभिव्यक्ति अकृत्रिम आवै । मोना-लिजा रा होठां री मुळक लिजटेलर सूँ इषकी सोहणी लागै ? यो बयूँकर होवै ? स्यात अै सँ आवरण सूँ रहित हुवै, इएा पर ऊपर सूँ पोती-घघेड़ी कळा री लिपस्टिक नी हुवै । यो ई कारण निजर भावै ।

पद्य अर गद्य री अभिव्यक्ति में कांई फरक हुवै ? पद्य कठै गद्य रो कोरो दूरान्वय तो कोनी ? तो के गद्य पद्य रो आतरो छन्द अर व्याकरण सूँ हुवै ? गद्य री व्याकरण पद्य री व्याकरण मे कांई फरक हुवै ? कारक, क्रियापद-हीण गद्य पद्य बयूँकर गिणीजै ? गद्यगीत कियां गीत कहौजै ? पद्य में मांडियां बयूँ बैद्यक रा नुसखा भरम पैदा करै ? तुकात गद्य या चम्पू री बात भी उलझावै । बबनिका नै कांई गिला ? नाटकां-स्यातां रा बोल संसै पैदा करै । बोलणै री लंकारो अर चारण बचना चातुरी या का'णी रो मझाण वापतो बारैठ बड़बो, कठै पद्य बोलै अर कठै पद्य मे दूहो देवै, सोरठो समोवै ? कानां, बचना, आख्या अर हिये रो बिभेद की दमखम रालै । दृश्य काव्य अर श्रव्य काव्य में घणो फरक कोनी । मै कैवणो चावूँतो कै दृश्य कोरो नाटक ई कोनी । उए मे लिखी ओळी नै भी गिलो, बयूँकै उए नै आख्यां पड़ै अर

देखाया पछे ई काल्पनिक चितराम उघटे जद बचन फुरीजै, तो कोरा काना पर कठे भरोसो हुवै ? सुणायियो मुखमगिमा देख्यो चावै । रेडियो सूँ कठे मन तिरपत हुवै, बो टेतीविजन मांगै । ऊंची सूँ ऊंची बिम्ब प्रतिबिंबित करती कमेंट्री की पण छोड़ देवै, जो घास्यां देख्यो चावै । 'घास्यां देखो परसरामजी कदे न भूठी होय'री बात सिरै । बज्जर पै बोहत दुसरी नै जद बाबूदा सुणै, तो बोलणै रो निरमलाई सूँ डे पर नी भलकै । की बात है जिएरो पुरो बेरो नी पड़्यो । दण, थण्य भळगा-भळगा भावै तो भिनस या तो सूरदास बणै या बापड़ो गुंगो बोळो बणै । समिव्यक्ति रो माध्यम इणी सूँ दोनू बात नै सांगै चावै । नाटक री सफळता रो की कारण प्रो ई लागै लगवै । तो काव्य गद्य पद्य रें भेद सूँ नी परख्यो जा सकै, उण नै उण रें प्रभाव सूँ परखणो चाईजै । जद नेहरूजी भाषड़े पर बोलता उण बांध में मिंदर देवरें रा दरसण करणै री बात करै तो उण नै गद्य गिण्यां इयाव हुवै । लिंकन गेटिसबर्ग में तीन मिनट बोलै बो गद्य को गिणीज सकै नी । पूरणसिंह रा तीन निबंधां नै तीन सण्डकाव्य गिणां तो पार पड़ै । उणा में गद्य रो ढोल है पण प्रात्मा तो काव्य रो ई निजर भावै । राजस्थानी रो बचनिका, भावां रें उतार-चढ़ाव पर हिलोळा खाती, काव्य सिरखी लागै । उण नै गद्य नी कह सकां । बात कीं साफ हुई कै गद्य रो फरक छन्द-व्याकरण सूँ नी हुवै, उण में कथ्य री प्रात्मा ई उणो नै भळगा करै । भा काव्य री प्रात्मा काई हुवै ? काई दण नै कल्पना गिणां ? पण कोरी कल्पना तो शेलचिल्ली सा सीकोट पड़ै-ढ़ावै । तो इण नै बिम्ब गिणां ? पण बिम्ब तो इण कल्पना सूँ बणै-मिटै ? उगत री विचित्रता गिणां ? पण कैणै रो बेदब दब तो खेचळ सूँ भी हुय जावै, फेर कवि नै बिरमाजी जिस्यो मानणो नी संभवै ? इण प्रात्मा नै, बीजा देशां रा वासी महत घर उदात्त कवै । घर प्रो उदात्त किए में बसै-बिरमै ? उदात्त कयण रें कथ्य मे, सरय मे हुय सकै । उदात्त भावना घर अनुभूति मे हुय सकै । उदात्त उण वायवी तरब नै कय सका त्रिको मन रें घामें में इन्द्रधनुष लागै । प्रो इन्द्र धनुष कद तणै ? जद रस री बिरवा थमै । हियो हिलोळा खावै, खैरावै जदई प्रो उदात्त री इन्द्र धनुष खिचै । बिरवा हुयां पछै, तिरपत मांति रो अनुभव हिमै नै हुवै; कीं बितो ई अनुभव इण काव्यात्मा रा दरसण करघां पछै हुवै । संतां रा पद पदयां हियो बिभोर हुवै । 'एकोरस कण एव' नपूँकर लागै ? भाव की तो लौकिक हुवै, घर की मनौकिक । काव्य में जद लौकिक भावां रो रस बरसै, जद हिमै मे की कसक हुवै, प्रेक तड़पड़ाट जागै । हियो हिलोळा खावै, पण उण नै शांति नी मिलै । पिरपीराज संजोगिता हरे, कृष्ण रुकमणी हरण करै, पण भावक जद मोलाहरण पड़ै, तो उण रें धित मे बीजळी

चमकें पण कुल मिला'र उण रै हियँ नै भँ सारा रस शांति नी देवै । संतां री बाणी में जो शांति है, मीरां रा पदां में जो शान्त खीरसमंदर है, उण सूँ चैन मिलै । ओ चैन चित री दशा नी हुवै, हियँ री हुवै, भर भाव-लोक मे सारो मिनख रो अस्तित्व खो देवै । स्यात भा ई मोक्ष री दशा हुवै । निहचै ई काव्य रो भा आत्मा संन साहित्य में मिलै । इण रँ अभाव में काव्य लौकिक, हीण, हेठो रस-दसावां सिरजै, भर उण नै हीणो-हेठो ई गिणणो पड़ै । सती जळ-बळ, जोहर करै—सूरो बिना कबंध जूझै, जूँझार हुवै, पण भावा में उदात्तता इणां रा करतबां नै गायां नी भावै । पण कबीरो अटपटी बाणी मँ, मन घुडलै मनवार हुवै, मिरघला मारै तो शिकार हिसक होतां थकां भी मनमोवणो हुवै; भर निरगुण रा गायकां रै कीरत न लोक मे सिरजण मे सफळ हुवै; भर समूह आपो खो राळे, की अलमस्त हुयो मन री हंस दसा पावै । पद्य लौकिक भाव-जगत सिरज सकै, पण काव्य अलौकिक लोक में ले जावै । सूळो ऊपर सजी सेज मे मानखो इणी सूँ रसियँ सूँ रोझै-मोजै ।

छंदां रा फद घणा कृत्रिम । बेदां मे भँ कोरा सात हा । सायद सान सुरां रा समायोड़ा भँ ई छंद मूल छंदां री ओळ राखै । ओ मतोळपो बिचर्यो तो संस्कृत मे इण री बेल अमरबेल सी बिना मूळ ई पसरि भर काव्य रै मूळ विरछ पर किसी छाया के छंद ई छंद रंग्या, खंब न बेल चरणी, ब्रह्म नै माया लागी । ठगणी भिसा नैण मटकाया कं कबीरो हाथ ई नीं आयो, बी रो हुयनै मरग्यो । पुरुष रँ पुरसारथ नै जियां ठगणी बिस री बेल बणी हंस-खेल खतम करै, भिसी होगी । बालमीक तेरा छंदां रा तोरण मार्या भर काव्य राण्यां रँ रणवास मे रास मांद्यो । वेदव्यासजी अठारा छंदां मे महाभारत मांडी भर भांडी । मागोत पन्चोस छंदां मे बचीजी । पिगल री पोथी छंदां री पैली पोथी गिणीजै । प्राकृत पंगलम् नै इण रँ बाद लोणा भणी-गुणी । अपभ्रंश में भँ छंद टूट्या-फूट्या । कीं नुवै सिरै सूँ सिरज्या गया । ढिगळ छंद इणी अपभ्रंश रा छंदां रा जायात्राम गिणीजै । रतनू री पिगळ प्रकास, लखपत पिगळ, जोगी-दास चारण रो हरि पिगळ, उदैराम रो कविकुल-बोध, भर मंछाराम रो रघु-नाथरूपक ढिगळ छंदां रा प्रथ गिणीजै । किसनं भावै रो रघुवरजसप्रकास भी इणी पर प्रकास गेरै । पण भँ सँ हरराज नै सिरोमणी मानै । चंद नागराज रँ पिगळ री वाता ई सुणी; दरसण भाज ताणी उण रा कोई कर पायो नी । हरराज संस्कृत छंदां रँ सार्ग दूहे-भाषा-छप्पे रा सभण-उदाहरण दिया है । उणन्तर छप्पे रो सागो पाग मडाण है । ढिगळ गीतां रो बाळीसो भी सातरी हुयो । जोगीदास तो बाईसो पै ई यमग्यो हो । भा ई छंदां री अंशबेल राज-स्थानी री मोटै रूप सूँ भणीजै-गुणीजै । दूहे नै छोडां तो बाकी रा छंदां रा

दरसण घाज रै राजस्थानी काव्य में पण नी हुवै । बाकी रा छंद किसा छळ छरां में लोग्या-खूटग्या ? राजस्थानी छदां रो ओळ सूं राजस्थानी लिखारो बाकिफ कोनी । वो हिन्दी रा छन्दा नै राजस्थानी में मांढे । भा बात घणी ब्रेजां नी । कही तो राजस्थानी सांभा तोड़ देसी ।

छंद विभेद रो भावर कारण काई ? नयूं दूहै री बकरी रा दो धण, चूँघ-चूँघ बकरीजाया बैबाट करै, मीगण्यो करै ? नयूं नौं गायत्री फुरीजै ? सायद विषय भर छरां मे कीं सगपण हो, मेळ हो, त्रिकां नै लोगड़ा भूलग्या । बात रोणै सूं भरी, भर छंद मूळ तै सोक री राखै, तो भी भाज रा कवि कोकाट कूकई जमूं करै मुळकै । नासपभी ई गिणीजसी । उणां नै पिंगळ रो ग्यान ई कोनी । कई भाईड़ा तो कोरी तुकां जोडै, भर कीं चतर संगीत रा लंगा सा मलगा लोकगीत रा सुरां सार्ग सबद रळकावै । ठिम्मर बात तो या हे कं छंद रा फंद कवि नै रहणै रै डब रो भम्यास करावै । सारै विश्व रै कविषां में प्रारम्भ रा प्रयासा मे भम्यास री खेचळ सत्तावै, उण रै पछै ई वै सध्योड़ै सुरां सूं सहजै गावै । राजस्थानी लिखारां कनै थो थम कोनी, त्रिली सूं उणां री काव्य-चतराई छंद रै गढ़णै-पढ़णै मे ई खतम हुय रैवै । छंद तो साधन है, साध्य तो उण में कह्यो कथ्य ई हुवै, पण राजस्थानी मे भजै छंद ई छंद है । भा कथ्य री कमी इ ग भाषा नै मारसी । काव्य लोगड़ा कोरा छंदी रै खतर कोनी सरावै । गीता रा श्लोक अनहद छंद नाद रै पाण कोनी पूजोवै—इण नै समझो-कणै रै सारू की हुयां ई कैणो घोपे, नीतर मांपोत्ताल बरजी रै सार्ग रेखन रो पाधरो गुलाबी मंगत्री ई मासी । गजानन्दजी री मोटी मूँड लाडू पासो, भर इण छोटे नान्है मूँदरे पर सवारी गांठसी । कान-सेनां रै फानां रस छोळता भै तानसेन गर्वग्या खुद नै कँवै, तो की घांट नई नयूँक उणां नै कोरी कैणै रो डब है, काई कैणी है भा तो भै बापड़ा कदे सोची ई कोनी ? सायद भा सोवणै री सामरय भी इण गरीबड़ा कनै कोनी । देवतां री भा दात घणी दुरतम । राजस्थानी काव्य रा विषया नै देख्यो दिवाळो चोड़ै घावै । ओ दाळद किया मिटै ? पोबड़ो चढ़ाया, गर-बायो. भून धारयां तो ओ डपै कोनी—'जागि परत है काक पिकु' तो भेक बोन सूं ई चाच चोड़ै करै—उण नै की पण पढ़णो चाईजै, गुणणी चाईजै ? पण पढ़ै तो काई पढ़ै, मुकलावा बहार पढ़ै कं स्थाल त्होड़ी देवर को पढ़ै ? 'सोनो निपजै रेत मे' पढ़ै कं काई पढ़ै ? उणनै पुराण जूने काव्या मे दुबकी मारणी चाईजै, भर नुवै विचारां सूं जाण-पिछाण काडणी चाईजै । जद ई निस्तार निजर भावै ।

रचना रे घतस मे मभा उण में भानन्द सेणै रो तब किसो ? सुन्दर घर

भूँचा बिचारां रै बिना बात किली डब पण नी बलै । काव्य उपयोगहीण ठाळप रो कुबद कोनी ? उण सून हियो क्यूं हरखै ? काव्य सून हियो क्यूं हरखै ? स्यात उण मे कई चीजां है जो भोळप रै घली नेढी । इली सून कवि जात रो भोळियो टाबर गिलीजै । जियां टाबरां सून हांम्यां बोल्यां हियो हरखै, उणी तरियां कवियां रो भोळप में भी मन बिरमै । कवि रै हिये सवेदना रा तार घणा भणकार भर्या । जाणै फिरांस रो ढाळ । थोड़ै सै बिचार-बाव रै बह्यां जिया फिरांस भणकार करै, कवि भी उणी तरियां नाजुक संवेदना रो घणी । उण रै हिये जो ऊठै, उण नै बो पढ़णिये रै हिये उतारणो चावै । क्यूं चावै ? क्यूं कै घापां कनै डबण नै फुरसत कोनी, निरखण नै साबक घांस्यां नही, सरावण जोग जबान कोनी । कवि नै बिचाता इण तीनुं दात सून मालां-माल पैदा करै—कवि जग रै पड़्यै प्रभाव रो बाणी में बरणन करै, बो धनुभूति नै बाणी देव, जो धातमा नै पोसै, ढाढस देव, ध्यावस बचावै । कवि काव्य में प्रभाव कियां पैदा करै ? बो लय सून, बिम्ब सून, भाषा सून, बिचार सून, घाखरां नै भोळ्यां में बिसो मक्षय क्रम देव, जियां पटुवो जड़ियो गळपटिये में मणिया पोवै । भेक नै मळगो कर्यां तिमण्यो तीन-तेरा हुय जावै, उणी तरियां कवि काव्य रो भोळो नै जडै-गडै ।

लय घर तुक रो काव्य में काई लेण-देण ? काव्य संगीत रै समंदर सून निकळ्यो रतन । मन रो मंथण लय मांगै । दही बिलोती मरवण न देखो—बाजूबंद रो लूंबां जाणै थिरकै, माथो भँहराँ रो भगर-मगर प ताल देतो लहरातो मिएघर साप सो छिब पावै लहरावै 'भरे देहेड़ी जिनि घरं, जिनि तूँ लेहि उतारि; नीकं है शीकं धुवें ऐसं ई रहि नारि'री भरज जो गवाळण सून चितेरो गिहारी करै, उण रो मनमोवणी छिब रो घाभा मे दही बिलोती देह रो लयत । न रा चितराम रो उतार हुवै । प्राकृत रा कवियां में भो घणो बहालो विषय रयो है । तो काव्य घर संगीत रो सगपण गाढ़ो । काव्य संगीत सून निसरै, घर पद-पद ताल लगातो मन रो मानस लहरावै, जद ही कवि गावै । जद घाथर नीं हा, उण बचत ध्वनि सून काम चालतो । गाय रंभावै, बाछा डोडावै, कोयल कूकै, मोर टहूकै । क्यूंकर उण मे मावां रो प्रसद भाषा भारोपां ? सबद भो घाथर काई है ? स्फोट घर ध्वनि रो प्रसद मळगो इकाई हो तो सबद बणै—घर काव्य में जितरी कूटरी मंथण कूट सगत हुवै, बो निवरै—भरष रो भारोप तो सबद पैं मिनट भर सबद रो तोर ई मूळ मे गिलीजै—तो काव्य लय घर लयकारी सून मंथण कूट कीनी ।

मन रो घांस्यां में भै हाकोहाक मचाता भाषा मंथण नै बलावै ।

परय नीं करां तो भी पळ-पळ पळका मारें, बीजळी सी चमकावें, मांयो सूरदास सटकं सूं मिनता नें पिछाणें—कोयल, काग देखां बिना सुण्यां मो जणीजें । तुक घासर काई करे ? बा घेकसी घोर रें घतावा काई ? घेकसी सोर नाडी यंत्र पें घेकसी भणकार पंदा करे, जो कानां में मिसरी घोळें । मांस्यां घचमं सूं फाटी रो फाटी रे जावें, घर कवि सरावणें जोग जीम रो बणी होणें सूं फुरें । हकल्पें नें छंङ्पां बो पारोपार बोलें-मखं । तेदपो मो मुळक पें मस्तापो कबूटें जिमो गुटरगूं करे । तो बात घा रयी कै भावां रें षडाव-उतार में मिनत नम सूं बोलें—हियो पढ़कें । सांस रो मुरलो बाजें—घेड बेंड क्यूं नीं हयो पढ़कें ? सांस चालें ? सहज सुभाव सूं बें सागर रो सहारां रो जिमो उठें-गिरें । फजूल रो तुकां में भी टाबरपा मुख पावें । 'भरपो समंदर गोपीचन्दर, बोन म्हारो मछली कितरो पाणी' नें जद टाबरपा टेटें तो उणां रो सम्पूर्णं घस्तिव घिरकें । मो क्यूं होवें ? ओ उण रे नियमित सोर रो प्रताप ई गिणीजसी । संगीत भी तो सोर ई है, पण सोवणो सोर होणें सूं लोगां रो बो करणाभरण बणें । तुक घासर में नीं ह्यूर बीच-बीच में घाणें सूं कविता, विचार तय सूं छिटकी घर भटकणी । बरण-पंथी ठकराई रो ठसक सी लागें क्यूंकें बा घाघी चीज रो प्रति है, घर प्रति सर्वेन वजंयेव् में साच है । तुक रे भागम रो सुझाई इण में, कै बा मंजो सहजता सूं भावें, जोराबरी रो बलात्कार नीं होवें, तो घोवें ? जोराबरी रें बलात्कार में लूँठाई नीं धरपीजें, पण उण मे रस कठें ? मिसरी गिरणां किखो मानंद, या तो मूँठे घुळें, जद ई मिठास रो पनुभूति हवें ।

पुराणें दूहां नें लोग तुकां रें सातर कठें पढ़ें । उण में कीं कथ्य त्रिसो हवें कै उण नें पठपां ई सरें । तुक विचारां रो भी हवें, पण बां घणी ऊंचो घर सूच्छम बात हवें । इष्टांत भलंकार घर सूक्ति घूंद, रहीम, भाष, भड्डी रो इण विचारां रो तुक रें कारण ई पढ़ीजें गुणीजें । पण बा समानता माथें रें सूच्छम सवेदना सूं सम्बन्ध राखें, जिण रें विवेचन वास्तें भेजो चाईजें । चलकारां रो ओ पख, घजे इण दीठ सूं निरखणो-परखणो मछतो पढ़्यो है । सोर सार्यंक घर बिरथा भी करघो जावें । तुक सार्यंक सोर सूं फळगी कोई बीजी बात कोनी लागें । तुक रो म्मानो यो ई लागें ।

पण कै काव्य कोरो संगीत ई हवें ? काव्य फुरता ई पेंलौपोत कानां तक नाद सौंदर्य नें उजागर करे । समझण सारू काव्य नें हिये तक उतारणें सातर बीजो बार पढ़णी पढ़ें, जें समझ सातर नीं हवें । संगीत दो भांत रो हवें । घेक होठां-काना रो, दूजो हियें रो भर चित्त रो । कण्ठ, होठ कोरा सोर संगीत

करे-मरे । हिये रो संगीत माथे में उपजे भर देह रे देवरै मे भालर ज्यूं भएक पैदा करे । हिये मे गूँजे । कण्ठ सूँ हिये रो संगीत ऊँचो भर निहचै ई सिरै गिणीजे । गीता बेद रो पाठ दिव्य सुर जगावै । सागर री गरजण, बायरै री 'रहित भूँग पंदापती करत दानु मधुनीर, मंद-मंद आवत चल्थो कुन्जर कुंज कुटीर', काई गावै ? बास रें बोड़ में, जो भंवरा सूँ भेदया हवै, पवन बँवे भर किसी मनमोवणी मुरली बाजे । सख घुरै, तुरीं गूँजे, अजान रा सुर, रुद्री रा मंतरां रो पाठ किसी संगीत सिरजे ? जैपर में भेक हवामहल है । कितरा दूरिस्ट नित निरखै-परखै, पण उण रा बारजां-बार्यां मे सूँ छणकारा करती हवा कीं किसी गावै जो इण लोक सूँ परै री चीज । सात सुरां सूँ की ऊँची इधकी सुरा री सहणाई ग्वालेर रें महलां री जाल्या-भरोलां सूँ भोला खाती पुरवा बजावै । अगनैणी भर ग्वालेर घराणा ना तान तराणा, उण भागै पीका लागै—राणकपुर मे भाट भएकै-भएकै, तूपुर कंकण किकिणि री बात कीं भूँची चीज है, उण तक सबद नी पूगै । खरळ रो तामड़ो जिकी ततकार करे, दुनियां रें किसी बाजे पैं उण री नकल पण नी हो सकै । मंत्राभिचार मे ह्री राजस्यानी रो 'ळ' 'लू' 'श्रु' की अजब सी निसर्ग री घुन घुणै । मिनख उण सूँ छिटवयो-बिछटयो घणो कंगलो लागै । संकीर्तन रो सोर किसी मन री ओस्था बणावै ? भाँकर भएकै, घटै री गूँजती टंकार, गिरजे री घंटियां काई पैदा करे ? घणो अचैभो भावै, इणा रें सोर पैं । इणां रें सुरां सूँ, सोर सूँ सगपण करणो जरूरी, इणां नै हियो भरपो भर काव्य मे इणां सो सोर घरणो ।

भूँचै काव्य में यो ई भावै । यो सोर रो जादू घणो जोरावर । काव्य में इण नै लागै रो डब कियां भागै ? राम ई जाणै, भो कठै सूँ भावै, भर कियां भावै ? हां, भायां पछै इण री चीरफाड़ पण करी जा सकै । अमृत-ध्वनि नै अमृतध्वनि क्यूँ कर केवां ? उण में ध्वनि री अमृत अवस्था री बात तो कठै कोनी ? ध्वनि लहर ज्यूँ लहरावै, कठै खतम हवै, भर कठै सूँ सुर माडै, कीं बेरो ई नी पड़ै । जूभारू बाजा जूभार नै जूभावै ? लोगड़ा सांप रें फुफकार सूँ सबद आयो बतावै । पण सांप तो बहरो । पूंगी रें सुरां पैं वो कियां नाचै ? राम जाणै ? सांप, जेपनाग बहरो ई भलो । माथे घरती रो बोझ मार सांभ्यो कठै कानां सूँ सुर सुण सीस चालण करे तो अनरय हवै, इणी सूँ सेसनाग बहरो लागै । कवि सेस सो सबद फूतकारै, उण रें भूँचै प्रभाव रो बेरो कोनी पड़ै ? काव्य रा आखरां नै पवित्र गिणो, उणां मे फेर-बदल सूँ घणो अनरय हवै ।

ध्वनि, जे विचार सूँ रळमिळ चालै तो बात सांतरी रेंवै । कोरी ध्वनि

मूँ विचार पैदा करणो जिहवें ई चमत्कार वै, पण बा पणी मूँची बात कोनी । हाँ, विचारां री मोजू सबदावली, जे सगोत मूँ कसोजे, तो सोनै में सुगम सिरखी बात हुवै ।

छंद वो डीलडोल गिणीजै, जिए मे काव्य रो जीव जीवै । छंद भी जूए जीवै, मरै, मोठा जतमै । छंद विषय वस्तु रै जोगा होएा बाईजै । नेपोलियन जे गांधी रै डील में घोंतार लेतो तो के होतो ? गीता धनुष्य में नी हो'र हरिमोतिका मे होनी तो काहें घांतरो घातो ? फूटरं शरीर मूँ घातमा रो फूटरापो जाणीजै । पण मो सदा नई हुवै । मोपरै डील में मो फूटरापो बापर सकै पण वो मपवादी ई हुवै ।

काव्य में बिब रो काहें बोपार रैवै ? प्रतीकां रै रूप में काव्य फुरणै री जगा जे बिम्बा मे कवि बतळावै, तो रुड़ो लागै । प्रिसो न्यू'कर होवै ? काव्य भलाई कोनी । साळा-पोसाळा मूँ बारै निकळ्यां, पीछो छुदायां, मानवी प्रतीकां मूँ धळगा भागे, न्यू'कै उणां में कृत्रिम भर्षे घालरां मूँ जोडणो परै । कोड लंग्वेज सी गत हुवै, वै मार्ष मे चितराम उघाई तो सहजां हियं तक पुगै । प्रतीक दाळ मात मे घूसळचद सा ओपरा लागै । कबाब में हाडवयो सटकै । काव्य रा बिब, जइ जगत री साच मूँ भी इषका साचा ठहरै; न्यू'कै वै हियं रै नेड़ा हुवै । हियं री घाल्यां मूँ कही बात, संगत लाग्यां तुरतो फुरत मसर करै—इणी मूँ 'डिटेल्' नी रूपें; मोड़ स्वीपिंग लाइन्ज मे कवि चिते-रणी करै । घालरां रा सजोग मूँ कवि मुहावरा ई नही, चितराम भी उकेरै-घड़ै । सबद सही जगां जड़ीजै तो चितराम जीवतो-जागतो लागै, भीतर घालरां री रोळदट्ट लागै । सारा घलंकार मूँ चितराम बणानै रो काम ई लियो जावै । सातरो कवि वो जो नुंवा मोखर बिना जरूरत नई घड़ै, पुराणा घालरां रा पूरा भरघ चौड करै, उणां नै नुं'वो म्यातो देवै ।

घलंकार ओर काहें काम करै ? वै बणा बिम्बां मे रंग भरै । चितराम नै लाइट भर मेड़ देवै । ओपमा जुग जूनी पर घलंकारा री मूळ गिणीजै । सादृश्यमूलक घलंकार इणी ओपमा राणी रा बाया-जाम गिणीजै । काळिदास री ओपमा विशेष न्यू' सराईजै ? वो उणां रो प्रयोग इयां करै के सारो प्रभाव केन्द्रीभूत हो, उण विषय कानी सामोपांग ध्यान नीचै; किबचनुमा त्रियां 'निडिन' नै लीचै, पर चितराम नै पूरो बेरो दे उजागर करै । दीपशिखा सी इन्दुपति सुषबर मे भागै बढ़ी, जद वो कैंवै तो दिवै री ली सिरखी इन्दु-मति री देह ई निजरां मे नी झळनळै, सामी बैठपा राजावां री पंगत रा घाला मूँ झूजळा मुख भी दोखै, पाछै छोडपा राजावा री निराग मुखकाळिमा भी चौड़ भावै । दीयो भागै उजास करै, पाछै मधेरो । पर छेक ओपमा मूँ पूरो

चित्रराम जगमगातो सामो आबैं । ओ ई प्रलंकारां रो चमत्कार हुवैं ।

कल्पना री उड़ाण नै प्रलंकार सा'रो देवैं । विषय रो घेरो पाड़ती घर सागैं ई चित्रराम उमारती प्रलंकार री सौज घणी ब्हाली लागै । अरथहीण सबदां री रामतरोळ काव्य नै भंडंती बणा छोड़ैं । विचार सागैं छिब सोहणी बात हुवैं । प्रलंकार आख्यां ओलैं नै आख्या प्रागैं करैं, रहस नै चोड़ैं करैं । उपमा-रूपरू बात रो म्यानो खोलैं । समानता पर इष्टांत सूं बात लोजिकल हुवैं, घर असरदार बणैं हियं री उछाळ हुवैं, जद ई आख्यां प्रागैं री चीज री समानता आळी बीजी चीजां रो बेरो आपू आप आख्यां प्रागैं निरत करैं । याददास्ती घर पुराणी जूनी बिगतां रो ओ ई सुभोतो मिनवादेही नै भगवान देवैं । प्रलंकार विचार नै भा पैहराया जा सकैं, सबदां नै भी । लोगडा आं रा दो भेद करैं : शब्दालंकार घर पर्यालंकार कैवैं । अरथ में प्रलंकार देवैं । अरथ मे प्रलंकार किया हुवैं ? उण रै विचारां मे जो बांकपण हुवैं, अरथ रैं कर्यां वो परो मिटै । मुळक नै, भुच सूं प्रळी कर्यां वा काई रैंवैं ? आख्या नै फिजिशियन त्रिण प्रां व सूं देखैं, उण में क्यूं कर ई आनन्द री बात तई सखावैं । 'वा चितवन ओरे कछु'—तो आखर 'ओरे' क्यूं कर हुवैं ? उण रैं ओळू-दोळू भंडळाता विचार ई तो उण मे कदे इमरत देखैं, घर जिनगाणी पावैं, हळाहळ गळें उतारैं, घर बिना मोत मरै । मद छकैं, घर भुक-भुक भूमैं । तो प्रलंकार कथण सूं प्रळगैं कोरैं विचार में भी संभवैं । कवि विचार नै भी, छद देही ज्यूं सरूप देवैं । भावना जद तरक रैं गोद वंठे, घर कल्पना रा रम-तिया घड़ैं जद ई काव्य सिरजण संभवैं । बड़बोल घर बढ्यै-चढ्यै बरणन नै पढ़्या असर पड़ैं । सत्य नै असत्य रैं आवरण सूं प्रळगो करणो भावक रैं सारू करड़ो काम कोनी । अतरभेदी दीठ बारैं रा आवरणों नै भेद भीतर तक पूर्ण । परिचित सूं अपरिचित रो बेरो दियो जा सकैं, इणी खातर मेघदूत रो डाकियो भूठो होतां यका भी मनमोवणो लागैं । काव्य री भूठ जगत री भूठ सूं प्रळगी हुवैं । काव्य री कारीगरी आवैं भिसी आस्थां जिकी सुपना देखैं, सुपना सिरजैं, घर जीभ सूं आखरां री ओळ्यां बें सुपना बधे तो काव्य बणैं । भूमल जलम सूं ई सरूपवती हुई हुसी, पण उण सरूप री घिर्याण्यां तो घर-वैठी चाकी भोवैं, घर चून सवेरैं । ओ कवि भूल करी जिको उण रैं सीसड़लैं नै सरूप नारेळ ज्यूं देख्यो, केसडला हतियारी रा बासग नाग ज्यूं—सूं जो डसीज्यो, वो उण न अमरता रो इमरत देख्यो । आज जिकी सुंदरता री देख्या भेक बरस सारू बकीन ऑफ यूनिवर्स बणी गरबावैं, वा ई दूजें बरस भेक टींगर जण्यो, कूडैं री चीज पण बण परो करीजैं ।

यो क्यूंकर होवैं ? स्यात यो ई कारण सखावैं कै उण हतियारी रा

इसका लोगड़ा ऊँ जोम कोनी जिकी इमरत रा मापर फुरे । फीते रो नांप्यो-
जोह्यो डोल प्रभाव रे बिना भी सुन्दर गिलीजे भर कबीरे न होंती भाव ।
'गुण नै रोज गंवार' जो सोरठ कैवे, पण घाज तो जात घर लछमी दान न
भोकती टोकरइयां किसी प्रमत्ता पावे ? हेतना घली, पण उएनै उजागर कर-
लिया होमर कोनी । कवि तो पटबोज सो बिचारां रो ब्यक देवे, घर मंगारे
मे उजाम हुवे । वो सुरज हुय सहस किरणां बरसावे, घर उजाळ रो बाग सी
फूटे, भघियाळी मिटे भर हिय रो पोयण पुळकै-मुळकै । चांद हुय'र इमरत
बरसावे, घर कुमोदण्या कर्प-भर्प, खिल-खिल चिन्ने । चोखो भू'चो वाध्य प्रिती
दे हुवे । उए री कळा, कळा हुवता थकां भी कळा रो भरम पण नों हुवण
देवे । हीरो हीरो कियो वणै ? उए री कटाई-छटाई मू' । उए तरियां काव्य
कटाई-छटाई तो चावे, पण हर भाटे री चतर जोहरी भी कितरी ई कटाई-
छटाई करै, हीरो को वणा सकै नो ।

काव्य सारु खेचळ घर कारीगरी करणी कितो चोखी ? घली कारीगरी
भू' वा कारीगरी हुय सकै । पण काव्य वो कोनी रेवे । नाघ-कूद हरेक कर
मकै पण नतंक मे के विशेषता ? वो उए खातर खटे, घर दब मू' उछळै-कूदे ।
भो ई दब काव्य मे चावे । भावना मू' कारीगरी मांभळी संयत करी जा सकै,
पण कोरी कारीगरी मू' भावना कियो जलम ? 'पड़ पड़ वूँदां पड़े, गड़-
गड़ घण गाजे' कोरो फलेंट बरणन है । इण मे किसी भावना रो सुरमो
सर्मोड़ो है ? राम ई जाय । च'काणी नटणी री चाल, भर गजगामण री
चाल मे जो फरक हुवे वो ई सहज काव्य घर खेचळ रे काव्य मे जाण्यो जावे ।
बिचार री सपनता मू' काव्य निरावरण हुवे । बिचारां री सोभा उए कने
हुवे, तो मूधा पाव मिया पड़े ? साज-सिगार री, गंगा-गाठां री भांकी तो बे
वणै जां कने इण सोभा री कमो हुवे । नागी के तो न्हावे घर काई निचोवे ।
न्यूड री कळा चावे कै देह प्रिती हुवे कै देसलिया नै विदेह कर सकै, नीतर
'ताज मरु घे माय' रो बात रेवे--कीं हुया ई दिसावो माडीजे । नी हुया ई,
घू'घटा खिचीजे, घेहघां ढकीजे ।

भावरां मू' चितराम खीचलो काम लयावे । जद चितराम बिचीजे, तो
कवि नै सन्तोष हुवे, घर वो खुद री पूठ पपेई । इसा गिण घणा कम चावे,
भर माया वा प्रापो एो झंड-बंड बकै - खुद नै खुद माने । तुळसी घणी
ठिम्भर कवि गिलीजे पण जद-जद वो भिसा चितराम लीचै, उए मे भो दरप
भावे है, वो भी गरबावे । इसे घेक गिण मे वो चितराम लीच्यो तो वो
बिरमाजी मू' बिमो चितराम नी लीचण री गर्वोक्ति कर बैठघो- -रामजी
सीता रे माय सिद्धर दे रया है । तुळसी कैवे :

‘उपमा कहि न जाय विधि पै हौं । राम सीय सिर सैदुर देही ॥’

चालो, उपमा विधि ई नई दे सकै, तो फेर विधि रा पढ़या पुतळा रो काई बिरतो—कुण उपमा देखै ? तुळसीदासजी म्हाराज फेरु खुद उपमा देण दुनया भर जो चितराम बै सङ्गो कर्ग्यो, निहचै ई विधि सून दिसो भो सङ्गो हुय सकै नी—बो पिरजापत पांच तरबां मून पूतळा पढ़ै—तुळसी बापदो भंक भासरो मून राम पढ़ै, सीता चितेरै—उण रो उपमा बो देखै—रंग है तुळसी पारी उगत नै, पारी सगत नै—बो फुरै :

‘प्रमिय पराग जलत्र भरि नीकै । ससिय भूपि जनु लोभ प्रमो कै ॥

इण चौपाई मे न गड़ढ-गड़ढ है न पड़ड़-पड़ड़, पळ-पळ पळका मारती बोजळी नी को लिबै नी, भर कोरो ‘नीकै’ सून तुळसी नीको चितराम मांडै । इण सबद सून चौपाई चेतना री जोत बणगी, चितराम में राम प्राग्यो—कियां बणग्यो ? सिद्धर रो पराग, कंबळ निसर्यो प्रांगळ्यां मे नीकै सून, प्राची तरै मून, भरपूर भर्या हाथ रो रूप जो बणै, बो फण फैलाये साप सरीयो बणै । भर राम रो सांवळो हाथ साचै साप री प्राकृति बणावै । भर सीता रो मुख चंदरमा, चंदरमा पर इमरत रो बासो, उण नै लेवण छातर जाणै राम रो साप सो हाथ इमरत रै तालच चंदरमा कानी फण फैलायो । तो भेक नीकै सून करामात हुयगी । विरमाजी नै मात दे दी, भर तुळसी बाबो गरब्यो-गरज्यो । तो सबदा सून चितराम इसा रामरोळा करै, खेला करै, मेळा मांडै ।

अंत मे भेक बात रैगी । आखर काव्य मे उपयोगिता कांई ? उण नै बियां तो सीख सारु भी लोगड़ा घोटै । ‘बेताळ कहै बिक्रम सुणो जीभ समाळै बोलिये’ में की तुकताल है ई । पण चेतावणी रा जूधट्यां सून कोई चेतै या नी चेतै—नहि विकास इहि काल सून कोई सबक लेवै नी लेवै—काव्य भूंडी मार करै—काव्य प्रच्छाई सारु हियो तैयार करै—सखरी कल्पना सून मन निरमळ करै, सत्य सून सोहणो सामेळो करावै । हियो काव्य सून हिलै, काव्य हियै नै भेक गेलै घालै । भेजै भर हियै में जे की तालमेळ हुवै, तो काव्य उण नै भी संचै ढाळै । भर नी हुवै तो अहिंसकां नै ‘पागी पीवै छाण लोही अण-छाण्यो गिटै’ री उगत सांच होती नित देखां परखा ई हां । काव्य सीख नी देखै, बो प्रेरणा करै, मन मे फुरफुरी जगावै, उण नै सिहरावै । काव्य पंगम्भरां, नबियां रा वचनां सो गूढ—आखरां री उलटबांसी हुवै, उण नै जाणणियो ई जाणै—हर कोई नी पिछाणै । उण गोरखधर्य रो असर पढ़ै । पण ओ असर कियां पढ़ै ? इण रो बेरो घणो मुसकल । बिया डील में दवा कियां असर करै ? बो प्रोसेस भी विज्ञान कनै कोनी । काव्य तो माध्यम ई बिया मिटती-बणती कल्पना रो राखै । काव्य सून सीख ई देणी होती तो विधान री घारावा

कविता में मञ्जीजती, घर लोगदा उए रो पासण करता । पण बै दूटै— हरि-
चंद रो चंद टरै—नीं टळै, बो नीं दूटै झूठै । इसो वयूँ हुवै ? ओ यूँ हुवै कं
बो 'इन्स्ट्रुक्ट' नीं कर, 'इन्सपायर' करै, ओ 'इन्स्ट्रुक्ट' सून ऊँची बात हुवै ।
काई कंवै, ओ जरूरी पणो कोनी, किया कंवै, इणं मे काई कंवै कवि समावै,
घर सफल हुवै ।

काव्य जाणकारी गी चाज कोनी, बो समझ रीं चीज हुवै काव्य रै माय
रस रसिक रै पातर हुवै । घरसिक रै पातर बो मैसे भागे बीए सिरखो हुवै ।
इणी सून 'घरसिकेपु काव्य निवेदनम् शिरसि मा तिस' र। उगत कवि बिनवै-
भर्खै । कंवळ रै कनै भीड़को रंवै, पण भुंवरो तो दूर देश रो बासी हुवै । बो
कंवळ री पांख बधै, प्राण त्यागै । पीठकाजी कवळ कनै रै र भी माछरां सारू
छपाका मारै । सो काव्य रो रस काव्य में होणै रै सार्ग, रसिक मे भी हुवै ।
'चंदा बसै प्रकास' सी बात काव्य री होतां थका भी 'जो जाही को भावता सो
ताही के पास', इणी सून हुवै । ओ ई कारण बणै कविता भेक उमर में
दाय नीं भावै, पण बीजी उमर मे पणी रिभावै, मन भावै । करेला टाबरां
नै कठे दाय भावै—भावळा बाळकां रा स्वाद नै कठे तिरपत करै ? काव्य मे
घनुभी हुई बात भण्या पाठक भूमै । घनुभव रै वारै री बात में साधारणी-
करण थोड़ो मुसकल सून हुवै—बठै ई कवि री चतरता परखीजै, रसिक री
समझ जाणीजै ।

काव्य रै कव्य में कथा नीं छोपै, वयूँ'कै काव्य री का'णी, जिए छिवियां
सून संवरै, बै तत्व ई उए मे कोनी । काव्य तो विस्मय जगावै, सुपना रो
संसार रचावै-बसावै घर दिखावै । मकराणै मे मूरत थोड़ी हुवै—मूरत तो
मूर्तिकार रै हिये में हुवै । बो छेणी सून उए हिये री मूरत नै भाटे में
मूरत देवै, उए नै ढाळै । तो काव्य जिए बायबी माध्यम सून रूपाकार पावै,
बो पणो सूक्ष्म रंवै । काव्य जो उगेरै, उए मे विषय-वस्तु भेक तत्व है, बो
सारै काव्य री जगां कियां ले सकै ? सत्य तो सदा ई सापेक्ष रंवै । बो ममय,
स्थान, पात्र रै बदळणै सून भी बदळै । इए सून काव्य जो टेरै बो भावना री
वस्तु वणै । काव्य जगत कल्पना घर भावना रो जगत हुवै तो कवि धडै । इसी
सून उए नै दूजो पिरजापत कंणो पडै । उए री जगती रो बो ई पणी-घोरी
हुवै । महान घटनावां सून ई कोरो महाकाव्य नीं बणै, उए रै फुरणै मे भी
मेजमंद महानता रो सुर घर भावना रो स्फीत वक्ष चाईजै । सो टंच सोनो
महाकाव्य नई ह्व सकै, वयूँ'कै महाकाव्य चावै महानता सून अभिमतित सिए ।
घै सिए पण थोड़ा, घर घागो तो माळा रा मिणियां नै जोड़ै भर है, उए
नै हार कियां कंवा ? घै महाकाव्य महाकाव्य रा बै पद्य बणै जो विशेष सरन,

मरमभेदी घोसरां री घोळ्यां नै जोई । महाकाय काव्य नै महाकाव्य गिएणो मरम हुवै, बयूंकें डील सूं डाकी को हुवै नी, उए डील में की डाकीपणो हुया ई बो डाकी कहावै । इणी तरियां महाकाय काव्य में कीं महान काव्य हुया ई बो महाकाव्य कहावै । घोसर घायां इए री भी बेरो पाइस्यां । पए इए निबन्ध में काव्य री चीरफाड़ री रपट मांडी है, सायद कीं मन्दरूणी भांकी री बेरो इए सूं लागसी । काव्य रें जीव नै जाणबा री इच्छा राख-
णियां री भरम मिटसी, बै मरम री बात जाणसी-सराहसी—मर रस्तो पासी ।

आलजंजाल

व्रजमोहन जावळिया

कितरो भोळो भर कितरो दयालू है तूँ म्हारें जामणजायै रा डीकरा,
कितरो रुडो भर रुपाळो है तूँ इण निरभागण बूढळो खातर, जो धिजोती
रैवें आपरें काळजें नें भर बाळती रैवें आपरी कुंदण जिंसी काया नें, यारी
जूनी पोळ रा पगोघिया सामें म्हाळती, ओभका लेती भर देखती सपना, लड-
खडाती थारा कुंवाडा नें । साच है या कै म्हे तनै घणो मान दूँ, पण
राणोजी भी तो देखे है मनै घणो मान, उरळें मन भर खुलें हाथां । कहें
अपित न कर दीधो बें म्हारें वातर । सब कुछ तो सूप दियो है मनै । पण,
म्हारा ताल ! कठें मिल सकैली मनै थारे हिवडें में भर्योड़ी आ मोहाळू
ममता भर सहजा ईं मिलतो आयोडो धो सनेव ? आ ईं परदास है भव
म्हारा पूत ! म्हारो हिवडो पाटय्यो, कापा जोरणागी, भर टूक-टूक होग्यो है
काळजो म्हारो । रजेक ओरुं सैं म्हारें सागें म्हारा इण भाफत रा दिहाडां नें ।
जिदगी री घूळ उडरी है नीचें, पण नीचें । आ बोदी माटी, भर गिणती रा
मैं नान्हा दिहाडा, भूळस जाती इण घुंवाडें में ।

घणो रुडो, घणो रुपाळो सपनो देख्यो है मैं—जाणें म्हारो ताल, सत-
रंगो इन्द्रधनुष मूँ फूटतें उजास रें गाल मूँ उतरती हेठें आयो म्हारें पतवाडें ।
हूं भोळव न सकी बीनै घणी देर ताईं—भर जद धोळणी, तो भोळसायो बो
आपरी चौड़ी छाती माथें झिलमिलतें रगताळू मुरंगी सितारें मूँ ।

घणो भलो मिनत हो यो. जगमगार्त उणिवारें आळो, सगती भर रूप
रो भोतार ! धाम लोधी बो म्हारी पांगळी, भर घेक बार ओरुं बणगी मैं
रुडी-रुपाळो भर आकर्षक उणिवारें आळी चतर नार । धाम लोधी म्हारो
हाथ भर लेग्यो मनै तार-तार इन्द्रधनुसी सतरंगी उजास रें राजमारण रें रुईं
बाड माथें ।

हे म्हारा राम ! मैं जो करणी कीधी है, म्हारी इण जूण में बीरी बरो-
बरी कठेंई को दासैं नीं ! जद मूँ घुपनी है आ परती भर जद मूँ जागी है
आ जगती, देखी है कठेंई मिली कामण, जो पाळ सकें होइ म्हारी करणी मूँ !
मैं जो करणी की है म्हारा नाथ ! वा दोरो है मरत मूँ यो, भर तेजकत है

सूरज रै ताप सून । सँग जगती जद काटै है भापरी जिन्दगी वैवतां पाप-करमा
री धार में, भर पिछतावतां बां पर, रोतां भर कळपतां, मैं कीधी ही भिसी
कगली जो सै सून ऊंची, घातमबलि सून उठघोड़ी, गुणांभाळो भर भलैपणां री
करणी ही । रोती भर कळपती काहूँ हूं मैं वीं बगत सून ईं म्हारै बुझापै रा भै
दिन—पछताती भापरी करणी पर ! छिटक देखूं मैं म्हारी जिंदगी भर
म्हारो ओ जीव, जिणां नै डुबो राखी है मैं पाप रा समन्दर मे झूठी भ्राण
सेवतां । भिसी भ्राण जो थोथै तकीं सून तायोड़ी, झूठ रो पुळिंदो हुवै, भावतो
रै जो भ्राणाचोक, भ्राणयक नारी री जुवान पर !

भर अब म्हारो सैस मेवाड रा राणोजी री भ्रमर गादी रो घणी
बणसी । सँग मेवाड़, ओ गौरवभाळो देश होवैलो बीरै पगां हेठै । इण सून तो
भाझी ई है या जे महान सागाजी रै सिंगासग माथै भेक कायर, भेक कपटी
बैठ भर उजड़ जावै भा सँग परती ।

है भठ कोईक भिसा ओ जो कैंव कैं पन्ना झूठ बोलगी । तरवार री तीखी
धार देखर कांपण भाळै इण राणां री घोळी घमणिमा मे सांगा रो ईं शोणित
बहतो होसी, कियां करां पतियारो इण पर ? भा हत्यारी नार बचा लीघो
भाप रै साल नै भर नांख दीघो भेक मूरख नै मोत रै सामी बलि रो बकरो
बणावण सारू—कपट सून भर्योड़ी भेक कूड कांणी रै भासरै महान
सांगाजी रो ऊजळ कीरत माथै घूळ उखावण नै । भै सँग मिनख बंध्योड़ा होसी
म्हारै पाप-करमां सून पण राम रै सामे तो बोल्याई होसी बै साच, कैं किए
खातर कीधी ही मैं भा करणी । कइँ ! किणी जवरी सगती रो जोर हो म्हां
पर हर लीघो हुवै म्हारी सँग चेतना नै, भापरै भतस रै जोर सून ? हुई है
कदेई भिसी भी क कोई प्रेत आतमा कर लीघो हुवै अधिकार किणी जागती
जोत पर ? कदास भभाव में जनम्योड़ी भय भर भ्रांत कल्पनावां री कोई
छाया ही बा ? कुण कह सकैं । क्यूं कीधी ही मैं भा करणी ?

हाड'र मांस री पत्रर इण छाती मझ बां गुणां रो बास कदेई नी हो
ज्यारो बासो साधु-संतां रा हिवडा मे ईं हुवै, कोरा संतां मे ईं । मैं भेक गांवाळू
गोरडी ही, पणखरी असपळतावां, भ्राणाधार कल्पनावां, घोवाघड़ीर कूड़
वास्तविकतावा सून भर्योड़ी कोरी भेक गोरडी । फेर नी मैं भिसी करणी
कीधी है, जिणसून सिकुड़ जावैला सगळा संत भर मुड़ जावैला बै भेकाकानी,
परयराता डर सून । मनै बीरागणा कैंव है भै सगळा, भर जाणै है चोखी तरां
के सँग जगत में म्हारी कीरत रो पसारो है । भै सँग ऊंचे सुर मे म्हारी
सामपरमी रा गीत गावै । गुहिल, सीलादीत भर बापै री खाप रा, रावळ-

राणावा री प्रीत रा, भर मेवाड रा सामनां री निभायोड़ी भाए रा बिडव सुणावै । पण बिरथा है मैं सब ! कई होणो-जाणो है इए सूं सब ! जो होणी ही, होगी पूरी । होणी भा ई ही कै म्हारो लाल चढ़यो बलि पर, भर हूं रोऊं हूं आज तक भलाई सूं भरयोड़ी बी करणी नै, जिए सारू हलाल करायो मैं म्हारै लाल नै, परायें पूत री रक्षा खातर ।

मैं घोटती री हूं इए का'णी नैं सैकड़ां दाण म्हारी काळजै री कोर ! भर घोटरी हूं अब भी भरदास करती थां सूं कै भेक बार मोरू सांभळलै म्हारी भरज । संजोग सूं धो आखरी भोसर है म्हारा पूत ! भेक दाण मोरू सांभळलै तूं म्हारी आपबीतो नैं । अणमावता उदगारां सूं म्हारो हिवडो फाट्यो है म्हारा लाल ! उगळ जावण दे म्हारा इणां उदगारां नैं भेक बार, जिए सूं शान्ति मिल सकै, म्हारी कळपती काथा नैं । भा करणी म्हारै पूत री कीरत बड़ावण आळी है, मैं चोपी तरां जाणूं हूं इए नैं । कदास बी री ई है भा करणी ।

आछा तरां चीतो आवै है मनै बो दिन, जद राणा सांगाजी नैं महीनो भर भी नई हुयो हो सुरग सिघार्या । छेत हांनए नैं गया हा म्हारा घणी रामोजी हळ लेर । चित्तोड़ सूं दिल्ली जावण आळी गेल मायें बस्योड़ी नगरी मे रैवा हा म्हे आपरा सगा सबधियां सार्गै । बरस डभोदेक हुयो हो म्हारा पीळा हाथ हुयां, भर म्हारी भोळ्या रामजी रो रमकडो, म्हारो लाल खेलै हो उछळतोर कूदतो, भरतो किलकार्यां । मायें मटको नैं कड़िया कीकै नैं उठायां पणघट पर जावै ही मैं, कै सोनै रा गैणा सूं लदाबद मळभळातै माळगळो भेक रात्रवी पवन बेग सूं घोड़ो दोड़ातो भायो सामी तणकारी लगाम नैं . . . घोड़ो धाम्यो भर बजातां बांक्शो सुरील सुर मे, हाक धारी 'मैं राणाजी रो दूत हूं रात्र री घोवण सुणावण नैं भायो हूं ... सांभळो, चीतो लगार सांभळो इणु नैं भर प्राजमावो आपरा भाग नैं कदास चमक उठे भो इए भोसर पर । महान सांगैजी री राणी करमेती जम्हो है टावर.... मा मांदयो सूं जूमरी है ... इए सूं टावर नैं पावण सारू भेक घाय चाईजै छतराणी . असल छतराणी, रजपूती रो रगत वैवतो हुवे जिए री घमलिया मे । जेज मत करो पूगो, जेगी ई पूगो आप-आपरा टावरियां सार्गै चित्तोड़ रें रावळै । जावो, घे भी जावो, कदास धारो ई चेत जावै भाग भर मिल जावै भोसर - पावण नैं घाय रें पद रो भो गोरब ।' उड़यो केकाण पाछो पवन बेग सूं भर सुकयो घतबार सार्गै घंवर में उड़ती काळी-पाळी भर पोळी पूळ री बादळियां मे । कदास परो गयो हो.... पड़ोस रा गांवा में डूँबी फेरण नैं घाय री जोख सारू ।' × ×

राज दरबार जुद्धर्यो हो, मंत्रणा करर्या हा भेळा होयर मोटा-मोटा
सूर-सामंत । जी पूळ मैं, म्हारें ई बंस री दो दूजी गोरड्यां सागें डाण भरती
सांड्यां माथें घसवार होयर पूगी रावळें. . उठें म्हा पैलां ई पचासां गांवा
सूं घायोडी गोरड्यां री भीड देवी, मैं जो भाई ही आप-आपरा छोरा-छोर्यां
नं कडिभा उठाया, जांच करावण सारू आपरा दूध री, कं कुण रो दूध है सैं
सूं सक्कड, भर कुण री काया पर भिळमिळार्यो है किस्मत रो रुडो भर
रूपाळो सैनाण । सजाती'र सरमाती, होळें-होळें बांतां करती मैं रावळें री
ढपोडी मे वडी । राणी मा ऊमी हो सामें आपरें वूढळें पुरोहित सागें, दूध-
पूत भर गोरडिया रा भाग री जाच करण सारू । भाई प्रो भाई म्हारी
किस्मत ! तनं रुडो कंभू कं कूड ! मैं बांनं सक्कड भर साव निरोगी लागी
भर चीतूं हूं भाज ताई बी वूढळें पुरोहित रा बोल, कं म्हारें जोवरणं
कांचें भिळमिळतो साखण करर्यो हो सिद्ध मनं भाग आळीं—जूनं पुराणें
बिसासा सूं । घणवरा लोभी, लालची भर दुष्ट कागला, जे पोघो हो आपरो
मावा रो बोदो दूध, कांव-कांव करता ई रया भर म्हारो लाल, अब राणी हो
सैंस मेवाड री भोम रो । म्हारो वरण होग्यो भर नन्होसोक टाबर आण
पड्यो म्हारो चोळ्यां, गरमावण भर घावण सारू, भर जिदगीर मोत रं
मंभ होडत जीवण नं पाछो पावण सारू ।

म्हारी जामणजाई, जो भाई ही म्हारें तारें भजमावण नं आपरी भी
किस्मत, भेलियो म्हारें लाल नं भर लेगी आपरें घरा आपरें टाबर सामें
गळण नं । पण, धीजग्या जुद टाबर भर होग्या मादो पराई मावां री छाती
रा, रगणी करमेती राखणे प्रस्ताव म्हारें लाल नं पाछो रावळें सावण रो
आपरें कुंवर उंत्तिष रं आयलो बणावण सारू । मादरतो राणी रो आदेश,
बुला लियो मैं म्हारें पूत नं भो गवळें । साथ-साथ रमता, खाता-पीता, रोता-
हंसता भर दिवावता हेज बिना भिष्मक रं, सुख-दुख बटावता आपस में, धीरं-
धीरं हिळ-मिलग्या परस्पर दोई । टाबरा री सैग रूमता में म्हारो लाल,
म्हारो जसवंत सैं सूं घागें रंवतो । सरदार हो बो कुंवर री नजर मे सब रो ।
सूरवीर, साचो, सक्कड भर सतवादो हो बो भर प्रक्कल में सब सूं रग्यं ।
भर कुंवर कुंवर मादो रंवतो सदा ई, निमळीर बोदी ही बो री काया ।
तो भो गजब री प्रेरूपता पनपी बा दोई मायता में, भर दोई जोडला
सागता । दोई रजपूत हा, भेकई भात रा, दोयां री रगां मे दोडर्यो हो म्हारो
दूध, भर सत्रोग सूं बेमाता दीधी हो बानं उणियारो भेकतो, इणी बंस रं
किली पुराणें पुरखें रो ।

म्हारें हळयडतं घणी नं भी रावळें ले माया बें, घणें मान, घणें मादर,

भर घरप्या बाँनें मोटघार राणी रै रशक रै रूप । खेतोर खळी रो खवाळी छोडर रावळें में राणी रो खवाळी भादरतां पया राजी हा बँ । पया राजी हा बँ पापरें घंगं भावघ लटकातां भर डात-तरवार घाम्यां रावळें रो मोज रो जिन्दगी बितातो ।

कियां बरुन कसूं में राणी करमेतो रै उलियारै रो, त्रिए मे बीरें समतळ मन सागै ई गजब रो रूप दीयो हो बेमाता पितरो रुझो घर भितरो रूपाळो कं मोटघार होतां भी टावर ई लागै हो बा—फेर भी कांपतां किली भय सूं कदेई नी देखी में बीनै । बी रो निमळी छाती में बास हो किली करड़ें, कठोर भर साहस घाळें काळजें रो । कितरी भोळो, कितरी मधुर घर कितरी भोहाळू भा ही बा । मैं कितरी प्यार करै हो बी नै बीं बगत घागरी सँग सगनां सूं भर घाज भी प्यार कसूं हूं बी नै बिदा ई तो, ओ तो बा म्हारै हिवड़ें में रात दिन पनपती घोर घिरणा रो कारण ही, घिसी घिरणा त्रिएनै जामण, कं रो जामण, ग्हा तिसी जामण ई समझ सकै ।

भांधी-घंघड़, भगड़ा-भाटा, घागसी फूट भर कळह सूं मर्योडो हो बो जुग । रात-दिन फेरबदळ होनी रँवतो हो जमानें में । जेज कोनी लागै हो राज उलटतां घर पाट पळटतां । राणा सांगाजी मरग्या घमूभतां मन ई मन कं बांरा बिस्वामू सामज ई घो रो देग्या बाँनें भर मितग्या घणुवाणै देश भर घणुबिसासो जात में जलम्योड़ें सुगतान सूं ... आपरी मावड़-भोम री छाती में छुरो घोंपता । . महान सांगाजो रै पाटवी .. गंवार रतनै, कर दो हत्या घापरें ई सगं बूंदी रै राव रो, बमन्त री घाछेट री बेळा घर मरतां-मरतां उतारग्यो राव भी रतनै री नागो छाती में आपरी तरवार । ... मेवाड़ गी गादी मायें भव विक्रम बँडघो घगगुण्यो घुगु पोष्यां रो, बेमाता रो भारी छाप । .. काया सूं काचो घर किस्मत सूं बांदो हो बो फेर भी हो जोगो घर चोखो मिनख । मेवाड़ रै सरबनाम गी मूळ, फूट री ताकत नै जाणै हो बो चोखी तरां घर पिछाणै हो बां तोपां घर बन्दूका री ताकत नै जिलां भागै बी रै देश रो समताहीणी सेना रो सरबनास हुयो हो देखता ई देखता, कुछेक ई पुळां मे । बीरो जूने-पुराणै भावघा सूं सझ्योड़ो झेक-झेक जोघो बेसी हो घब भी कितराई चतराई बढुकचिकां सूं । घापरें गीरव घाळै कुळ री मरजादा सासू चौकड़ी भरतैं केकाण पर चढ्योडो कीसीस कीधी गो आपरा जोघां नै समझावण री, कटार भर कुंता छोडर तोपा घर बंदूकां पकड़ा-वण री भर घोड़ा सूं हेठै उतरैर आपरा खारड़ा री खुरताळां चमकातां आपरो भ्रमर दिग्यावण री । पण निपट नटारो करता भंग करदो सँग सरदार, आपरी घनुशासन री घाण नै भर परम्परा सूं चलतैं घायोड़ें राणावां रै मान नै ।

सैग निरासावां सूनं भरघोड़ी आपरी उमर सरदारा सूनं कदम कदम पर जूझतां
 घर आपरी गळतियां खोजतां बिताई विक्रम । मड़कगी बसान्दर समस्त
 सामन्तां रं काळजें घर चढाया सैग घोड़ा माथें उद्याळो करण सारू ।
 मागग्यो राणो बी डरतो विद्रोह सूनं घर देखता ई देखतां दूट पड़ी अणाचोक
 तुरकां री फोजां री फोजां घर घेर लीधो दुगं नै- फासतां म्हानें पिजस में
 फस्योड़ें मूंदरें ग्यूनं ।

उडीकता रेंया म्हे बाट रेंगु ताईं घर चिपायां री राणी मा उठा ताईं
 आपरें लाल नै काळजें । बा अब झिला दियो कुंवर नै म्हारी भोळ्यां घर
 झाल लियो में बीनं म्हारा लाल रें सागं गढ सूनं बारें निकाळण सारू । सोच
 ई री हो में कोई जतन कै पड्या सळ पड़ई माथें घर भोड़्यो जद में मूंडो तो
 देखी राणी नै पछाट लायर घरण पर पडतां । होळें सूनं-मुंडी में पाछी घर
 कंयो राणी नै—‘म्हारी राणी ! जीजां म्हारी !! मैं करू हूं घरदास थांमूं
 म्हारें सागं आवण री । वै थारें लाल रो हरण करणो चावै है घर घठें
 रेंवता वै कर देसी थारी भी हत्या बी रें जातर । आ, म्हारी जीजी ! आ,
 म्हारें सागं आ ! ओ गढ अब आपां जिसी अबळावां रो रक्षाथळ कोनी रेंयो ।
 घठें ठेरण सूनं तो कम रगताळू रेंसी म्हारें साथें आवणो, घर थारो घो लाडनो
 पूत भी रेंसी थारें ई लारें, थारी घाट्या सामें, जिएरें जातर तिरा कष्ट
 उठाया है थे । इणमूं बघर कई होसी संतोष री बात थारें वास्तै ।’ अेरू
 मून्ही सितक घर उलड़ती उसास कपा दं. बी री काया नै पर उठें बा कंती
 होळें मूं... ‘पन्ना ! बयूं करै है कियों र तरें री बात, रतपून हां गापां,
 घर में राणी हूं थों सबा री । म्हारी ठोड़ घठें है म्हारी रेंयत में .. किया
 जा सकूं में म्हागी पन्ना ! इण नै छोड़र । जे अं तुरक तोड़ भी दे गढ री
 पोळा नै, घर भांगता कोट रा कांगरा घाण पूगें इण गढ माथ, तो भो म्हारी
 इज्जत, म्हारो सत्तेत्व सुरक्षित रेंसी थणें गिएती रा हाथां में ... जो
 गिएती रा भलें ई होवो, सामरय रायें है बंरी नै कणकणती रा करण री
 घर होड़ पाळें है वै बंरी रा बंस हजार जोधावा सूनं । मोत रा मारग नै में
 चोली तरां पिछाणू म्हारी पन्ना ! बढूंती में इण पर हरण घर उमाव रें
 सागं, हमतीर मुळकती, नाचतीर कूदती । ओ मारग ले जासी म्हेनं म्हारें
 सावरियें रें देश, जठें उडीकर्या है वै म्हारी वाट पणो देर मूं । जा, घर परी
 जा म्हारी पन्ना ! छोड़जा मनं म्हारें भाग पर, घर पाळ म्हारें काळजें री कोर
 इण नान्हें कुंवर नै, छाती—रें-चिपाया आपरें लाल रें सागं ।’ ... माथो
 भुकायो में, घरण टुया घर चाल पड़ी आपरी गल माथें, पबडाता आगळ्यां
 आपरा कुंवरों नै, अणजाणें देश कानी । फेर कदेई न देग सकी में म्हारी इण

जिंदगी में करमेती रो उलियारो, रुड़ो घर रूपाळो, जिण में टिमटिमाता दो-
दो मोटा नैण देख लीघा हा मापरें भावण घाळें दुरभाग नै ।

गिराती रा ई दिन बीट्या हा म्हानं बीछठघां भर राणी कूद पड़ी बळती
नाथ में तेरा हजार गोरदियां नै सागें लेयर । कर लीघो बा जोहर भर जूझ
मरूषा जूझार केसरिया करने—तुरकां सूं जूझतां रण में । हा उठे कईक
मिसा भी जो घूजण लाग्या घर-घर करता, बीडरता भर घाड़ पाड़-पाड़
रोवता । पण म्हाारी राणी, सती करमेती कर्दई न रोकी मापरी नबीती ग़ड
निस्चंभाळी नजर, विजयाळू मुळकण भर हंसोड़ सुभाव नै, जो सुवाणभो बी
नै मोह, ममता भर दयाहीणा सळा रा घणघड़ ताकटां मायें, जाणें सूती हुबै
होयर नबीती कोई नुई नबेली तार परणेत रें पलग मायें पैलपोत रो रात ।
सदा शान्ति दीजें म्हाारा नाथ, सती रो प्रभीती आत्मा नै ।

बी ई रात उठाय़ा टाबरां नै अळसाई नोद सूं भर लेगी बांनैं धोराऊ
कानी, कोट कनै, जठे उड़ीकें हा म्हाारी बाट म्हाारा घणी, रामोजी । सौंदरो
हो सतरो कनै, जिण सूं उतार दिया बो म्हानं कोट हेठें, किलें बारें । कांपें
तोक्पां दो ई टाबरां नै उतार्या म्हे डूंगरी रें अबड़-लाबड़ उलियारें सूं,
घोरंधार मांझन रात मे लुकतार छिपता, लेता झोट भांक-भंवाडार चाठां-
भाटां रो मगरी रो तळेंटी में । पूगया म्हे रामोजी रो साय सूं भोझन मारण
रें मासरें तुरक छावणियां रें परळें पार, जठे उड़ीकें ही म्हाारी बाट बूळयें रें
रुंय हेठें बध्योड़ी सांडपां दो । जेकाई बानें भर होवतां प्रसवार, पलक मारता,
लगई म्हे रड़ी सो-सो कोसां ताईं भेक पड़ी में । भाग्या, भागता रेंया रात
भर, दिन भर भर तीजें दिन पूग्या म्हे कुंमळमेर, मेवाड़ रें घापतकाळ रें
राजस्थान । तियां रेंया मासरो उठां रो, जठा तोई भड़क न गी बसान्दर
तुरका रें बारुद मे घापोघाप अळगी जायर ।

कैवण द्यो का'णी ह्यातकारा नै रजपूता रो परपराळ सुरक्षा रें सबै
इतिहास रो, जो आफत रो बेळां सदा घोर्धा ई सिद्ध हुई । कैवण द्यो बानें
कांपें सूं कांधो भिड़ार रण में जूझता बीरा'र बीरांगणावां रो बातां भर
मापरा गांव, पाळिया घर परजा नै बचावण सारू भाशा निराशावां रा सादरा
मे गिरता-पड़ता मिनगां नै मापरी प्रसाधारण योग्यता सूं मासरो देवणमाळी
म्हाारी राणी रा चरित रो का'णियां । .. पण हाय ! सब बिरया है !

राणी मर जाणी चाबें ही ताजां मरती, फेर भी बा भेज्यो मापरें दूत नै,
राखी रें काबें घणें सगें सपता सारू अणबिसासी घर म्हेन्ध्र दिती
रें मुलतान कने, अपिकार सागें, जतावतां जामणजायें रो संबध । मूरस कवि

म्हारें जसवन्त री । म्हारो ताल मय राजकंवर हो घर उदैसिय बीरो बाकर
 भर रम्मत रो मोड़ू । जसवन्त निमार्यो हो पतराई सागें घापरो राजसी
 भमिनय भर उदैसिय कर दियो साव समपण भापरें भस्तिव रो भापरी इच्छा
 सूं । म्हे मय भी जो रैया हा सीळसोम री जिदगी । जुग-जुग जीवें म्हारो
 कुंवर ! कदे-कदे ई मन लागतो कै भेक छावळी म्हारें पसवाड़ होयर निसरगी,
 परसतां म्हारो हाथ भर म्हारो भाळ, गाळ्यां फाड़ती । प्रेत-प्रात्मा ही बा कोई
 जो कर री हो पेरवी भेक जीवतें भिनस री । बी रें प्रभाव नै परें नालती
 सुणी-मणसुणी करगी मैं भर साढ तढाया म्हारें ताल रा मणें कोड सूं ।

संतोम कर म्हारो राणी ! सतोस कर ! म्हारें मपरापां री सजा बांरा
 मनुपाता सूं बेसी ई होगी चाईजें । इण सूं ई तो हीडता रैया हा म्हे
 मणसरे घर घर घरहीणां होयर घाढावळ रा माखरा भर सादरां
 में । विक्रम सोम न सक्यो कइं भी वीरें देश मे हुयोड़ें सरबनास सूं भर हक-
 हक कर भावता भटकां सूं बगत पड़्यां सदा दुर्भागी ई रेंयो बो । सँग
 सामंत कर दियो उछाळो भर बडबडाया जोर सूं । भेक दिन मर्यें दरबार
 विक्रम, सैंस मेवाड रो घणी विक्रम, दीपो निरणो मूरखता, किणी वाद पर,
 भर कीधी भापद इण पर धीनगर रो ठार, भापरें अधिकार सूं । रोस खातो उठ्यो राणी उतावळ सागें म
 भर मार दी भापट बूडळें रें सळां भर्योड़ें गोरें गान टाबर री भर बा भी भेक कायर री भर ऊपर सूं बेहवो
 सामंत रें सागें जो कदेई दियो हो भासरो सांगा नै सागा नै जो विक्रम रो बाप हो भर सम्राट हो सँग रा-
 सक्या कोई भी इणनै उछळ पड़्या सँग भाप री दियो राजमहल भर नीसरया बारें उछाळो करण स
 भायें, पड़ै रें पसवाड़ें उडीकती बारें, जद कह्यो हो हीळें सरदारा नै ..'हालताई तो कोरा फूल सूं घ्या है
 पळ तो अवे चाखणा हे भापा नै ।' कड़क उठी कर भूवारां ताई । हाथ बांधपा मोरां पाछें धूक्यो
 लाग्यो मन ई मन चीतल ज्यूं घुरावतो । सेस्यां चोखी तरां इण रो स्वाद भापा कालेंई ।'
 रगा रो देखतां जोत वी बूडळें रा नैणां मूं नीसरती हो भपळक दुर्भागी राणी रें भाग पर । ऊमर में :
 पण जाणगी मैं चोखी-तरां कै मोत रें मूंडें । साधता बेवार मूरखता रो तर घड़ी, हर पुळ ।

कदेई सोच तक कोनी सकी मैं कै विक्रम रै भाग पर मंडारतो मोत रै
 भागै रो भो मडाए फाट पड़सी म्हां पर भो आपूमाप—भर न मैं सोच ई सकै
 हो कदेई कै म्हे भी सीरी हा बीं रै घोर सताप में । व्यापगी शाति उठै भर
 दिन पाचेक ई हुया हा म्हांनै जिन्दगी री सूदीसादीर बांकी-डोडी लीगेटी पर
 चालतां कै भेक दिन भागफाट्या ई मूं अधारै ऊभी ही मैं पलंग पथरणा छोड़र
 भरोखै माथै भर न्हाळी हेठै तो पैलपोत री नजर सागै ई घोळरूपो मैं करमचंद
 नै करतां होळै-होळै कानाफूसी उलझयोई केसां घाळै, कोयलै ज्यूं काळै उणि-
 यारै घाळै भेक दैत मूं, जिएरै काळै-कळूटै उणियारै पर चमकै हा भएभीता
 दो नैए भाळां उगळता—भर लटकै हा भंग-भंग पर आवध भांत-भात रा ।
 माथै मोड़ बांध्यां न्हाळतो आवै हो वो हर छिए हर पुळ महला री भीता पर
 भितरी तीखी, भितरी गाढ भर भितरी उतावळी नजर सागै जाणै कदेई न
 देख्या वो इणां नै इण मूं पैली भर भो सँग दिरस नुं वो ई हवै बी सारू ।
 चकराई मैं देखतां ई बानै—‘कुण हो सकै है भो मानवी ? नेचई भजनवी है
 भो—कोई पैलपोत ई भायोडो इण दुगं में ।’ बी ई पुळ गरसतां होळै मूं हाथ
 म्हारो, धीरै मूं बोल्या म्हारा नाथ... .. ‘देख ! पन्ना देख ! इण घोळै कागलै
 भर बी काळै कांवलै नै देय, जो लड़ा रैया है चूंचा भापरी—परस्पर । जाण
 पड़ै कै भानै भारी है बास कठैई भड़भड़ै ई सडते मांस री । विक्रम नै राखणी
 चाइजै नजर इण पर ।’ पूछथो मैं, ‘कुण है भो’ जद उत्तर हो म्हारै घणी रो
 ‘पन्ना ! खवासण रो जाम है भो बरावीर, पीधल रो पूत भर घणी गिरवा
 रो । हाऊ नीं है इण रो भठै भावणो सांगाजी रा बंस सारू ।’ ...निरखता
 रैया म्हे बानै उठै ताई बिछट न गया जठै तक आघा जार । .. ‘पन्ना ! जे
 भो बरावीर कर दे हत्या विक्रम री तो कई तूं कांपैली नई, धर-धर करती
 बीडरती, पाळ-पोसर मोटा करघोड़ा धारै धरमपूत भूद री जिदभी खातर ।’
 पूछ रैया हा रामोजी भर उत्तर हो म्हारो.....‘भितरो साहस कर लेसी
 वो म्हनै पतियारो कोनी’.. .. पण कापग्यो म्हारो काळजो पड़ूत्तर सागै भर
 भावण लाग्या भणाचोक, भय मूं भरघोड़ा निरासार दुरासावां रा भाव टक-
 राता म्हारै हिवड़ा मूं... .. ‘कई साची ई कर देसी हत्या म्हे म्हारा नरमोल्या
 होसा नानकियां री..... सांगाजी री इणां भाथरी घोलादां री भी.....मेवाड़
 री गादी रो घणी भेक गोलै नै, भेक पासवानियै नै बणावण सारू ? सामधरमा
 है मं सगळा सामंत कदास नई करैला मं भिसो दुस्साहस, नई करैला मं
 कपट भापरै कुळ मूं..... भितरा लाजबिहूणा होर ।..... पण... .. पण जे
 मं कर ई ले दुस्साहस पन्ना ! तो कई कर सकैली तूं म्हारा इण नाम्हां टाब-
 रिया नै, म्हारै काळजै री कोर इण नानकियां नै भो कसापा की कटारां री

म्हारें जसवन्त री । म्हारो लाल बब राजकंवर हो भर उर्दसिष बीरो चाकर
 भर रम्मत रो भीड़ू । जसवन्त निभार्यो हो चतराई सागं भापरो राजसी
 भमिनय भर उर्दसिष कर दियो साव समपंण भापरें प्रसित्तव रो भापरी इच्छा
 सूं । म्हे भव भी जो रैया हा सीळसोम रो जिदगी । जुग-जुग जीवें म्हारो
 कुंवर ! कदे-कदे ई मन लागतो कै प्रेक छावळी म्हारें पसवाड़ होयर निसरगी,
 परसतां म्हारो हाथ भर म्हारो भाळ, गाळ्यां कावर्ता । प्रेत-प्रात्मा ही बा कोई
 जो कर री ही पैरयी प्रेक जीवतें मिनत्र री । बीं रें प्रभाव नै परें नापती
 मुणी-मणमुणी करगी मैं भर साढ लढाया म्हारें लाल रा घर्षं कोढ सूं ।

संतोष कर म्हारो राणी ! सतोष कर ! म्हारें अपराधां री सजा बांरा
 अनुपांता सूं बेसी ई होणी चाईज । इण सूं ई तो हीडता रैया हां म्हे
 मणालरें घर भर घरहीणां होयर गाढावळ रा भाखरां भर लादरां
 मे विक्रम सीम न सकयो कइं भी बीरें देश मे हुयोईं सरबनास सूं भर रुक-
 रुक कर भावता भटकां सूं बगत पढ्यां सदा दुर्भागी ई रैंयो बो । संग
 सामंत कर दियो उछाळो घर बडबड़ाया जोर सूं । प्रेक दिन भर्ये दरबार
 विक्रम, सैस मेवाड़ रो घणी विक्रम, दीघो निरणो मूरखता सूं भर्योईो
 किणी वाद पर, भर कीघी भावद इण पर श्रीनगर रो ठाकर करमचंद
 भापरें अधिकार सूं । रीस खातो उठ्यो राणी उतावळ सागं भापरी गाडी सूं
 भर मार दी भापट बूडळें रें सळा भर्योईं गोरें गान मायें । घाप ! प्रेक
 टाबर री भर बा भी प्रेक कायर री भर ऊपर सूं बेहत्री बेवार प्रेक पिसें
 सामंत रें सागं जो कदेई दियो हो भासरो सागा नै भापरो भूंपड़ी मे, बी
 सांगा नै जो विक्रम रो बाप हो भर सम्राट हो संग राजस्थान रो । सह न
 सकया कोई भी इणन उछळ पढ्या संग भाप री भासंद्यां सूं, छोड़
 दियो राजमहल भर नीसरग्या बारें उछाळो करण साह । मैं ऊमी ही गोखड़े
 मायें, पड़ें रें पसवाड़ें उडीकती बारें, जद कहर्यो हो चूँडावत कानजी होळें-
 होळें सरदारा नै .. 'हातताई तो कोरा फूल सूं घ्या है ठाकरां, कोरा फूल—कड़ा
 फल तो भवें चाखणा है भापा नै ।' फड़क उठी करमचंद री मूँछ्यां भर तणगी
 भूँवारा ताई । हाथ बांध्या मोरां पाछें धूक्यो बो जमीं पर भर मुछकण
 लाग्यो मन ई मन चीतल ज्यूं घुरावतो । 'कड़ा कै मीठा..... चाल
 तेस्या चोखी तरा इण रो स्वाद भापा कालेंई ।' सीळो पड़यो रगत म्हारो
 रगा रो देखता जोत बी बूडळें रा नैंणां सूं नीसरती घोर चमक री, जो पड़ री
 ही अपळक दुर्भागी राणी रें भाग पर । ऊमर मे हाल ताई टाबर ई हो बो
 पण जाणगी मैं चोखी-तरा कै मोत रें मूँबै ऊमो श्हाळें हो बो टुकर-टुकर,
 साधता बेवार मूरखता रो हर घड़ी, हर पुळ ।

कदेई सोच तक कोनी सक्ती में कै विक्रम रै भाग पर मंडारतो मोत रै भाने रो मो मंडाए फाट पड़सी म्हां पर भी आपूआप—अर न मै सोच ई सकै ही कदेई कै म्हे भी सीरी हां बी रै धोर सताप में । व्यापगी शाति उठै घर दिन पाचेक ई हुया हा म्हांनै जिन्दगी रो सूदीसादीर बांकी-डोड़ी लीगेटी पर आलतां कै भेक दिन भागफाट्या ई मूँ अपारै ऊभी ही मै पलंग पथरणा छोड़र अरोखें माथें घर न्हाळी हेठै तो पैलपोत रो नजर सागै ई ओलह्यो में करमचद नै करता होळै-होळै कानाफूसी उलझयोड़ै केसां छाळै, कोयलें ज्यूँ काळै उलिया-यारै छाळै भेक दैत सूँ, जिएरै काळै-कळूटै उलियारै पर चमकै हा भएभीता दो नैए भाळां उगळता—अर लटकै हा भंग-भंग पर घादघ मांत-मात रा । माथें मोड़ बांध्यां न्हाळतो जावै हो वो हर बिए हर पुळ महलां रो भीता पर भितरी तोसी, भितरी गाढ अर भितरी उतावळी नजर सागै जाएँ कदेई न देख्या वो इणां नै इए मूँ पैली अर ओ संग दिस नुं'वो ई ह्वै बी सारू । अकराई मै देखतो ई बानै—'कुए हो सकै है ओ मानवी ? नेचई अजनबी है ओ—कोई पैलपोत ई आयोड़ो इए दुगं में ।' बी ई पुळ गरसतां होळै मूँ हाथ म्हारो, धीरै मूँ बोल्या म्हारा नाथ... .. 'देख ! पन्ना देख ! इए घोळै कागलें अर बी काळै कांवलें नै देख, जो लड़ा रैया है चूँचा आपरी—परस्पर । जाए पड़े कै भाने भारी है बास कठैई अड़भड़ै ई सडते मांस रो । विक्रम नै राखणी चाइजे नजर इए पर ।' पूछघो मै, 'कुए है ओ' जद उत्तर हो म्हारै घणी रो 'पन्ना ! खवासए रो जाम है ओ बणवीर, पीथल रो पूत अर घणी गिरवा रो । हाऊ नी है इए रो अठै भावणी सागाजी रा बंस सारू ।' ...निरखता रैया म्हे बानै उठै तांई विछट न गया जठै तक घाघा जार । .. 'पन्ना ! जे ओ बणवीर कर दे हत्या विक्रम रो तो कई तूँ कापैली नई, घर-घर करती बीडरती, पाळ-पोसर मोटा करघोड़ा थारै घरमपूत मूँ रो जिदगी खातर ।' पूछ रैया हा रामोजी अर उत्तर हो म्हारो.....'भितरो साहस कर लेसी वो म्हनै पतियारो कोनी'... .. पए कापग्यो म्हारो काळजो पड़ूसर सागै अर भावण लाग्या अणाचोक, मय मूँ भरघोड़ा निरासार दुरासावां रा भाव टक-राता म्हारै हिवड़ा मूँ... .. 'कई साची ई कर देसी हत्या म्हे म्हारा नरमोल्या होसा नानकियां रो.....सागाजी रो इए भावरी ओलादां रो भी... ..मेवाड़ रो गादो रो घणी भेक गोलै नै, भेक पासवानियै नै बणावण सारू ? सामघरमा है भे सगळा सामंत कदास नई करैला भे भिसो दुस्साहस, नई करैला बे कपट आपरै कुळ मूँ... .. भितरा लाजबिहूणा होर ।... . पए... .. पए जे बे कर ई ले दुस्साहस पन्ना ! तो कई कर सकैली तूँ म्हारा इए नान्हां टाब-रियां नै, म्हारै काळजै रो कोर इए नानकियां नै आं कसायां की कटारां रो

तीखी धारां सूं बचावण तातर ।' नेचई आ भेक साच हीपणी मोडी परत पाई जिएने में । कदरो ही पसरयो हो जाल आरूं कूट, कई तो दानार कई मोटधार, फंसया संग इण मोत री फांदी मेंभर म्हेकई न कर सक्या म्हे बारें बचाव सारूं । चौघता रेंया म्हे मणमणा होयर बिल-खतार बीडरता. . . बेमाता री लीला री इण परिणति री वाट देखता ।

होळें-होळें वगत बीत्यो सांसा जो म्हे ले रेंया हा... ..पणा दुवां सूं पणी आफतां सूं भरघोडी ही वा । खटखटायो में म्हारें भेजें नें उलटधो नें पलटधो कोई उपाय निकालण सारूं पण सब व्यर्थ ! सूरज धांवयो घडी डोळेंक मे ई भर पोडया टावर दूध-भात तामर भेक ई डोळ्यें पर नांखता गळबायां भेक दूसरें रें गळें में । सांमळतीर सोचती री में बंठी पसवाई कै मणाचोक भाई साद भागती मोड रा खारडां री, खड्या री खडकावण भर भर में उडतें फंदण री . भर मणाचोक भांधी-भंधार सूं जुडता-उघडता कुवाडां री खरडक भर उडतें खारडें री पमचक सागें बड्या रामाजी हाफतार नांखता निसासा . . .बोलता उलडती उसासां सागें ... 'बणवीरें कर दी है हत्या विक्रम री भर भबै भारभो है भठी नें ई करतो मन्सूबो मूदें नें मारण री । आगळ घटका दी है में कुंवाडां प्राडी, कदास रोक सकेली वा बणवीर नें कुंवाडां नें भांयर भठा ताईं घावण सूं । ... भला दे मनें म्हारो ताल भला दे... लुका लेसूं हूं बीनें म्हारें बागें मे भर निकळ जासूं कोट वारें इण ई पुळ । बाबळें ज्यूं वरळ रेंयो है बणवीर हत्या री लाळा मूडें टप-कावतो भर अवसर मारसी वो आपरें खडग सूं सांगा री इण भावरी भोलाद नें भी । उर है म्हनै, कठै ई उतार न दे वो मोत रें घाट आपणें जस-वन्त नें भी इणी तरवार सूं । दे देमनें म्हारो ताल दे दे.. .मनें म्हारो ताल दे दे ।' पूरा हुया न हुया बीरा बोल कै भाई वारलांबी पण लांबी, किली कामण रें कंठ री.सांमळ चुकी ही जिएने मे केई दाण इणी राजमहल नें इण सूं पैतां भी । वार ही आ पुळ भर पैतां ई सुरग सिधारघा किली जोधें रें सम्मान री ।

भाई..... भाती गो भगदड़ पगधियां माथें... . भारी पगां री नाद सागें भर टकरावण लागी गुरजां बज्जर होसा सककड़ किवाडो माथे । रडबडवा लागी मे भठी-उठी माळियें मे बाबळी हांयर भर सोच तक नी सकी ताल नें बचावण सारूं म्हारें घणी री दियोडी राय पर । वळ रेंयो हो जीवतो-मरतो गूगळो दिवलो मिलातो सांसा आपरी इण टाबोरिया री सास सूं । भर जप में लुळी डोलियें माथें तो भोळवी भेक छामा नें नीसरतां भार-भार उर्दसिप रें

उलियारै सूं । टकराग्या टिमटिमाता दो निरमोही नैण म्हारै नैणां सूं—भेक रोगी दूबळी पतळी लहराती काया रा । छाया भाई भर गी । घुमड़तै दिवळै री लो रै गूगळै उजास में उठघो भेक हाथ होळै-होळै उदैसिप रै भाळ माथे....
...भुठघो हुवै जाएँ बी री रिच्छा खातर । 'राणी राणी करमेती ।' पाड़ी वार में जोर सूं भर मुड़गी पाछै । होळै-होळै हालतां होठ छाया रा कह रेया हा भरदास करता ...'पन्ना ! हे म्हारी पन्ना ! बचाले म्हारै लाल नै'वावळी होगी मैं भर लुटगी संग चेतनावा म्हारी । भणमणीर भ्रमूभती मुड़गी मैं पाछीजाणै खोसली हुवै कोई संग इच्छावां म्हारी..... भण-बोल्यां उठा लीघो मैं भूदै नै भर लपेटतां राली में लुकातां उलियारो बीं री भिला दियो म्हारै पणी नै.... घरघराता, बीडरता, नैणां में गळगळा लावता भूभा हा जो म्हारै सामै । उतरग्या रामाजी उतराघ रै गळियारै भर उडीकती री मैं, ऊभो छानी-मानी, गिणती सांसां आखरी म्हारै लाल री, भितरी निर-दयी भितरी निरमोही होयर जाएँ म्हारो भर बी री कोई सम्बन्ध ई न हो । न वो म्हारो पूत हो भर न मैं ई ही बीं री जामण ।

पड़ री ही घात गुरजा री हाल ताई माळियै रा कुंवाड़ां पर । दूटग्यो दहूजो चरमरार भर बावड़गी मगदड़ पाछी, कदास लाजां मरती । चांप, किली रा पगां री आवती गी ऊपर, नै ऊपर ... हटग्यो पड़दो भेकां कानी भर भ्रूमो हो वणवीर सामै तोलतां तरवार ऊंची, भरग्यो हो रगत जिएसूं करतो रगद-चगद बी रा हाथ, बी रा भुज, बी रा केस भर बी रै चौड़े माळ नै.. घर हो री ही बी री आख्या चोळ-बोळी, साव सिद्धरी इण सूं होड पाळती । कड़क्यो वो बेग सूं भादरवै रै मेघ ज्यूं धुजातो माळियै री भीतां भर कपातो म्हारी काया नै....'तूं ई पन्ना, धाय भूदै री ? देख ! भठो देख ! आ मोत ऊभी है धारै सामै जे रजेक भी भूठ बोली तो । कठै है भूदो ?' म्है नुंवा लियो मायो घर उठादी आंगळी धूजतै हाथां पलंग कानी । उछलियो वणवीर भणचोक भर खीचतां खीसलो म्हारै लाल री काया सूं, उठाई आव-धाली मुज भर.... खच्च देखतां सिमटगी काया बेमाता री भेक ई पुळ में । उजड़गी दुनिया म्हारी खिण भर में..फूट पड़्यो फूंवारो म्हारै लाल री काया सूं, छोड़तो छाप सुरंगी सितारां री बी री चोड़ी छाती पर । खुलग्या नैण बी रा सातरी निजर सामै भर मुंदग्या बी ई पुळ सदा-सदा रै खातर । लटकगी नाडकीर गुड़कगी भूंडकी ढीली होयर भर सूग्यो पाछो होळै सूं जियां देखती भाई हूं मैं बीं नै सैकड़ां वार गुड़कतां सदा सूं । पण आज वो सोयो है सदा रै खातर, नचीतो होयर . मायड़ रै हिवड़ै नै किलकार्यां सूं भरण सारू फेर कदेई नीं उठेली वो ।

बड़बड़ायो बणबीर, भ्रंक उद्दाम लल्लल्लाटे सार्ग 'भव राणो हूं मैं
इणी पुळ सूं इण भोम रो' बावड़भ्यो बरड़ातोरो परोभ्यो लड़लड़ातो छारड़ा
उतरतो माळियें सूं हेठें । परी, गों साद दूर, घण दूर, दूबती राजमहल रो
सूनाड़ में । भर छोड़गी वा छाया भी, घस मेली ही जो म्हारी काया नै, म्हारै
मन भर म्हारें हिवड़ नै घणी देर सूं, कराती भान मन म्हारी करणी रो, जो
भाग हो इण रा फळां रो लार-लार म्हारें घतस में । हत्यारो ही मैं मरा
नांढ्यो मैं म्हारें ई लाल नै... .. सूत्यो हो जो सुख भर नोद, करतो सोरो
म्हारो जीव भर म्हारी काया नै । संमळ न सकी मैं..... लड़लड़ावा लाग्या
पण भर लुळा लागी रड़बड़ती भेकली, लातां ठोकरा मंधारें में । गुड़ती-पड़ती,
खावती तांबरा, पड़गी मैं पिलग मार्थ भर होगी निळाळ भर परस्या पाव
म्हारें पूत रा, होता जादूया हा जो सीळा घणें वेग सूं । अणचोक भायो
भाव म्हारें घंतस मे भर भरणभरणयो म्हारी काया नै बवड़ातां पाछी मन
होस में होगी, होणी ही जो होगी जिवड़ा..... बळि भी भव तो पूरण
होगी । घणी मूरखता होवेली सब जे धारें लाल रो भो बळिदान घंळो ई
जावें । होणी चाईजें जाणकारी किणी नै मी कं बळि पर भरप्योड़ो भो निर-
दोष टावर पत्रा रो पूत है ।

घांळल्यो मैं म्हारें लाल नै.. .. म्हारें काळजियें रो कोर नै..... मुरभा-
योड़ो मुखड़ी जिण रो, छितरायोड़ो हो रगत बी रो चोड़ो छातो पर । चाई मैं
घाभूपण माणक-मोत्यां रा घाळें सूं भर बाध दिया बी रें कंठ, बी रो भुजा
भर बीरा पूं चां रें मोळदोळ । कितरो रूड़ो घर कितरो ह्पाळो लागे हो यो....
लीधो मैं बाच्यो बीरें भाळ पर भर यसगो म्हारी भावनावां म्हारी उजड़ी
आशावां रा घोर उकसावा सूं । चाई म्हारें कनै अंक लुगाई डरती बीडरती
धरधराती वेग सूं भर उडीकण लागी म्हनै जो बड़बडावें ही सन्निपात में,
बाघ्योड़ी ही भूठिया म्हारी, कूटें हो छातो, हंसती भर रोती बरड़ाती बावळी
ज्यूं भर करतो जादूयो हो घाख्या सूं भाषो परनाळो उकळता आसुवा
रो । घंतस मे आवण घाळें घण करड़ें तणाव मे भी रात मेल्यो हो मैं
बाघ्योड़ो भेक रहस नै, पाळती हिवड़ा मंभ मापरो बोदी चतराई रें घासरें
..... निरडोस रगत बैणो न चाईजें घंळो ई... .. भर कुवर रो रिच्छा
खातर करणी चाईजें मन घसी करणी जो भर्योड़ो हुवें छलछदम सूं सगळें
धानी उठा ताई जठा तक पनप न जावें घा झूठ निपट सांच में ।

म्हारा भाया ! कइं कंयो तूं "मूरज मांघयो" मैं सोचूं कं
पसरर्यो है यचरज भर्यो उजाळो चारुंमेर भर फूल रेंपा है फूलड़ा लाल-

पीछा नै घोळा रंग-विरंगा सँग चराचर में । मै देखा है वानं काल ई तो
 घर लेती रो हूं बास मीठी-मीठी बी रो सांसां रो सागं जीवन काळ रो इण
 जोरणाभी छाती में । क्यूं दाबै है म्हारो हाथ..... घर क्यूं बोलै है बोल
 म्हनै ? लेवण दे म्हनै प्रणत शांति । सांभळ...पैली सांभळ म्हारा बोल,
 पूरी करूं हूं मै म्हारी का'णी । भा भासरी बगत है म्हारा पूत जद करी हूं
 तर्न हेत सूं ।... .. बी रात बंशुण्यो हो सळो, राजसी ठाठ नूं, काठ रो, घर
 मोझयो हो बी पर धणं मान धणं भादर म्हारै लान नै . रागावां रै जोग
 सँग सस्कारां सागं लगायो बं लापो । देखती रो मै घर देखूं हू अब ताई भळ-
 हळती भाळां घर घुमड़तो धुवाड़ोघेक सहराती लपट, उड़ै ही जो सुरग
 ताई सरंग तक । न्हाळ म्हारा लाल न्हाळ ! सगळो जगत जगमगा रैचो है
 सतरंगै उजास सूं । कितरो स्वादू घर सोरभभाळी है इण फूलं रो बास ।
 ब्यापरधो है उजाळो म्हारै मोळदोळ घर लागं है म्हनै जाणै होगी मै मोटघार
 फेर सूं । म्हारी कथा....बणगी अब सहराती धुंधराळी धुंधाड़ै रो बादळो ।
 बादळी .. उकेरती घेक भिळमिळतो उणियारो, भागती मरपट, हेठै ढाळ सूं
 सतरंगी उजास सागं । कितरो रुड़ो, कितरो रूपाळो भिळमिळतो उणियारो है
 बी रो.....सुरंगी सितारा ! म्हारा लाल ! म्हारा लाल !!

भरतियाजी की जीवण-लीला उणां की 61 बरस की ऊमर में संवत् 1971 में इंदौर में समाप्त हुयी ।

(2)

भरतियाजी के जीवण की सब सूँ बड़ी उपलब्धि ही उणां द्वारा करी गयी राजस्थानी भाषा और साहित्य की सेवा । उणां साहित्य नै समाज सूँ रसी भर भी जुदो कोनी राख्यो । राजस्थानी जन-जीवण के स्तर नै उणां आँखयाँ खोलने देख्यो, नै देख्यो के राजस्थान की जन-संस्कृति, साहित्य, भाषा और प्रतिष्ठा—सगळी नै लोग हीण दीठ सूँ देखे है । राजस्थानी जन की आँखयाँ खोलण सारू उणां कलम उठावी भर लोगाँ नै दरसायो के भाषा की समाज रसातल नै जाय रेयो है, 'मारवाड़ी' नाँव की महत्ता घट रेयी है और आपणी भाषा की तो लुटिया ही दूब रेयो है !

गैराई सूँ सोचण पर उणां नै राजस्थानी समाज की अपमानजनक अवस्था की मूल कारण अत-पंत ओ लाग्यो के समाज में अजै ताई शिक्षा की घोर प्रसार है । इण नै मिटायाँ बिना समाज सुधरण की कोनी, मारवाड़ी 'मारवाड़ी' ही रेसी । शिक्षा के प्रचार-प्रसार सारू उणां जनता की बोली नै ही माध्यम बणावणो ठीक समझ्यो । मातृभाषा सूँ आँखो दूजी भाषा किये तरे दूय सकै है ? उणां की मीट में आ बात आयी के 'मारवाड़ी' की उद्धार मारवाड़ी भाषा ही कर सकै है—

"मारवाड़ी भाषा आपणी मातृभाषा छे । मारवाड़ी भाषा आपणी बोध-दात्री छे और मारवाड़ी भाषा आपणी स्त्रियाँ की सुधारकर्त्री छे । म्हारे तो सिद्धांत छे के भाषा लोगाँ की लक्ष्य आपणी मातृभाषा मारवाड़ी कानी नहीं रहणें सूँ आपणो समाज हान ताई इसी हीन दशा माँहे पड़्यो हुयो छे । मारवाड़ी भाषा विश्वविद्यालय तो दूर तथापि छोटी-मोटी पाठशाला ताई भी पूग जाती तो परणकरा मारवाड़ी सरदार विद्वान बण जाते । आप १
भाषा नै हीण समझणें सूँ आपणो उद्धार हो सके ?"

कीनी नहीं। छोटी-मोटी कोई पुस्तक बणाय ने सरदारों के सामने रखणी तो खरी। देखा भला, घादर होवे के घनादर होवे।'

मातृभाषा में रचना करण री उणां री इच्छा इण कारण भी ही कं मशिक्षित मारवाड़ी भनै उणां री लुगायां तो इण रै भलावा भारत री दूजी भाषावां नै जावक-ई को जाएं ही नी, फेर उणां भाषावां में लिखण सूं मारवाड़ी समाज नै काई फायदो ? भेक घोर भी सबळ कारणे राजस्थानी में लिखण रो उणां भो बतायो कं उण सर्म इण भाषा रो साहित्य दूजी भाषावां रै साहित्य सूं जावक ही थोड़ो लिख्यो जा रैथो हो। राजस्थानी रै गौरव नै भी दुनिया रै सामन लावणो हो। 'केसर-विलास' री भूमिका में उणां लिख्यो है—

'भापणो नोकोटी मारवाड़ घोर मारवाड़ी बोली कठो के भधेरा माहे पड़ी छे, सूं भाप जाणो नहीं काई ? भधेजी तो रैवा दधो पण बंगाली, गुजराती, मरेटी, हिन्दी कानी तो जरा नजर करो, किशा-किशा ग्रंथ इणां भाषा माहे तैमार हुवा छे घोर हो रह्या छे तिकां री गिणती नही। भापणी मारवाड़ी बोली भाज इभा सुधार का कळास ऊपर पूग्योड़ी दुनिया माहे पण भधेरी गुफा के मंदर गोता जाती रखे, इण को भभिमान भाप सरदारों ने नहीं काई ?'

पर भरतियाजी राजस्थानी समाज नै भधेरी गुफा सूं वारे लावण सारू कमर कसो घोर भाप री कलम री जागती जोत सूं उण रो मार्ग प्रशस्त करण रो प्रयास करधो, घरघूट प्रयास करधो।

(3)

भरतियाजी री लिखघोड़ी पुस्तकां री संख्या राजस्थानी में 9, हिंदी में 17, मराठी मे 13 पर संस्कृत मे 3 है। सं. 1963 में छपो 'बुढापा की सगाई' नाटक रै छेड़लै पृष्ठ रै विज्ञापन में उणां री रचित पोथ्यां री विवरण इण भात है—

"सिद्धेदुचद्रिका (संस्कृत, मराठी), गीतार्थ-पद्यावळी (मराठी), केसर-विलास (मारवाड़ी)—दूसरी बार छप रही छे, कनकसुन्दर (मारवाड़ी), प्रवास-कुमुभावली गुच्छ 10 (हिंदी), बुढापा की सगाई—नाटक (मारवाड़ी), मोत्यां की कंठी (मारवाड़ी), गुर्वष्टक (संस्कृत), राज्यारोहण-प्रशस्ति (संस्कृत) शोककानन (हिंदी)।

लिखकर तैमार—फाटका-जंजाळ नाटक (मारवाड़ी), भतिविलास नाटक

मरतिबाजी की जीवण-लीला उणा की 61 बरस की ऊमर में संवत् 1971 में इंदौर में समाप्त हुयी ।

(2)

मरतिबाजी के जीवण की सब सूं बड़ी उपलब्धि ही उणां द्वारा करी गयी राजस्थानी भाषा और साहित्य की सेवा । उणां साहित्य नै समाज सूं रती मर भी जुदो कोनी राख्यो । राजस्थानी जन-जीवण के स्तर नै उणां ग्रंथों खोलनै देख्यो, नै देख्यो के राजस्थान की जन-संस्कृति, साहित्य, भाषा और प्रतिष्ठा—सगळा नै लोग होण दीठ सूं देखै है । राजस्थानी जन की ग्रंथों खोलण सारू उणां कलम उठायो भर लोगा नै दरसायो के भाषां की समाज रसातळ नै जाम रैंयो है, 'मारवाड़ी' नांव की महत्ता घट रैंयी है और आपणी भाषा की तो लुटिया ही डूब रैंयी है !

गैराई सूं सोचण पर उणा नै राजस्थानी समाज की अपमानजनक अवस्था की मूळ कारण अत-पंत ओ लाग्यो के समाज में अर्ज ताई शिक्षा की घोर प्रसार है । इण नै मिटायां बिना समाज सुधारण की कोनी, मारवाड़ी 'मारवाड़ी' ही रैंसो । शिक्षा के प्रचार-प्रसार सारू उणां जनता की बोली नै ही माध्यम बणावणो ठीक समझ्यो । मातृभाषा सूं आछी ढूजी भाषा किए तरै हुय सकै है ? उणां की मीठ में आ बात आयो के 'मारवाड़ी' की उद्धार मारवाड़ी भाषा ही कर सकै है—

“मारवाड़ी भाषा आपणी मातृभाषा छे । मारवाड़ी भाषा आपणी बोध-दात्री छे और मारवाड़ी भाषा आपणी स्त्रियां की मुखारकर्त्री छे । ग्हारो तो सिद्धांत छे के भाषां लोगां की लक्ष्य आपणी मातृभाषा मारवाड़ी कानी नहीं रहणें सूं आपणो समाज हाल ताई इशी हीन दशा मांहे पड़्यो हुयो छे । मारवाड़ी भाषा विश्वविद्यालय तो दूर तथापि छोटी-मोटी पाठशाळा ताई भी पूग जाती तो घरखरा मारवाड़ी सरदार विद्वान बण जाता । आपणी मातृ-भाषा नै हीण समझणें सूं आपणो उद्धार किए तरै हो सके ?”

(‘कनक-सुंदर’ की भूमिका)

‘केसर-विलास’ नाटक की भूमिका में उणां की मातृभाषा के प्रति आ हूस इण रूप में प्रगट हुयी है—

‘ग्हारा दिल मांहे हमेशा विचार आवता के भाषां वाण्यां के कुळ मांहे जनम तीनो, रजगार-बंधो मोकळो कीनी, दो-चार भाषा को घम्यास करने सैंकड़ों पुस्तकां बांधी और संस्कृत, मरेटी, हिन्दी मांहे रचना भी करो, कविता मोकळी कीनी, पण आपणी जनम-भाषा मारवाड़ी तिका कानी तो नजर भी

कोनी नहीं। छोटी-मोटी कोई पुस्तक बनाय ने सरदारों के सामने रखणी तो खरी। देखा भला, घादर होवे के घनादर होवे।'

मातृभाषा में रचना करण री उणां री इच्छा इए कारण भी ही के प्रशिक्षित मारवाड़ी अनै उणां री तुगायां तो इए रँ प्रतावा भारत री दूसी भाषावां नँ जावक-ई को जाएं ही नीं, फेर उणां भाषावां में लिखण सूं मारवाड़ी समाज नँ काई फायदो ? मेक धोर भी सबळ कारणे राजस्थानी में लिखण रो उणां भो बतायो के उए समे इए भाषा रो साहित्य दूसी भाषावां रँ साहित्य सूं जावक ही थोड़ी लिख्यो जा रँथो हो। राजस्थानी रँ गौरव नँ भो दुनिया रँ सामने लावणो हो। 'केसर-विलास' री भूमिका में उणां लिख्यो है—

'भापणो नोकोटी मारवाड़ धोर मारवाड़ी बोली कठो के भंधेरा माहे पड़ी छे, सूं भाप जाणो नहीं काई ? भंधेजी तो रँवा दधो पए बंगाली, गुजराती, मरोटी, हिन्दी कानी तो जरा नजर करो, किशा-किशा ग्रंथ इणां भाषा माहे तैयार हुवा छे धोर हो रह्या छे तिकां री गिणती नहीं। भापणी मारवाड़ी बोली भाज इशा सुधार का कळास ऊपर पूग्योड़ी दुनिया माहे पए भंधेरी गुफा के भंदर मोता लाती रव्हे, इए को भमिमान भाप सरदारों ने नहीं काई ?'

प्रर भरतियाजी राजस्थानी समाज नँ भंधेरी गुफा सूं वारें लावण सारू कमर कसो धोर भाप री कलम रो जागती जोत सूं उण रो मार्ग प्रशस्त करण रो प्रयास करधो, धरद्वष्ट प्रयास करधो।

(3)

भरतियाजी री लिखथोड़ी पुस्तकां री संख्या राजस्थानी मे 9, हिंदी में 17, मराठी मे 13 धर संस्कृत मे 3 है। सं. 1963 में छपी 'बुढापा की सगाई' नाटक रँ छेड़लै पृष्ठ रँ विज्ञापन में उणां री रचित पोथ्यां रो विवरण इए भांत है—

"सिद्धोदुचद्रिका (संस्कृत, मराठी), गीतार्थ-पदमावली (मराठी), केसर-विलास (मारवाड़ी)—दूसरी बार छप रही छे, कनकमुन्दर (मारवाड़ी), प्रवास-कुसुमावली गुच्छ 10 (हिंदी), बुढापा की सगाई—नाटक (मारवाड़ी), मोत्यां की कंठी (मारवाड़ी), गुर्वण्टक (संस्कृत), राज्यारोहण-प्रशस्ति (संस्कृत) शोककानन (हिंदी)।

लिखकर तैयार—फाटका-जंजाळ नाटक (मारवाड़ी), मतिविलास नाटक

भरतियाजी री जीवण-लीला उणां री 61 बरस री ऊमर मे संवत् 1971 मे इंदौर मे समाप्त हुयी ।

(2)

भरतियाजी री जीवण री सब सून बड़ी उपलब्धि ही उणां द्वारा करी गयी राजस्थानी भाषा और साहित्य री सेवा । उणां साहित्य नै समाज सून रती भर भी जुदो कोनो राष्ट्रो । राजस्थानी जन-जीवण री स्तर नै उणां ग्रन्थों खोलनै देख्यो, नै देख्यो कै राजस्थान री जन-संस्कृति, साहित्य, भाषा और प्रतिष्ठा—सगळों नै लोग होण दीठ सून देखै है । राजस्थानी जन री ग्रन्थों खोलण सारू उणां कलम उठायी भर लोगां नै दरसायो कै भाषा री समाज रसातल नै जाय रँयो है, 'मारवाड़ी' नांव री महत्ता घट रँयी है और आपणी भाषा री तो लुटिया ही डूब रँयो है !

गैराई सून सोचण पर उणां नै राजस्थानी समाज री अपमानजनक अवस्था री मूल कारण अंत-अंत ओ लाग्यो के समाज में अजै ताई प्रशिक्षा री घोर प्रसार है । इण नै मिटायां बिना समाज सुधारण री कोनी, मारवाड़ी 'मारवाड़ी' ही रँसी । शिक्षा री प्रचार-प्रसार सारू उणां जनता री बोली नै हो माध्यम बणावणो ठीक समझ्यो । मातृभाषा सून आधी हूजी भाषा किए तरै हुय सकै है ? उणां री मीठ में आ बात भाषी कै 'मारवाड़ी' री उद्धार मारवाड़ी भाषा ही कर सकै है—

"मारवाड़ी भाषा आपणी मातृभाषा छे । मारवाड़ी भाषा आपणी बोध-दात्री छे और मारवाड़ी भाषा आपणी स्त्रियां की सुधारकर्त्री छे । म्हारे तो सिद्धांत छे के भाषा लोगां की लक्ष्य आपणी मातृभाषा मारवाड़ी कानी नहीं रह्यो सून आपणो समाज हाल ताई इसी हीन दशा महि पड़्यो हुयो छे । मारवाड़ी भाषा विश्वविद्यालय तो दूर तथापि छोटी-मोटी पाठशाळा ताई भी पूग जाती तो पहिलारा मारवाड़ी सरदार विद्वान बण जाता । आपणी मातृ-भाषा ने हीण समझ्यो सून आपणो उद्धार किए तरै हो सके ?"

('कनक-मुंदर' री भूमिका)

'केसर-बिलास' नाटक री भूमिका में उणां री मातृभाषा री प्रति आ हूँस इण रूप मे प्रगट हुयी है—

'म्हारा दिल माहे हमेशा विचार भावता के भाषा वाण्यां के बुल माहे जनम लीनो, रजवार-पंपो मोकळो कीनो, दो-चार भाषा को ग्रन्थास करने सँकड़ो पुस्तका बाँची और संस्कृत, मरेटी, हिन्दी माहे रचना भी करो, कविता मोकळो कीनो, पण आपणी जनम-भाषा मारवाड़ी तिका कानी तो नजर भी

कीनी नहीं। छोटी-मोटी कोई पुस्तक बणाय ने सरदारों के सामने रखणी तो खरी। देखा मला, घादर होवे के घनादर होवे।'

मातृभाषा में रचना करण री उणां री इच्छा इए कारण भी ही के प्रशिक्षित मारवाड़ी भनै उणां री लुगायां तो इए रै अलावा भारत री दूसी भाषावां नै जावक-ई को जाएँ ही नी, फेर उणां भाषावां में लिखण सूं मारवाड़ी समाज नै काई फायदो? भेक और भी सबल कारण राजस्थानी में लिखण री उणां मो बतायो के उए समे इए भाषा री साहित्य दूसी भाषावां रै साहित्य सूं जावक ही थोड़ो लिख्यो जा रँयो हो। राजस्थानी रै गौरव नै भी दुनिया रै सामने लावणो हो। 'केसर-विलास' री भूमिका में उणां लिख्यो है—

'भाषणो नोकोटी मारवाड़ और मारवाड़ी बोली कठो के भंघेरा मांहे पड़ी छे, सूं भाप जाणो नही काई? भंघेजी तो रँवा दघो पण बंगाली, गुजराती, मरेटी, हिन्दी कानी तो जरा नजर करो, किशा-किशा ग्रंथ इणां भाषा मांहे तैयार हुवा छे और हो रह्या छे निकां री गिणती नही। भाषणी मारवाड़ी बोली आज इशा सुधार का कळास ऊपर पूग्योड़ी दुनिया मांहे पण भंघेरी गुफा के भंदर गोता खाती रव्हे, इए को अभिमान भाप सरदारों ने नहीं काई?'

अर भरतियाजी राजस्थानी समाज नै भंघेरी गुफा सूं वारें लावण सारू कमर कसी और भाप री कलम री जागती जोत सूं उण री मार्ग प्रशस्त करण री प्रयास करघो, धरछूट प्रयास करघो।

(3)

भरतियाजी री लिखघोड़ी पुस्तकां री संख्या राजस्थानी में 9, हिंदी में 17, मराठी में 11 अर संस्कृत में 3 है। सं. 1963 में छपी 'बुढापा की सगाई' नाटक रै छेड़लै पृष्ठ रै विज्ञापन में उणां री रचित पोम्पां री विवरण इए भांत है—

"सिद्धे दुचद्रिका (संस्कृत, मराठी), गीतार्थ-पदयावली (मराठी), केसर-विलास (मारवाड़ी)—दूसरी बार छप रही छे, कनकमुन्दर (मारवाड़ी), प्रवास-कुसुमावली गुच्छ 10 (हिंदी), बुढापा की सगाई—नाटक (मारवाड़ी), मोत्यां की कंठी (मारवाड़ी), गुर्वष्टक (संस्कृत), राग्यारोहण-प्रशस्ति (संस्कृत) शोककानन (हिंदी)।

अकर तैयार—फाटका-जंजाळ नाटक (मारवाड़ी), मतिविलास नाटक

(मराठी), अनुताप तीर्थ शतक (मराठी), भार्या लहरी (मराठी), विज्ञान पाशुपत (हिंदी) ।

तयार हो रही छै—प्रब क्या करना चाहिए ? (हिंदी, मराठी, गुजराती, बंगाली और मारवाड़ी), बोधदर्पण (मारवाड़ी) ।

भरतियाजी की मारवाड़ी छप्पोड़ी पोथी 'सूर्यचक्रवर्ष' मिलै है जिकी उणां रै 'विचार-दर्शन' नांव रै भेक विशाल ग्रंथ रो भेक भंश है । उण रो विषय योग-विद्या और वेदांत सूं सम्बन्धित है ।

पोथी लिखण रै सिवा उणां हिंदी पत्र 'वैश्वोपकारक' रै संपादन में भी धणो सहयोग दियो । सामयिक समस्यावां पर उणा रा जिका विचार हा बै मोकळी कहाण्यां भर निबंधां रै रूप में उण मे नियमिन रूप सूं प्रकाशित हुया हा ।

भरतियाजी की राजस्थानी रचनावां मे 'कनक-सुन्दर' नांव की कृति राजस्थानी भाषा रो पैलो उपन्यास है और भरतियाजी की प्रतिनिधि राजस्थानी रचना मानी जा सकै है । उण रो पैलो भाग ही छप सक्यो, दूसरो भाग प्रकाश में नहीं आयो । ओ उपन्यास उण टैम प्रकाशित हुयो जद हिंदी में चंद्रकांता-संतति, भूतनाथ जिसा तिलस्मी नै जासूसी उपन्यासां रो बोलबालो हो । कनक-सुन्दर सामाजिक उपन्यास है । इण मे उण टैम रै मारवाड़ी समाज की कथा नै जिए सरस ढंग सूं प्रस्तुत करी है उण नै देखने लोग धणा प्रभावित हुया । कनक और सुन्दर इण उपन्यास रा नायक-नायिका है जिकां रो प्रारंभिक जीवण हो ते भाग में आ पायो है । उपन्यास रो प्रारंभ इण मात हुवै—'दोपहर को वणत । चारघां कानी लू चाल रही छे । हवा का जोर सूं बाळू मठी-की-उठीने उड़-उड़कर बी-का नवा-नवा टीबा हो रह्या छै, और भीजण भी रह्या छे, मुंह ऊंचो कर सामने चालणो मुस्कल छे । लू कपड़ा माहि बड़कर सारा सरीर ने सिकताव कर रही छे । घूप इसी जोर की पड़ रही छे के जमी ऊपर पग देणो मुस्कल छे । रास्ता माहि दूर-दूर कठेही भाड़ को नांव नही । बाळू उड़कर जगां-जगां नवा टीबा होणे सूं रास्ते को ठिकाणो नहीं । घादमीं तो दूर, रास्ता माहि कोई जीव-जिनावर को भी दरसण नहीं । इजे वसत भेक जवान घादमी जिए की उमर सोळा सत्रा बरस की थी, मायो कपड़ा सूं बंध्यो हुवो, हुश-हुश करतो-करतो मजमेर कानी चल्थो आ रह्यो छे । रेती गरम होणे सूं पग के चरका लागकर फोडा आ रह्यो छे, तो भी जोर सूं चाल रह्यो छे ।'

उपन्यास मे मापणें देश में फैली फूट की जिकी कमजोरी ही उण कानी

भी भरतियाजी संकेत करण में कोनी चूक्या 'मपणा देश माहे भेको नहीं जरां तो आपणी राज्यसत्ता पराया गोमां के हाथ गयी ... देखकर सारा भट बोल्या के भा तो 'फूट' छे । साहेब हंसकर बोल्या के भा इशो अनोखो फळ धारा देश माहे छे जरां तो म्हा लोमां को राज हुवो; नहीं तो म्हांकी काई मगदूर धी सू हजारों कोस पर आकर धाके ऊपर हकूमत करता ? इण माहे काई भूट छे । इण फूट तो सारा देश को सत्यानाश कर दीनो ।'

‘किसर-विनास’ (प्रकाशन समे संवत् 1957) भरतियाजी रो पैली राजस्थानी रचना और राजस्थानी रो पैलो नाटक है । इण आदर्शोन्मुखी यथार्थवादो नाटक रो स्वाभाविकता और यथार्थवादिता हिंदी र पंडित महावीरप्रसाद द्विवेदी न भी घणा प्रभावित करधा । उणां ‘सरस्वती’ में लिह्यो—रचना इसको बहुत ही स्वाभाविक है । कही-कही पढ़ते समय, स्वाभाविकता का इतना आविर्भाव हो उठता है कि इस बात की विस्मृति हो जाती है कि कल्पित कथा पढ़ रहे हैं । (सरस्वती, अक्टूबर, 1904, पृ. 368) इण नाटक में अणमेळ व्याव रो समस्या उठायी है । अणमेळ व्याव रो बुराई बतायन समाज नै उण सूं विमुख करणो ही इण रो ध्येय है ।

घर लगभग भा ही समस्या ‘बुढ़ापा की सगाई’ नाटक (प्रकाशन समे संवत् 1963) मे उठायी है । भरतियाजी इण रो भूमिका में लिह्यो है—‘इण माहे स्त्रियों को स्वतंत्रता की हृद, बीं का परिणाम बुढ़ापा माहे व्याव की इच्छा, बीं को अविचार, सगाई, बीं को बंधन और बीं बंधन को परिणाम, इत्यादि सरल मारवाड़ी बोली माहे दरसाया छे । जगा-जगां नीति, उपदेश, बोध, निशा, धर्म और विचार को बण्यो जठे ताई उल्लेख कीनो छे । मारवाड़ी समाज की स्थिति, घर की और बाहर की बातों, विचार की भिन्नता, पचायत और स्त्री-पुरुष का बरताव पर खूब विचार करके कथाभाग इशो जमायो छे के जाणे भा इसी-ते-इशो कठे हुवोड़ी सांची बात छे ।’

‘फाटका-जंजाळ (रचना समे संवत् 1964) भरतियाजी रो तीसरो नाटक है । उणां इण में मारवाड़ी समाज नै फाटका (सट्टा) घर इण सरीखा दूसरा दुपुंणां सूं हुवणवाळा नुकसाण रो चितराम लिह्यो है—‘प्रेम अनुभव बिना जाण्यो जावे नहीं । अधुपान करणां बिना बीं की माधुरी मानम होवे नहीं । जिए सूं अनिर्वचनीय आनंद होवे, जडीने हृदय लिचीजे, जिए के वास्ते प्रबळ इच्छा उत्पन्न होवे और जिए का नाम सूं हृदय स्नेहपूर्ण होवे वो ही प्रेम । ओ भाव परस्पर को हृदय भेक के कानी भेक ने मीवे । बीजळी का तार का ठोका के ज्यूं भेक का हृदय ऊपर भेक का हृदय को घाघात करे । प्रेम का

भाव, प्रेम को मावुक और प्रेम की भावना इणा माहे सूं भेक को भी तोप हो जावे तो फिर दूजो रहे नहीं ।'

भरतियाजी री साहित्य-सेवा री मूळ प्रेरणा समाज-सुधार घर देश रो उत्थान है। विदेशी शोषण कानी भी उणां रो ध्यान हो—'भगरेज लोगा कानी तो जरा नजर करो, घठे सूं माटी के नाई पावड़ा सूं रुपया खींचकर आपका देस ने ले जाकर इन्द्रपुरी बना दीनो छे ।' भपणा देश ने मिलारी कर दीनो छे ।'

समाज-सेवा री भरतियाजी री कितो हूंसी ही, 'कनक-सुन्दर' री भूमिका रें इण उद्धरण सूं भा भाछी तरें जाणी जा सक है—

" 'हाय पैसो ! हाय पैसो !' करवाळा म्हारा सारा सरदारां ने राजा-महाराजा घर श्रीमंत बणाकर, हळका छळ-छिद्र का वेपार सूं छुटाकर सरा-सरा वेश्य बणा द्यूं, उण की सारी कुरीतां भेट द्यूं, उणका घर को सुधार कर द्यूं, उणकी फिजूल-खर्ची मिटा द्यूं, उणकी राहरीत सुधार द्यूं, उण का बाळबिवाह रोक द्यूं, उण का बेजोड़ ब्याव नहीं होबा द्यूं, मोटघारां ने विदधा सिलाकर स्त्रियां ने शाणी कर द्यूं और वेश्या भी नही बोल सके उणा फीटा बोलां का गीत गावणा छुटा द्यूं ।"

स्त्री-शिक्षा रा बै गैरा हिमायती हा । नारी री हीण भवस्था देख-देखने उणां रो काळजो कटीज्या करतो । नारी नै उण री महानता और उण री जिम्मेवारी जतावण रो उणां जबरदस्त प्रयास करघो हो । उणां 'कनक-सुन्दर' री भूमिका में इण बाबत आप रा विचार प्रकट करघा है ।

भाषा रें संबध में भी उणां रा विचार स्पष्ट नै महत्वपूर्ण हा । कोई भी राष्ट्र जद ही सबळ हुय सक है जद उण री भाषा भेक हुवं । 'कनक-सुन्दर' मे उणां लिख्यो है—

"हर-भेक देश री सर्वत्र भेक भाषा होणी अत्यन्त आवश्यक छे । यूरोप, अमेरिका, विगेरा माहे भेक भाषा होणे सूं उण लोगां की दृढ भेकता होकर बे भाब सारी दुनियां माहे श्रेष्ठ हो रह्या छे । आपणा हिंदुस्तान की भेक भाषा होती तो भाज आपणा देश की इसी भवनति होती नहीं ।"

आपणें राष्ट्र रें इण मांत रें मूर्धन्य विचारक मनै समाजसेवी और राज-स्थान-भारती रें सपूत-भूत री सेवावां रें प्रति सही-सही आभार तो जद ही मान्यो जावेला जद के उण री नै उण रें समै रा दूजा प्रवासी राजस्थानी साहित्यकारां री सारी रचनावां नै अविनाश माछे-सूं-माछे रूप मे प्रकाशित करायनै उणा रो प्रचार करांला ।

राजस्थानी रें इण समर्थ सेवक री अमर स्मृति नै पुनः पुनः प्रणाम ।

राजस्थान र इतिहास माथे भूगोल रो असर

जहूरखां मेहर

भूगोल घर तवारीख रो घणो नेहो नातो है घर दोनुदं अक बीजं सूं काठा जुड़-योड़ा है। इण बात नै रिचर्ड हैक्सलूट,¹ हेनरी वक्कल,² ई. ई. केलेट,³ मे. अफ. पोलांड,⁴ रिचर्ड हैक्स्टर,⁵ बी. अ. स्मिथ⁶ घर हेरोडोटस⁷ सरीखा धुरन्दरा अंगोकारी है। सायद इण सारुं इणो सगळो इतिहास अनै भूगोल में काठो नातो मानियो कें तवारीख मे मिनखां री करणी रो सेखो-जोखो रहे घर मिनखां री करणी माथे पाब-हवा, सिमाळो घर उन्नाळो घणो असर नाखे। जळवायु रोजीनाई मानखे रें जीवन-दर्शण घर जीवण-पद्धति रें मूळ में रेंवै है घर उणा रीं आधिक, सामाजिक, राजनैतिक, सांस्कृतिक घर वैचारिक परम्परावां ने अक खास तरें सूं ढाळण मे घणो हाथ राखे। टंडा रा अक्कीमोज, समन्दर सूं घिरयोड़ा डेन्स, पुराणी नदिमां आळी ब्यारुई सम्य-तावां, हिमालं रा सेरपावां, थली रें वासियां बीजां रें रोबमरी रो जीवण उठे री जळवायु री देण नीं है तो पछे काई है? दुनियां में पनपी घर मुरभाई सगळी सम्यतावां रें बिचवै जे कीं खास फरक है तो उण री घसन वजै जळ-काथु इज हें। इतिहास घर भूगोल रें इण लूठें नातें नै देलर जे इतिहास ने आधो-आध भूगोल केदां तो की घणापो की रहैतानी। आज रें ससार नै जे गौर सूं देसां तो इण विज्ञान रें जुग में ई घणी-घणी अेड़ी सम्यतावां दीखैता जिकी भूगोल री वजै सूं आधी-सम्य बाजै। आपारे अठे भारत में भी अेड़ी ठोड़ा है जठे मानखे माथे भूगोल रो सावसीधो असर दोखे। तिकोबार ढीप घर आसाम रें मिनखा री करणी घणी कर भूगोल मूं ढकियोड़ी इज

- 1 रिचर्ड हैक्सलूट, 'भूगोल इतिहास री आख्यां है'।
- 2 वक्कल, हेनरी, स्टोरी आफ मिजिलाइजेसन।
- 3 केलेट, ई. ई., आस्नेक्टस आफ हिस्ट्री।
- 4 पोलांड, मे. अफ, फेक्टस इन माइने हिस्ट्री।
- 5 हैक्स्टर रिचर्ड, रिजेप्रेजल इन हिस्ट्री।
- 6 स्मिथ, बी. अ., आनपफोर्ड हिस्ट्री आफ इण्डिया।
- 7 हेरोडोटस, री हिस्ट्री।

लखावें। चार पांच सो बरा रै राजस्थान रै इतियास मायै निजर नाख्यो प्रा
ठा पड़े के मो भारत रै इतियास रो भंग हूता यकां प्रापोप्राय में भेक निर-
वाळी सांस्कृतिक चोखाई राखै घर इण रो भेक न्यारी घर सुतंतर ठोड़ है।

भारत रै इतियास मायै भूगोल रो असर विद्वाना मेनत घर गहराई सूं
घणी बेळा बतायो है। मो असर बतावतां यकां सगळा मानीता विद्वान भारत
नै इणां चार दुकड़ां में बांटे—घोराऊ (उत्तरी) भाखर भाळो खेतर, घोराऊ
मगरा, विंध्यावटी घर लंकाऊ भारत। घणै विस्तार सूं नख-नख समेत इणां
च्यारू हिस्सां रै भूगोल रो घठे री तवारीख मायै असर बतावण बाळा री
कसर कोनी। इण रो सामो घरय मो हयो के राजस्थान री थळी घोराऊ
भाखरां घर विंध्यावटी रै बिचल्ले घोराऊ मगरां (तालरा) में भेळी ठू सिमोड़ी
है। जे प्रापां इणां घोराऊ तालरां रै भूगोल रो उठे री तवारीख मायै असर
देखां तो ठा पड़े के मो खेतर घणो उपजाऊ है, घर पेलां री सोनै-रूपै री
चिड़ी मो इज है जिएनै दाबण खातर घणां बारला ललचाया घठे प्रा खया।
इणां तालरां में पुराणियां महाजनपद पनय्या, कळा-सहित घठेई निखरियो
घर घणकरी नदियां इण खेतर में इज बेवगु सूं प्राव-जाव सोरो रियो। हमै
जे मगरा में भूगोल री बजं सूं हयोड़ी ऊपरली बातां राजस्थान में जोवण
बेठा तो इणां मांपली भेक ई बात घठे को मिळेनी। नी तो घठे उपजाऊ
जमी है नी-नदिया-नाळा, कळा-साहित घर नी महाजनपद। सोने री चिड़ी
इण रो नांव कदेई को बाजतोनी, हां, मोत रो बाड़ी घनै मोत रै खेतर जेई
नावां सूं मिनख इण नै जरूर जाणता हा। घठे केई-केई कोसां ताई पसरि-
योड़ो मरू खेतर हो जिएनै ठाकणो काळी भीत गिणीजतो। इण मरू खेतर
में मिनख काई घोड़ा ताई गरक ठड़े जावता।¹

राजस्थान नै जे न्यारो भौगोलिक खण्ड मान'र' घठे रै इतिहास मायै
निजर नाखां तो ठा पड़े के इण खेतर मायै भूगोल रो जित्तो असर है उतो
भळै किणी बीजै खण्ड रो उठे री तवारीख मायै असर को बूढेलानी।² इण
असर नै बतावण सारू घणी पंडताई छांटण री जरूरत को पड़ेनी, मो साब
सोरो हर किणी भोमजी-भोमजी नै ई दीस सकै। राजस्थान 342, 274 वर्ग

1 मुर्शोत नैजसी री ख्यात।

2 Sharma, G.N., Social Life in Medieval Rajasthan, p. 33.
"History provides no clearer example of the profound influ-
ence of geography upon a culture than in the historical deve-
lopment of Rajasthan."

कीलामीटर ताई फंलिथोडो है ।¹ जिए में तीन करोड़ नेट्र मानखे रो वासो है ।² इण रै माधूणै सिन्ध, घोराऊ—माधूणै, घोराऊ भर घोराऊ-मगूणै पंजाब, ऊगूणै यू.पी. भर ग्वालियर नै लंकाऊ सामां गुजरात मायोडा है ।³ भूगोल रै जाणकारां राजस्थान नै ई मापरी जाणकारी रै पांण न्यारी न्यारी पांतियां मे बांटथो है ।⁴ राजस्थान 23.3⁰ सूं 30.12⁰ घोराऊ मक्षानां भर 69.30⁰ सूं 78.17⁰ ऊगूणी देगान्तर रै बिच्चे पसरियोडो है ।⁵ राजस्थान मे तीन रितवां व्हे । उष्णालो घणकरो माचं सूं जून रै मईनों रै बिच्चे गिलीजै । पर ठेट जनवरी रै नारले पाई सूं ले'र अगस्त ताई भुलसण बाळी लू, घूड री काळी-पीळी मांधियां, लूठा बतोळिया जिका धूरावां सूं ले'र टिगर-टांगर ताई नै लपेट ले जावे भर तड़तड़तो तावडो बण्यो रैवै । बराळो यूं तो माघे जून सूं ले'र सितम्बर रै बिच्चे ताई मानीजे पण मेह मावै नी मावै किन्नेई ठा नी । खास कर थळी रा तो केई-केई बर लेणों-लेण बिना छांट निसर जावै । सियाळो मक्दुबर सूं फरवरी ताई, ठारी रैत सूं कर'र मगू'तो पड़ै अन बिना ताप भर पट्टड़ै रै भिनल ठर'र ठाकर व्हे जावै ।

भूगोल रै मुजब राजस्थान मोटे रूप सूं दो हिस्सा में पांतीज सकै—अक ऊगूणों भातर भर दुजो माधूणियो मरू-खेतर । ऊगूणै हिस्सै मे माडावल भाखर री लढ़िया है जिकी ठेट दिल्ली सूं गुजरात ताई मायोडी है ।⁶ भाखरियां रो लंकाऊ-माधूणो खुणों माउण्ट मावू भर घोराऊ-ऊगूणो भुम्भनू जिले रै खेतडो ताई पोचियोडो है । सगळा सूं मबखी भाखरिया मावू सूं अजमेर ताई है । माडावल सूं न्यारा भाखर भी निरा है । अमेर मनै मलबर भाखरां

- 1 (अ) परमपाल, इण्डिया लैन्ड जेन्ड पोपल, राजस्थान, पृ. 1
- (ब) राजस्थान रो क्षेत्रफल सगळे भारत रै क्षेत्रफल रो 112 फी सदी है ।
- 2 (अ) 1961 री सरकारी मर्दमसुकारी मुजब आ तादाद 20,155 602 हो ।
- (ब) राजरी जनसख्या सगळे भारत री जनसख्या री 46 फी सदी है ।
- 3 इम्पीरियल गेजेटियर राजपूताना प्रोविन्स तिरीज, पृ 1
- 4 (अ) अमल कुमार सेन, 'ज्योग्राफिकल रीजन्स आक राजस्थान' ट्रावेल्स आक दी इण्डियन कौंसिल ऑफ ज्योग्राफिकल स्पेशल आई. ओ यू, कोल्लूम, पृ 99-104.
- (ब) परमपाल, इण्डिया लैन्ड जेन्ड दी पोपल, राजस्थान, पृ 1-7
- (ग) बी. सी मिश्रा, 'ज्योग्राफिकल रीजन्स आक राजस्थान', दो इण्डियन जनरल ऑफ ज्योग्राफी, कोल्लूम 1, न. 1.1966, पृ. 35-48.
- 5 (अ) इम्पीरियल गेजेटियर, राज. प्रो. सी, पृ 1
- (ब) ईपीज देगान्तरां बिच्चे जिका बीजा मुलक बस्योडा है उणा में घोराऊ अरब, पन-करो मिथ, लाइबेरिया अर अफ्रीका रा की जाग है ।
- 6 परमपाल, इण्डिया लैन्ड जेन्ड दी पोपल, राजस्थान, पृ. 1

सूँ घिरघोड़ाई है घर भरतपुर रँ घाई-पाई घणाई भाखर है । करीली घर मुकन्दवाड़ा रा भाखर मी घणा चावा जालीजँ । इए भातरां वालें ऊगूणें राजस्थान में घाबू, उदपुर, बांसवाड़ा, डूंगरपुर, प्रतापगढ़, भजमेर, कोटा, बून्दी, मसवर घर जैपुर है । घणकरी राजस्थान रेगिस्तानी है जिएमें जोधपुर, बाड़मेर, जैसलमेर, बीकानेर घर गंगानगर बीजा भेळा है ।¹

राजस्थान मे पाणी री कमी घर घणी-घली भो विखरघोड़ी घूड री वजें सूँ घठें री जमी सगळें भारत री 11.2 फी सदी है एए मिनख नानी-नानी बाणियां घर गांवड़ा में फंटघोड़ा है घने उणां री तादाद देश री भावादी री सिरफ 4.6 फी सदी इज है ।² देश रँ पशुघन रो 10 फी सदी घठें इज है एए इए मे घणकरा गाडर, लरडियां घर ऊंट है । देश रँ कुल बकरा-बकरियां रा 13.2 फी सदी, भेड़ 18.2 फी सदी घने ऊंटों री बात ई छोडो सगळें भारत रा भाषा सूँ बत्ता ऊंट घठें है ।

राजस्थान री भाव-हवा रो इतिहास भायें घणें खुलासे सूँ थसर बता-वणों तो घठें वाजब कोनी । थोडें में जिकी बातां कै सकां उणा मे पेला ऊगूणीं भाखरियां वालें सैतर भायें जळवायु रो थसर देखां—

—ये ऊगूणां भाखर भाबावळ रा हिस्ता ई है । इए सेतर में चम्बल,³ बनास,⁴ वेतवा, घर माही बीजी नदियां रँ पाणु जमीं उपजाऊ है । सिचाई भी व्हे सकें इए साहूँ भापूणें पळी जिज्जें भो राजस्थान घोडो खावतो-पीवतो है । भाखरियां रँ घाई-पाई रँ रिन्-रोई सूँ जड़ी-बूटियां बीजी उपजें जिकी उठें री भावादी रो पेट पाळें । ये नदियां केई बेळा हमळा कर्ण्यां न मारग सूत्रावण रो काम काडियो । केई बेळा ये नदियां बचाव रो घाछो साधन बणी । रजवाडां रा कांकड नदियां सूँ न्यारा फंटता । चम्बल, जैपुर घर कोटा, करीली घर ग्वालियर रो कांकड रँई । माही बांसवाड़ा घर डूंगर-पुर, खारी उदपुर घर भजमेर न न्यारा फाटती बँवती ।⁵

1 राजस्थान रँ सगळें क्षेत्रफन रो घणों नी तोई 63 फी सदी हिस्ता घूड गळो है ।

2 बी. सी. मिथा, राजस्थान रो भूगोल, पृ 6

3 बाबर नामा, 207, जे. सेफ. बेबरिज, 11, पृ. 485

4 (अ) मुर्शोत नैजरी री स्वात टी. 13 बर 34

(ब) फरिस्ता, पृ. 419

5 धर्मा, जी. जेन., सोसियल साइफ इन मेडियन राज, पृ 15

(अ) अचलेश्वर लेख घर सेकलिंग लेख ।

(ब) इन्पिरियल गवेटियर (1908). 4, पृ. 407-408

—भीलां भर ताताब घणकरां अठै इज है । प्रकृति री चौखी जागां री मठो कमीं को नी । उदयसागर, पिछोला, लक्की भर जयसमन्दर जेड़ी भीला भनै यन्नासागर, राजसमन्द जेड़ा तळाव इण हिस्से मांय ई है जिणां रो फूट-रापो मळगै-मळगै मुलकां रै मिनखां नै आप सामी खांचे ।

मध्यकाल मे अब्बला भर लूँठा दुरग किणीं दरबार रै जोर भर मान री वजै मानीजता । ऊगुणियै राजस्थान री माखरियां में चित्तौड़, कुम्भलगढ़, रणथम्बीर, आमेर भर तारागढ़ जेड़ा सेन्ठा दुरग हा जिका ठीक शिवाजी रै पन्हाला, परतापगढ़ भर पुरन्दर दाई भगड़ा री बेळा घणां कारज साजिया ।

—माखरियां भर घाटा रै पांण ठीक महाराष्ट्र दाई गुरित्ला युद्ध करी-जिया । इणां दावपेचां सूं ई कोटा, बूंदी भर चित्तौड़ रा रावराणां थोड़ीक फौजां ले, मोटी-मोटी मालवा, गुजरात भर मुगली फौजा सूं लोहो लै सकिया । कुम्भा, प्रताप भर राजसिंह री बादरी रै सागै अठै रो भूगोल उणां री घणी मदद करी ।

—यं माखरियां राजस्थान रै बीज रजवाड़ां रो भो आर्डे-बकत मे कारज साधियो । मजीतसिंह, रामसिंह, चन्द्रमेन भर दुर्गादास ताई रै बीखै री बेळा री ढाल भे माखरियां ई बणी ।

—इणां माखरियां में घाघी सभ्य जातियां भील,¹ मीणां, घासिया, बावरी भर गढोळिया लवार बीजा अठै रो अब्बलाई री वजै सूं ई आज ताई आप री रीत-यांत नै ज्यूं री त्यूं राख सक्या । इणां री सभ्यता आपरी सगळी चौखी-भूण्डी बातां रै सागै मजै ताई जीवती है ।

—जिण तरै शिवाजी रा मावला फौजी हा उणी तरै राणावां नै भील भर मीणां घणी मदद करी । कुम्भा, प्रताप भर राजसिंह रो साथ मीलां घणी मरदानगी सूं दीयो ।²

—ज्यूं दिल्ली, मालवा भर गुजरात री मोटी फौजां रो घाव-जाव भाखरां में दोरो हो जिण सूं राणां री छोटी-मोटी फुड़तीली फौजां आसानी सूं उणां रो सामनो करती कैं बच निकळती उणी तरै घाड़ायती भर बिद्रोही सिरदार,

1 (अ) श्वेद, पृ. 6

(ब) दी इम्पीरियल गजेटियर राज. प्रो. सी. पृ. 86-89

2 (अ) धर्मा जी. अेन., सो ला. इन मे. राज, पृ. 7

(ब) फरिस्ता, तारीख, हिस्स, 4, पृ. 42

(घ) वयोतराज, पाठ्य रत्नकोष ।

राणां की मोटी कौजा रं मुकाबले लड़ता-भिड़ता आप रा दिन काढ सकता हा ।

—भै भाखरियां धणी प्रबखी ही सो मुलक रं उणै-चुणै सूं घरम नं समझणियां बैरियां सूं घरम नं बचावण पातर भठे भा पौन्धा भर ऊंचो टेकरियां मायें मोटा-मोटा भिन्दर चुणीज्या, परसराम महादेव, नाथद्वारा, भैक-लिंगजी जेड़ा नामी भिन्दर इणां भाखरियां में ई बणियोड़ा है । सगळें मुलक रा जैनी मध्यकाल में आप रं घरम नं बचावण सारू भठी माय पूगा भर देस-वाड़ा-घाबू, ऋषमदेव, रणकपुर, केसरियाजी भर महावीर जैन भिन्दर (उदंपुर) जेड़ा फूटरा भिन्दर चुणीज्या ।

—भै भाखरियां राजस्थान रं कांकड़ मायें भायोड़ी हुवण सूं भठे रा रीत-पात, उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश भर गुजरात सूं न्यारा रं सक्या । राजस्थान की संस्कृति की खास विशेषतायां नं बलायोड़ी राखण मे भै भाखर घणां भाडा भाया ।

—राजस्थान की 63 की सदी जम्मी रेतीली है ।¹ रामायण की साख रं पाण मानीज के इणीं पळी की ठोड़ पैलां द्रमकुल्य नांव रो समन्दर हो ।² समन्दर शास्त्र रा जालकार भी भा मारन के इणा घोरां मे भाज ताई सोप-संख मिळें सो पक्कायत सूं, पैला भठे पाणी धैला ।³ सगळें रेतीसैं खेतर मे ऊंचा-ऊंचा रेत रा घोरा बिखरियोड़ा है जिका बायरे रं भोकें घापरी जागां बदळ'र मारण बेवतां नं धोखो देवें । इण रेगिस्तान मे पाणी की पणी कमीं रेंवें । कठक जे बेरा है तो वे दस-दस बीसी मू' पन्दरै-पन्दरें बीसी हाथ ताई उण्डा है भर इणां में पाणी बेगोई निसर जावें । बाढमेर भर जंसलमेर रं घोरां मे रेंवणिया 'मिनखां की भैक रोजमर्रा रो काज बाढ-भाढ दस-दस कोस सूं ऊठा मायें पलावां लाद पाणी लावणो है ।⁴ इण रेगिस्तान भर पाणी की कसर रो भरर भठे रं मिनखा, जीव-जिनावरां भर खंखड़ां मायें ताई साव सोरी दीसैं । इण खेतर मे जीवणो दोरो, मेनत धणी, मिनख रात-दिन अबखतो रेंवें, भू'भतो रेंवें, जद जीव । सोरापी नाव की की बीज नेडो ई कोयनी ।

मरुखेतर में मिनखां रा घणां जमघट कठईक दीसैं । घणकरा वे नाना नाना गांवड़ां भर दाणियां मे छीण-छीण बिखरयोड़ा है । भठे वर्ग किलोमीटर

1 पिशा, बी. भी., राजस्थान का भूगोल, पृ 23

2 बाल्मिकी रामायण, मुद्र काण्ड, सर्ग 22

3 'बी पाणी मुल्तान गयो' काबल भी इण बात की साख जरै की भठे कदेई हिमोळा सेवतो समन्दर हो ।

4 परमपास, इन्द्रिया लेख जेष्ठ पोपल, राजस्थान, पृ 4

दीठ 59 मिनव रँवै जिको भारत भर मे कश्मीर रँ पच्छै सगळां सूं कम भावादी रो रँवास है । आज भी देश मे जमीं रँ हैसाब सूं सगळां सूं मोटो ससद रो निर्वाचन क्षेत्र, इण मरू-खेतर रो जँसलमेर-बाड़मेर ई है । इण रँवास रँ भीणापे रो वजँ भाव हवा इज है । मरू-खेतर में रँवणों भर इणने पार
 ... निस्-
 ... है ।¹

पाणी री कमी, बळती लू, बूंतोळिया भर कळीजण जोग घूड़ सूं मोटा लस्कर तो इण खेतर मे फुरक ई को सकता हानी । भोमद बिन कासिम 711 ई. में ठेट अरब सूं सिन्ध ताई आय घमवयी पण मरू-खेतर में बढ़ण री हिम्मत को कर सकयौनी । पाणीपत नै जुद्ध रो मैदान बणावण रो जिम्मो भी मरू-खेतर रो ई है । खँबर, भोमा कुरंम भर बोलन बीजँ दरीं सूं मांय बढ़ण आळा हमलावर नी तो कश्मीर री बर्फाली माखरियां कानी सूं भागै बढ़ सकता भर नीं मरू-खेतर सूं, जद बापडा, हड़बड़ाय इण विचल्ले मारग, पाणीपत नै पकड़ता । राजस्थान री आ आधूणी पांती अठां रा भिड़मलां रँ गाड रँ सागै ई भूगोल री वजँ सूं हमलावरां सूं कोरी रँ सकी ।² दिल्ली रा मुल्ताण भुगल भर अंगरेज पेलां भारत रा बीजा मुलक जीत्यां पछै घणां मोड़ा अठी भूण्डो करथी । भूगोल रँ पाण ई अठै मोटा साम्राज्य नी पनप'र नाना रजवाड़ा भर गणतंत्र बस्था । योद्धेय जोहियां रा राज अठै ई हा । सिकन्दर रँ हमले री बेळा सूं भिड़मला रँ बेसटके बसण जोग राजस्थान ई रियो ।

घणँ वरसां हमलां सूं कोरा रँवण भर अबलँ जीवण मूँ अठै मिनखां मे सुतंतरता रा भाव, मान भर अहंम घणो हुयी । जं कर्देई हमलो हूवतो तो दोरो घणो लखावतो भर अठै रा मित्तु बिबणै खार सूं भिड़ता । भूगोल रँ पाण ई अठै सुतंतरता भर मान सारूँ बलिदान भर त्याग रा भाव बीजँ मुलका सूं घणां हा । भै सूरमा मान भर सुतंतरता खातर बैरयां सूं भिड़ पड़ता । साका भर जीहर घणँ चाव सूं हूवता । शेरशाह मुठ्ठीक बाजरी सारूँ, दिल्ली गमाय बैठतो ।³ सिरदार भर जमीदार अठै घणां गाडवाळा भर सुतंतर हा,

1 (अ) मुसबदन, हुमायूँ नामा, पृ. 151-155

(ब) अकबर नामा, 1, पृ. 182

(ग) फरिस्ता, पृ. 219

2 फरिस्ता, पृ. 228

3 अबास सरवानी, सारोख अे शेरशाही, 4, 406

घर राजावां नै उणां नै ढाबरण मे घणां जतन करणा पढ़ता ।¹ सामन्त-जमीन-दार जिता सेंठा मारवाड़ में हा दूजी ठोड़ां को बूँहला नीं ।² राज घणीघणी भो ताई बिखरियोड़ा हुता थकां राज रा चाकर इण्यां-गिण्यां ई बूँहता घर की आछो राज री ढांचो को जम सबयोनी । थोड़ीं मे घा केय सकां कै भठै रै मानखै में बादरी, त्याग, बलिदान, स्वामीमान घर सुतंतरता जंड़ा गुण, भूगोल इज पतपाया ।³ भठै री राजनीति रै मूळ में सगळीं सूं लूँठी की बात हो तो वा ही जळवायु ।

राजस्थान री इण भाषूणी पांत रै समाज माथे साबळ निजर नाह्यां इण माथे भो भूगोल रो भार घणो दीसै । बीजा सूं साव भागा भेकला रैतां रैतां भठै रो समाज निराळो ई बण गियो । भेकण कानी इणमें घणो भेकठपणो घर भपणायत दीखै तो बीजे कानी भो भीर-भीर बिखरयोड़ो, ऊंच-नीच, जांत-पांत घर ठाकर-चाकर सूं किड़योड़ो लखावै । न्यातां घर जातां रो जोर भठै ठेट सूं ई घणो रियो । बीजां वारलां नै समाज में की ठोड़ को ही नीं । जातां में भळै जाता घर खांपा घर कुळ, रोजीना ई कळयै रा मूळ बणयोड़ा रिया । न्यातां घर पञ्चा रो भो जाब इण सारूं ई हो कै मिनल बीजे संसार सूं कटघोड़ा हा घर न्यात-जात सूं भळगा होय जीव ई को सकता नी । ऊंच-नीच रो घणो बलांण नी कर भेक उदाहरण देणो चाऊं । राजावां रै मोला हबता, ठाकरा रै न्यारा, मामूली रजपूतां घर भोसवाळां रै न्यारा घनै भजै री बात घा है कै भं ऊंच-नीच रै भावा मूं घेड़ा भरपोड़ा हा कै इया में आपस में सगपण ताई नी बूँह सकता । घमड इत्तो कै भेक बोली नवादी रा जवांई बीजा नीं बणै सो छोरी जलम जावै तो मार नाखै भो भोलाणो बावो हो—

पेण्डां भलो नी कोस रो, बेटी भली नी घेक ।
देणों भलो नी वाप रो, साहिब राखै टेक ॥

घठां रा मुसलमानां ताई मे जात-पांत घर करयोड़ी हो, मोची, महाबत,

1 (अ) टाड, बनलग जेठ सेन्टीवरीटीज भाग राज, 1, पृ. 560
(ब) इयामसदाम, बीर विनोद, पृ. 806

(स) तबाघील-बोधपुर बगल, 40, पृ. 7, (पुरा सेनापार, बीकानेर) ।
(द) तबकात-जे-नासीरी, पृ. 465

(प) घर्मा, जी. घेन., सोपियल साइंस इन मेडिकल राजस्थान, पृ. 512
(घ) घर्मा, जी. घेन., सोपियल साइंस इन मेडिकल राजस्थान, पृ. 512

2 मारवाड़ में जा काबत बादी हो 'रिजमना बाप्पा तिकै राजा' जिनरो मरल है जिनो
'बिखरार बादी माथे बाप देता भोई राजा बगठो ।

3 'राजकचक, वन, 16, रसोफ, 33-39

छीपा, घोबो, जुलाहा, कायमखानीं, सिन्धी, सलावट, लखारा, रंगरेज, पींजारा वगैरा में भेक दूजो जात में सगपण नौं व्हे सकता ।¹ पण राजस्थान रं समाज रं इण घणोंप रं मांय भेकटपणो भी घणों हो ज्यूं सगळा जातिपां में भेक ई नांव री खांपा व्हे ठेट राजघराणं सूं लेमर बाणियां, कसाई, छीपा, लवार, घमार, पांची, मोची घर मंगो ताई री जात सोलंकी, चौहान, राठोड़ के दूजो कौं भी भेकई व्हे सकें । सो घणोंप रं दिव्चै भेकटपणं रो घो भाव तो होई के सगळा भायां रा भाई हां । इण घणोंप रं धकां घापसी हेत भर भेकटपणो भी मणू तो हो । 'सहकारी-खेती' पेलापोंत मठें सूं ई जलभी । हर भेक री उपज मांय सूं दोराप री वेळा तोळणियो रावळो भर पिडत, मांभी, भील, मोची, सांसो, नाई, भेवड़ बाळें, सूपार वगैरा रो हिस्सां हुंवतो जिका 'माय' बाजतो । रावळें नै टाळ उपरना सगळा भापरी खेती को करता नी क्यूं के गांव रा सगळा इयां नै माय देता । 'ला' री वेळा जिए अपणायत सूं सगळा गांव बाळा नाठ-नाठ भर 'ला' करण बाळें रं सूड़, निनाण, सिटियां नूटण में घर लाटे री वेळा बिना कियो सालख रं काम करावें, देखण जोग व्हे । भै लासिया, बड़ियां सूं दोवड़ो काम करे । नवां भूपड़ा ठावरण में भी सगळा गांव बाळा 'ला' जेइं उत्साह सूं ई काम करे । ठाकरां घर सेठजो सूं लेमर सगळा गांव बाळा नवां भूपां नै दड़बावण भर किड़ावण में हाथ बंटावें । भेइो भेकटपणं रो भाव पनपावण मे भूगोल रो पूरो हाथ है ।

खावण में धळी री उपज बाजरी भर ज्वार, मोठ नै कठैक गेहू काम भाव । कड़ी मेनत करण सूं भोजन दिन में च्यार वेळा व्हे—सिरावण या कलेयो, रोटी, बेफारो (दोपारो) भर ब्यालू । पण च्यार वेळा खावणियां थोड़ा ई है । खावण में घणो नी तोई भाठ तोळा भार रो बाजरो रो सोगरो, राब, लीच, घाट भर दळियो रोज रं जीमण री बीजां ही । साग सगळा रं तिरुयोड़ो को हुंवतो नीं पण जिका जोग हा व्हे केर, कूमटिया, सांगरियां, मोठ-फळी भर फोप वगैरा खावता । भे सगळी बीजा कम सूं कम पाणी री ठोड़ां निपज सकें इण सारूं मठें भेइज निपजती । बाजरी मठें तो बूड़ा भर बीमार ताई पचावें पण जे बीजा मुलकां रा मिनस खावें तो को पचै नीं । डोकरियां भेक भंगेज साब री बात बतावें । खेत में निसरतां साब री भूस भड़की । खेतवाळो उणां नै सोगरें मायें सांगरियां घाल'र पमाई । दोरा-सोरा साब सांगरियां मुळमुळाई घर सोगरें नै भेके पाइं घनघनाय बोल्या के घटें लोगां में भाई कसर है वे पलेटां साफ नीं करे । बापड़ साब को कसूर को हो नी सोगरो

वैई घेड़ो करडो लीरां माथे सिक्कोड़ो के साव जे उएने पलेट समझ गिया तो उणा री घली गलती को ही नी । घठे मिनल राबोडियां रो साग घणा चाव सूं खावै जिएरो जलम ई भूगोल रै असर रो फल है । बराळें में घास-फूस घणो व्हे जद जिनावर दूध भी धणो देवै उण बेळा धी-छाछ घणोई व्हे । परा घागे आठ-दस मइनां भेह-पाणी नी व्हे घर घागले बरस ताई री ठा नी पाणी पड़े घर नी पड़े । धरावां नै मालवै लेजाणा पड़े इण साधं जद घली छाछ व्हे उएने सुखाय माटां मे भर लेवै घर आडी-बेळा काम मे ले लै । घठे रै फल-फरटां साह दिसावरा पांच्योड़े भेक थलिये री बात घली चावी है । उएने किली पूछियो के पारी थली में खजूर, दाड़म, दाख और आमबा ताई नी व्हे पछे केडा फल व्हे । इण माथे वो थलियो कियो—

लोवा (ज्यू) खारक खोपरा
बालू (है) दाडम दाख
मुठ-काचर रै उपरै
बारां आमबा लाख

पेरावें कानी निजर नाखां तो उठेई भूगोल दोखें । भीणा पतळा मलमला रा नां व्हे घर गाबा जाडी दो सूती खादी रा व्हे सो डील बळती लू घर तड़तड़तें तावड़े सूं बच सकें । मिनखां रै सगळे गाबा रो घोळो रंग सायद तावड़े रो फल ई है । घर भूगोल री बजै सूं ई गाबा नै डील ढापण वाळा नी परा रक्षक मानै । इण साह ई भगरवला या भगरवली घर पगरवली इणां रा नाव बाजै क्यूं के भे तावड़े, लू घर बळती घूड़ सूं डील घर पर्ग री रक्षा करे । हासळी, कड़ला घर चूड़ मूठिये रो भार थळी री लूंठी लुगायाई भेले । मोटो फेरो ई तावड़े, लू घर दुस्मणां रै सोटां सूं माथे नै बचावण रो कारज साधै ।¹ इण री बखत ठीक आज रै लो-रै टीपे (हेल्मेट) दाई हो जिका तेज अस्वारियां वाळा, मायो-फूटण सूं बचण खातर पेरै ।

जीबण मार-घाड़ घर लड़ण सूं भरयोड़ो हो । इण साधं घठे सगती री अम्बा, जगदम्बा, दुर्गा, भवानी, चामुण्डा जेई न्यारें न्यारें रूपा मे पूजा व्हेती ।

घठे रा कला-साहित भी भूगोल रै असर सूं कोरा को रै सकयानी । खुदाई घर मोनाकारी री इमारतां नी बण, मण्डोर, जोधपुर, सीवाणा, जालोर, बीकानेर, जैसलमेर घर तम्रोड रा सेठा दुरग चुगुीज्या जिला री भीता बीस बीस फिट चबड़ी है । गावा रै भूपां री बिणगत गोळाई मे, घर छात्रत ठेट

1 कंटे रा पाय, साफा, पोतिया, सिद्धिकिया पाय इत्याद बीजा नाव व्हेला ।

ऊपर सूं साव पतली अर तर तर नीचें दखी मोटी इए खातर ई व्हे कै अं धरुं तेज बायरें सूं बच सकैं । गांवां रें पक्कें घरां री छतां में ढाळ भायलें कानी राखैं सो पनाळां सूं पाणी घर रें टाकिं में भेल्लो व्हे सकैं ।

मायड़ राजस्थानी भी बणी पुरानो, सुतंतर रूप सूं फल्ली-फूली अर आपो-आप में भणमावती चोखायां राखैं । राजस्थानी भाषा रें विकास रें सागें भूगोल जुड़योड़ो रियो । मिनसं छीण-छीण बिखरयोड़ा रेंवता, अेक बीजें सूं साव कटयोड़ा हा इए खातर अेके-जागा री बोलीचाली मे बीजी जागा सूं थोड़ो फरक रेंग्यो । थळी मे भा कावत घणीं चावी है कै 'वारा कोसां माथें बोली बदळै ।' पण अें सगळी बोलियां अर भाषावां साव न्यारी को है नी, इयां मे साव चिन्थोक फरक ई है । राजस्थानी में बोलण-सुणण मे भारी लखावण बाळा आखर घणा । मूर्धन्य आखर ट, ठ, ड, ढ, ए जित्ता राजस्थानी मे है दुनिया री बीजी भासा में को व्हेलानी । छ अर स जेड़ा आखर इए मे इज है । भा मायड़ भाषा मालदार घणी गू यीत्रण मे अेडी चोखी कै धोड़ैक आखरां सूं घणी बात केईज सकैं । रेगिस्तान सूं जुड़योडी चीजां रा जितरा सबद इए में है वे आपोआप मे मिसात है । उदाहरण सारूं बीजी भाषावां में ऊंट री लुगाई सारू न्यारो नांवई कोयनी । हिन्दी, उर्दू में 'ऊँटनी' अर लार्ड ग्रंथेजी बाळा तो 'She Camel' सूं काम चलवि । राजस्थानी में सांड ड नांव तो है इज, ऊँटरी ऊमर रें वदावै रें सागें जुड़योड़ा टोडिया, जाखोडा, पागल, करसळिया, मंया, सुतर अर ढागा जेड़ा नांव भी मौजूद है । इणी तरे खेजड़ी रा मोखा सूकण सूं पेलो पीतळ, मिमजर, लौक, टोडया अर सांगरिया बाजै । स्यात साहित अठै रें इतिहास रा भारसी है अर घणकरी रचनावां बीर रस री है ।

पिणयारी, लूरा, गरभां, घूमर अर डंडिया जेड़ा नाव भेळापै सूं तो व्हेई, पणां लूठा भी लखावै । डंडिया मे ठोकण अर बचण रा भाव भेळा है तो पिणयारी पाणी री कमी सूं जुड़योड़ो ।

सारे जावतां थोड़े में भा केगो बाजें कै राजस्थान नै घोराज मगरां मे भेल्लो ठूसणो बाजब कोयनी । अठै रो भूगोल इणां मगरां सूं साव न्यारो है अर ओ अठै रें राजनीत, समाज अर घरम माथें तो हावी रियोइज, स्थापत्य, नाच अर साहित, धराव अर रूखड़ा ताई इए सूं कोरा नीं रें सक्या । सो भागें सूं भूगोल रें मुजब भारत रा स्यार भी पांच न्यास खण्ड व्हेणा चाइजै । इणां मे पांचवों नुवों गण्ड राजस्थान बणै ।

